chapter. 3

अध्याय-3

हिन्दी साहित्य के इतिहास में राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा कवियों का परिचयात्मक विवरण

तृतीय अध्याय

हिन्दी साहित्य के इतिहास में राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा कवियों का परिचयात्मक विवरण

1. श्री नाहर सिंह ठाकुर

नाहर जी का जन्म आऊवा (पाली) में 10 अप्रैल 1909 को हुआ। इन के पिता का नाम श्रीप्रतापसिंह चौपावत और माता का नाम रूप कुंवर हैं। इन्होंने अपना परिचय एक कविता के रूप में प्रस्तुत किया जो इस प्रकार है।

बसत भारत बंकै, राजपूत राजस्थान,
दूसरौ न जामें देस मारवाड़ मायकौ।
अधपति आऊवा कौ, आडावल पास आयौ,
धाम चारणों को धरा जपै जस जायको।
बड़के भए है वीर, धर्म दानी नीति धीर,
सही न जिनके सके, दुस्मन दाय कौ।
कदम राठौर कुल, चौपावत वसं चावा,
नाहर है मेरौ नाम, पुत्र मैं प्रताप कौ॥[1]

सन् 1857 में आजादी के पहले युद्ध में अग्रेजों के खिलाफ लड़े। इन्होंने पोस्ट डिप्लोमा तक पढ़ाई की। 12 साल तक सरपंच चुने जाते रहे। ग्राम पंचायत में न्याय पंचायत के अध्यक्ष भी रहे। किन्तु स्वास्थ ने साथ नही दिया, इसलिए अध्यक्ष पद छोड़ दिया। ये सेवा में हरदम आगे रहे और आऊवा सहित चौदह गांवो के निवासियों की सेवा करते रहे। इन के अप्रकाशित ग्रन्थ हैं। 'ब्रजभाषा और डिंगल में

कविता, गीत और दोहा, इन की ब्रज भाषा में रचित 'ब्रज रचना माधुरी' काव्य सकंलन है।

नाहरजी कृत ब्रज रचना माधुरी का परिचय

इस काव्य संकलन में विविध विषयों का वर्णन किया है। जैसे देवस्तुति, राधाकृष्ण लीला वर्णन, वात्सल्य वर्णन, ब्रजवर्णन और भक्ति भावन, यह काव्य संकलन ब्रजभाषा में रचा गया है। इस काव्य सकंलन में 53 दोहे, 18 सवैया, 87 कवित्त और 8 पद है। यह ब्रजभाषा की उत्तम काव्य रचना है।

✻ रचना परिचय

नाहरजी के दोहे में भक्ति भावना स्पष्ट रुप से झलकता है। जैसे-

हरि राधा का होते हैं, भजन किए ते भान।
सेवक नाहर देत सत, गत ब्रज लीला ग्यान॥ [2]

✻ ✻ ✻

गुरु चरनन नम गोपियन, सखा राधिका स्याम।
गऊ लोक ब्रज-चहत गत, नाहर जप नित नाम॥ [3]

कृष्ण और राधा के मिलन को सयोगं शृंगार के रस में बहुत ही सुन्दर ढ़ग से ब्रजभाषा में दोहे के रूप में प्रस्तुत किया है।

सिंहासन आरुढ़ सखि, स्याम राधिका साथ।
पान देन पिय मुख प्रिया,हसँत बढ़ावत हाथा। [4]

✻ ✻ ✻

पास बैठ राधा प्रिया, कलस घरे दे कान।
स्याम बासुँरी बाजि है, तन-मन मोहत तान॥ [5]

कुछ दोहों में ब्रजवर्णन बहुत ही सुन्दर किया गया है।

गोप गोपि रंग गोरधन, मृदु रंग राधा मान।
ब्रज रंग गोधन बांसुरी, कछु रंग जमुना कान॥ [6]

✻ ✻ ✻

ब्रज बन चारत बाछड़े, हरण दानव निज हाथ।
ध्यावत ब्रह्मा आय वन, स्याम राधिका साथ॥[7]

राधाकृष्ण के लीला विकासों, ब्रज की रमणीयता राधाकृष्ण होली खेलते हुए आलौकिक रूप को प्रस्तुत किया है।

वृन्दावन जमुना विथिन, ब्रज गिरिराज विसेसे।
राधा कृष्ण लीला रुचिर पद नाहर कत पैसा।।[8]

✻

होरी खेलत हेत तै, स्याम राधिका संग।
गोपी ग्वाल सबहि गरक, अबिर गुलाल सु अंग।।[9]

✻

वहत लोक गऊ वीरजा, ब्रज गिरवर धाम।
वस्तु अलौकिक हैं प्रचुर, संग राधे रम श्याम।।[10]

राधाकृष्ण के सौन्दर्य वर्णन कर राधा कृष्ण के सौन्दर्य को बढ़ा (निखार) दिया है। जैसे

माथे मुकटा मोरका, लाकरि लुकट लियौह।
गायन चरांत ग्वालहि, जोय सदा जीयौह।।[11]

✻

पटुका हरिकृष्ण पीतपट, उपवस्त्र गुलाबी अंग।
मुरली भूषण धर मुकुट, छवि राधा छक रंग।।[12]

✻

मोर मुकुट मुरली समुख पहर कटी पट पीत।
लट कपोल माला लखत, राधा रीझन रीता।।[13]

राधा सौन्दर्य वर्णन :

रूप किसोरी राधिका, दिव्य वेस छवि देह।
हरि खातिर जिहिके हृदय, नाहर छलकत नेह।।[14]

नाहर जी ने कृष्ण की बासूरी, ब्रज में बसन्त, सावन का वर्णन, अपने इन दोहों में वर्णित करके इन की महत्ता और सुन्दरता का चित्रण किया है। जिसको पढ़ कर ब्रज की राधा, सखिया, गोपीयों का एक दूसरे के साथ क्रीड़ा करते हुए चित्रों के दर्शन हो जाते है जैसे -

बाजत मीठी बाँसुरी, सुर बाजन सरसात।
गगन गुजाँयौ गोपियन,गत कोयल सुर गात ॥[15]

✻

हरि राधा हीडंत हरस, लगी गान ललनाह।
सख्यिन सावन साजसज झुलावत झुलनाह॥[16]

✻

झूलै झुलावत झाककै, गावत ग्वालन गीत।
हरसावत राधा हरी, पावत पावस प्रीत॥[17]

✻

स्याम राधिका सखि सखा, कुन्जन केलि करन्त।
कोयल अलि मोरन कुहक, ब्रज बन खिली बसन्त॥[18]

नाहर जी ने सवैया में भी देवस्तुति, ब्रजवर्णन, रास वर्णन, राधाकृष्ण सौन्दर्य वर्णन, राधा कृष्ण प्रेम वर्णन बहुत ही सुन्दर ढ़ंग से किया है। जैसे

जमुना तट जावत ही जलको, सिर गागर राधा रुपाली सजी।
मग में प्रिय स्याम सलौने मिले, लखि लाडिल लोचन, जोरि लजी।
छलि छेड़त प्रीतम प्रेम छकी, भटु बाँह छुडाय के प्यारी भजी।
थिर चित्त न बाकौ अजौरी थयौ, बँसुरी कित्त बेरन फेर बजी॥ [19]

✻

मुसकावत माधव राधा मिले, छबि रुप दूहून छटा छहरै
मुरली पर नाचत तान मिला, झमकें झुकि झांझरिया झहरें।
ललचावत लोचन लंक लुला, लखि प्रीतकी हिंय बढ़ी लहरे।
गिरिराज गुफान की गैलन में ठिठकै चित्त नाहरके ठहरें। [20]

नाहर जी ने 47 कवित्त रचे हैं। जिनमें कृष्ण के जन्म से लेकर सौन्दर्य वर्णन, राधा सौदर्य वर्णन, गोप-गोपिया रास, राधा कृष्ण रास, ब्रजवर्णन, बसन्त होली वर्णन और देवस्तुति का वर्णन कवित्त के रुप में बहुत ही सुन्दर ढ़ग से किया है जैसे-

कंस वसुदेव कैद, दैवकी हूँ करि दीने, कारागार माहै कष्ट भोगे अति भारी है।
दुखी मात तात देखि, हरि त्यों प्रगट भए कहिके नाहर कथा समझाई सारी है।

बालक बिसिगे बहु, ऊहा अर्ध निसि आय, वार बुध भादों बदी अस्टमी अँध्यारी है।
क्यो कार्य पितकीनो, पुत्री लाये धरी पुत्र, जसोदा ने जाया जानो, नर गोप नारी है।[21]

कृष्ण सौदर्य वर्णन

''मोर को मुकुट माथे, तिलक उर्ध पुण्ड ताने, कुंडल काजर कैस, नैन रस नीकौ है।
भोंह माला भुजबंद, कन्दोरो अगूंठी करा, नूपुर मुरली नाद, हरै चित्त हीकौ है॥
चन्दन केसर चर्च, पीताम्बर नीलपट, अतर सू ऊपवस्त्र, गेरौ गुलाबी कौ है।
सुन्दर नाहर स्याम, मुख मुसकान मृदु छक्यौ जोय अंग छवि फाव्यौ जग फीकौ है॥''[22]

राधा सौन्दर्य वर्णन

''सारी री नीली री सौहे, अंगिया पीरो री अंग, लली री गुलाबी लेगौ सुन्दरी सवारी है।
सोरे री सिगांर सजी, रूप री सगुन रासी ग्वालन री प्रिय गौरी कीरति कुमारी है॥
छबी री अनुप छाजे नैनन री राधा नेह हरे री हृदय हरी आनन ते प्यारी है।
वृषमान की बेटी री, ब्रज बरसाने की री, इष्ट की देवी री आदि नाहर निहारी है॥''[23]

कवि नाहर जी ने 8 पद रचे हैं इनके विषय राधाकृष्ण रास वर्णन, राधाकृष्ण सौन्दर्य वर्णन, होली वर्णन, राधाकृष्ण प्रेम वर्णन साथ ही पद में कवि ने वियोग वर्णन भी किया है। प्रस्तुत पद में सुन्दर वर्णन करते हुए नाहरजी लिखते हैं। राधा कृष्ण का इन्तजार कर रही हैं। वे मथुरा गए हैं राधा उन के विरह में तड़प रही है। जैसे -

अरी साम भई स्याम न आये मन सखि री मेरौ मुरझाए॥
गृह काज करत उनके गुन गाबन, ज्यों त्यों दिन कट जाए।
अष्ट पहर राधा के उनकी, छबी रहत उर छाए।
बिसरूँ पल भर नहीं प्रेम बस, पुरुषोत्तम पिय पाये।
अजर अमर हय है अविनासी, इच्छा जगत उपाये।
परा सक्ति में उनकी प्यारी, गिरा वेद जस गए।
इस ईसन के अखिल अधीस्वर, कोटिंक ब्रह्मांड कहाए।
आए ब्रज में भक्त उधारन, लीला करत लखाए।
विमल सदा गऊलोक के बासी, सास्त्र कुरान सुनाए।
इच्छामोय न कोहु की आली, चरन सेबन पिय चारो।
कहीं न सुहावत उन बिन कछु ही उर भेटन अकुलाये।

आवत नींद नही आँखिन में, भोजन जरा न भाए
बिहारी नैन पावस बदरी से, बरसत नीर बहाए।
इत ज्यौं बिलम्ब होत हरि आवन काया चित्त कलपाए।
परख नाहर बहि मित्र जो झटपट मोहन लाए थिलाए। [24]

* * *

ब्रज–चँद हमे उद्धव बिसराई, पूछन सुख दुख तुम्हे पठाई।
मथुरा जब ते गए है मोहन, सखियन कछु न सुहाई।
बिरह व्यथा निसिदिन तन व्यापत, मन राधा मुरझाई।
नीकौं मोर मुकुट नक बेसर, लट अलकन लहराई।
खंजन नैन भात मद खेलत, चाप भौह चितराई।
कुंडल मकराकृत कानन में, मधुर अधर मुस्काई।
गल माला पुष्पन गुन्जन कीं बंसीकर बंसी बजाई।
पीताम्बर कटि करधनि पटुका, पद नूपुर पधराई।
सुन्दर नील घन रूप सदा ही प्रेम सुधा कहैं पाई।
स्याम रुप सह अंग समानौ हगन और दिखई।
मिलहु तुरत आ रसिक मनोहर, नाहन तज निठुराई। [25]

(2) श्री राम शरण पीतलिया

श्री राम शरण पीतलियां का जन्म 3 अक्टुबर 1935 को पसोप (डीग) नामक गाँव में हुआ। इन के पिता श्री मूलचन्द और माता श्रीमती लक्ष्मी देवी है, और काव्य गुरु श्री मूलचन्द्र है। इन्होंने ईन्टर तक पढ़ाई कर दूकान का व्यवसाय करने लगे इनके तीन पुत्र और तीन पुत्रीयां है। इन के प्रकाशित ग्रन्थ पत्र-पत्रिका में लिखे रिपोतार्ज, कहानी रेखाचित्र आदि इसके साथ ही आकाशवाणी पर हास्यवाती तथा नाटक भी प्रस्तुत करते थे। 1948में महात्मा गांधी के निधन से पीतलिया जी को बड़ा आघात पहुँचा इन ने अपनी पहली कविता गांधी जी को सम्बोधित करते हुए रची जिस में ब्रजभाषा के साथ हिन्दी खड़ीबोली के शब्दों का भी प्रयोग किया जैसे -

प्यारे बापू प्यारे बापू,
स्वर्ग सिधारे, छोड़ौ देस।

रह न सके अँगरेजन देस में,
मार भगाए पकरे केस।
पहलै तो अँगरेज देस में,
करते भारी अत्चाचार।
अत्याचारन के बढ़बे ते,
बढ़बे लगे घने कुविचार।
तीस जनवरी कौ दिन हू
भारत कू धोखौ देई गयौ।
बापू से हीरा मीती कूँ,
हाय छीन कै लैई गयौ॥ [26]

ब्रज संस्कृति को बढ़ावा देने में पीतलिया जी की 'लालिमा' नामक पत्रिका और 'चौरासी खम्भौ' नामक साप्ताहिक अखबार का अनूठा योगदान है। ब्रजभाषा साहित्य के अनुसार आपके साहित्यक लेख अनुठे हैं और सांस्कृतिक पक्ष को उजागर करने में आपके साहित्य लेखन का कोई मुकाबला नही।

पीतिलिया जी के आदि बद्री, पं. बाके और 'हीरा वैदजी' जैसे व्यक्तिपरक रेखाचित्र ने ब्रजभाषा रेखाचित्र को नए आयाम प्रदान किए। जैसे-

मंगला कौ शंखनाद भोर को सन्देस देत,
सूरज सरमा, तो सो बिछावै, स्वर्ण जाल हैं।
कुहू-कुहू कोयल करै कदंब पे पलासन पै,
बासूरी बजैया कूँ हेरे तिहि काल है। [27]

पीतलिया जी का ललित निबंध 'रसिया होरी का रस लै लै', में दार्शनिक शैली में संस्कृति विषय का अनुठा निबंध है। इस निबंध में ब्रज की होली का वर्णन है। ब्रज की होली जो कि पूरे भारत में प्रसिद्ध है। उस का वर्णन ब्रजभाषा में किया गया है। जैसे

जैसौ रस बरसाने बरसै,
सो रस बैकु ठहुँ में नाहिं।
सुर तैतीसन की मति बौरी।

तजि कै चलें सुरग की पौरी।

देखि देखि मा ब्रज की होरी बह्मा मन पछताहिं। [28]

इन्होंने ब्रजभाषा में ससुराल पर 108 दोहो रचना की। जिसको 'ससुराल-सतक' के नाम प्रकाशित किया गया। यह ब्रजभाषा में रचा, ससुराल की नोंक झोंक, ब्रज-माधुर्य की सरता को अपने में समेंटा हुआ है। जि4ने ब्रजभाषा के बड़े-बड़े कवियों को पीछे छोड़ दिया है। उदाहरण द्रष्टाव्य हैं।

ससुरार-सतक परिचय

सारी सरहज सास कौ, नेहा मिलै अपार।

सब सुख सिमटैं सहज में, बाये कहै ससुरार॥[29]

❊ ❊ ❊

सारी है पैनी छुरी, सरहज भई कटार।

नैन-सैन के बान सौ, बेधत है ससुरार॥ [30]

पीतलिया जी ब्रजभाषा काव्य की रचना ही नही, बल्कि ब्रजभाषा काव्य का प्रचार प्रसार भी करते है। इन्होंने 'कदम्ब संस्था' की स्थापना की ब्रज साहित्य को फलने फूलने में सहायक रही।

3. श्री निवास बह्मचारी 'श्रीपति'

श्री निवास ब्रह्मचारी 'श्री पति' का जन्म 10 दिसम्बर 1914 को डीग नामक गांव में हुआ। इन के पिता बैधराज पूरन मल बम्हचारी और माता श्रीमती पदम कौर है। इन के काव्यगुरु स्व. श्री नत्थीलाल थे। इन्होंने हाईस्कूल और आयुवेद भिषक तक शिक्षा प्राप्त की। इन के पांच पुत्र और तीन पुत्रीयाँ है इन्होंने अपना पूर्ण जीवन ब्रजभाषा साहित्य को समर्पित किया हैं इन्होंने 1936 से समस्यापूर्ति पर लिखना शुरू किया। जैसे पूर्ति प्रचन्ड भुजदंड में 27-6-36 मेया तरिया करी, इन्दिरा गांधी के निधन के प्रतीक माध्यम पर आठ छंद लिखे जैसे-

पातं लगी बगुलान की पारन, डारन कागन डेरा ही डारे।

गीध कुदृष्टि सौं ताकत झाँकत बोलै उलूक भयकंर मारे।

श्री पति बाज न आवत बाज, अकाजहि बारिज बारि बिगारे।

ताल कौ हाल कुहाल भयौ जब हंसिनी उड़ गई पंख पसारे॥ [31]

इन्होंने 'गोवर्द्धन लीला' की रचना की जिसमें मंगलाचरण, इन्द की प्रतिज्ञा, बरसाने की होरी, ब्रजभाषा नवरस, हिन्दी, भयानक रसहोरी, गिरराज की घटा (पावस) गिरिराज-कुंड, मथुरा में जमुनाजी के बारह घाट, वियोगिन-भान्ति अलंकार, हेमन्त रितु-वचन विदग्धानायिका, सोयगिन नायक (सरद ऋतु), लछमी, सूरसागर, मीरा, भारतकी नारी, ममता, हनुमान वीर रस, सन् 1865 को भारत पाकिस्तान युद्ध, सिमला समझौता, महात्मा गांधी, इन्दिरा गांधी बलिदान, और लाल बहादूर शास्त्री पुन्यस्मृति आदि पर दौहा, कवित्त, सवैया और सोरठा की रचना की। मंगलाचरण में 1 दोहा, 1-कवित्त, इन्द्र की प्रतिज्ञा में कवित्त-10, दोहे-4, सोरठा-2, बरसाने की होरी में, कवित्त-6, सवैया-1, ब्रजभाषा नवरस में कवित्त-1, सवैया-1, हिन्दी में कवित्त-4, भयानक रस होरी में कवित्त-1, गिरराज की घटा (पावस) में कवित्त-2, गिरिराज कुड मथुरा में जमुना जी के बारह घाट में कवित्त-2, वियोगनि भति अलंकार कवित्त-1, हेमन्त रितु-वचन विदग्धा नायिका में कवित्त-3, संयोगिन नायका (शरद ऋतु) कवित्त-1, लछमी कवित्त-1, सूरसागर में सवैया-1, कवित्त-2, मीरा-सवैया-2, भारता की नारी में कवित्त-2, ममता में कवित्त-1 सवैया-3, हनुमान वीर रस पर कवित्त -4, सन् 1965 को भारत पाकिस्तान युद्ध पर सवैया-5 कवित्त -3 की रचना की जैसे उदाहरण द्रष्टाव्य हैं

दोहा – **तड़ित विनिन्दति पीट पट, मुकुट विराजै सीस**
हरे मसूर कर में लियै प्रगट वस रजनीस॥ [32]

कवित्त – **पीताम्बर कछाय कै मोर पंख सीस दियौ।**
हिये वनमाल पटका काधे सुहायौ है॥

*** * ***

चूरी छिपाय अधर बासरी धरी है लाय।
कस्तूरी लगाय श्याम रूप दर सायौ है॥

*** * ***

'श्रीपति' आज राधे कौ बनायौ अनोखौ ढ़ग
भाल पै तिलक खौर चन्दन लगायौ है।
प्यारी पिय वेष भईं प्रीतम भये है प्यारी

नन्द छली ने, लली वेष कर रिझायौ है। [33]

सवैया – पान कियो विष को हंस कै, मुख ते वसुधा हु, सुधा वरसायौ।
राग तमूरन तारन सौ, जग जीवन कूं अमरत्व पिवायौ
'श्रीपति' प्रेम पयोधि बढ़ौ, चल अन्तर ते द्रग मारग धयौ
भक्ति की पावन धार चली, नैनन नीर अथाह वहायौ॥ [34]

सौरठा – बोल उटे सब गोप, रक्षा करी गोपाल नै।
ब्रज जन होते लोय, जो गिरवर नहिं धारते॥ [35]

श्री निवास ब्रह्मचारी ने ब्रज भाषा में उच्च कोटी के काव्य को रच कर राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा कवियों में अपना एक स्थान बना लिया इन्होंने ब्रजभाषा में सिर्फ कृष्ण राधा के विषयों पर ही नहीं बल्कि समस्याओं और सिमला समझौता, इन्दिरा गांधी बलिदान, महात्मागांधी और पुन्य स्मृति लाल बहादुर शास्त्री जैसे विषयों पर भी ब्रजभाषा में बहुत सुन्दर लिखा है। जैसे -

सत्य अहिंसा को सु पाठ जन जन कू दियौ।
एक लंगाटी में रहवे को व्रत कर लियौ॥
निर्मद निर्भय निर्विकार निर्धन को प्यारौ।
भारत माता को सपूत मानवता वारौ॥
'श्रीपति' सत वादीन में हरिश्रृद जौ भूप हौ.
गान्धी तो गान्धी भयौ उपमा रहत अनूप हौ॥ [36]

(4) डॉ. रामानन्द तिवारी 'भारतीनन्दन'

डॉ. रामानन्द तिवारी 'भारतीनन्दन'का जन्म 03 अगस्त 1919 को उत्तर प्रदेश के सोरो गांव में हुआ। इन के पिता वैद्य प्यारेलाल और माता चमेली देवी है इन के काव्यगुरु इन के अध्यापक लीलाघर है। इन को बचपन से ही कविता लिखने का शौक था। बचपन से ही काव्यकगोष्ठियो में भाग लेते आ रहे है। तिवारी जी ने बारह वर्ष की आयु में मार्च 1931 को एक कवि सम्मेलन में भाग लिया और सुदामा और कृष्णभक्ति की महिमा का छन्द प्रस्तुत किया इसी तरह बालकवि ने 'अग फूले न समावे ते' में सोरो में रह रहे निवासीयों की दिनचर्या को प्रस्ततु किया। इसी प्रकार भगत सिंह को फांसी हुई उस पर भी अपनी कलम चलाई। विलासी जीवन व्यतीत

करने वालेसोरो के वासियो पर 'आई है' समस्या पूर्ति रचकर फटकार लगाई। इसी में आजादी की भावना पर भी लिखा साथ ही जिन्होने माफी मांग कर जेल से छूट गए उन को धिक्कार भी लगाई। समाज में पापाचार कैसे बढ़ रहा है सट्टेबाज पनप रहा हैं सट्टेबाज की गुप्त भाषा का प्रयोग 'संतमुडन' में किया। ब्रजभाषा में ब्रज की महिमा, कृष्ण का बचपन, वियोग की सरसता को बहुत ही सुन्दर ढ़ग से प्रस्तुत किया।

इन के प्रकाशित ग्रन्थ है। परिणय, पार्वती (महाकाव्य) सेनानी भारतीय दर्शन की भूमिका, सत्यं शिवं सुन्दंर, काव्य का स्वरूप, साहित्य कला, शिक्षा और संस्कृति हमारी जीवन्त संस्कृति, सावित्री (खण्डकाव्य) चन्द्रगुप्त (खण्डकाव्य युनिक इण्डिया, भवद्गीता, उपनिषद अहल्या (खण्डकाव्य), अभिनव रस मीमांसा छात्रो उठो जागो, भारतीय दर्शन का परिचय, एक्शन ऑफ इंडिया, सांस्कृतिक भाषा विज्ञान डॉ. रामानन्द तिवारी 'भारतीनन्दन' ने ब्रज-रचना माधुरी की रचना की जिस में ब्रजभाषा में कवित्त और सवैयो की रचना की।

ब्रज-रचना-माधुरी का परिचय

सुदामा श्रीकृष्ण के पास जाते है। इस को तिवारी जी ने समस्या 'नई बात है' में 2 कवित्त के द्वारा प्रस्तुत किया है। 'अंग फूले ना समावते' में 11 कवित्त, उत्सव मनायौ है में 4 कवित्त, सोरो हमारो है में 7 कवित्त, मोहन आयौ में 6 सवैया, आई है में 8 कवित्त, तार लियौ में 2 सवैया, कर की जटान सौ में 1 कवित्त, मारो है में 2 कवित्त, नंद के द्वारे में 5 सवैया, 1 कवित्त, अपार है में 2 कवित्त, जोगिन बन बैठी है वियोगिन अखियाँ में 7 कवित्त, सरद में 2 सवैया, भलाई है में 3 कवित्त, तथा सिसु, भारत-वन्दना समाई हैं की रचना ब्रज रचना माधुरी में की है। जैसे-

कवित्त -

एक दिन सुदामा श्री कृष्ण जी के पास गयौ, पसा में न अन्न वस्त्र, मन में लजात है।
प्रेम सौं पसारि भुजा, भेटें प्रभु सुदामा सौ, दीन-दीनबन्धु मिलन कैसौ सुहात है।
स्वर्न सिंहासन पर, सादर बिठाय उन्हें, धोए पद कर सौ सुदामा सकुचात है।
सारी पटरानी रही चकि सौ बिलोकि आजु, ऐसी अति अदभुत अनौखी नई बात है। [37]

सवैया -

रावण मारन कौ हरि नै अवतार लयौ तब राम कहायौ।

कंस विनासन कृष्ण लयौ अवतार अनीति को मार हटायौ।
होय प्रतीत यही अब किन्तुन, भावहि सौ कछु पार बसायौ।
राज विदेसिन नासन कौ, अब भारत में मनमोहन आयौ। [38]

डॉ. रामानन्द तिवारी जी ने 'पार्वती' जैसे महाकाव्य और परिणय सावित्री चन्द्रगुप्त, अहल्या, कल्पना साधना, उर्वशी, मेनका, शकुन्तला तिलोत्मा, ब्रह्मर्षी, तुषाधार जैसे मनोरम खण्ड काव्य की रचना कर आधुनिक युग के प्रबन्धकाव्यकारन में अपना ऊचां स्थान बनाया।

तिवारी जी के ब्रज काव्य में राष्ट्रीय चेतना भी दिखाी देती है। जैसे उन के काव्य में फजुल खर्ची सुदेश प्रेम, राष्ट्रीय चेतना पर उद्‌भावना, अंग्रेजी राजा पर नफरत के भाव, विदेशीयो द्वारा देश की लुट आदि विषयों पर तिवारी जीने ब्रजभाषा में बहुत सुन्दर लिखा है। जैसे -

जुल्फन मे तेर डारि दर्पन देखमुख।
रोरी की ओड मन्जु मस्तक पै लगाई है। [39]

*****

सौक और भौजन में सम्पति गवांई दई,
बीतौ सब ठाठ बाट, तंगी जब आई है। [40]

इस प्रकार तिवारीजी ब्रजभाषा के कवियों में अपना अलग स्थान बनाने में सफल हुए। इन को अनेक उपाधियो और पुरस्कार दिए गए है। जिनमें मंगला प्रसाद, मनीषी की उपाधि, महाराणा कुंभा पुरुस्कार, डालमिया पुरुस्कार प्रमुख है। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर ने इनको प्रसस्त्रि पत्र और भारी सम्मान दिया है।

5. श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी 'जय'

श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी 'जय' का जन्म 17 मार्च 1911 को ब्यानी भरतपुर में हुआ। इन के पिता भोजराज चतुर्वेदी और माता श्रीमती गोविन्दी देवी हैं।और चाचा शोभाराम को अपना काव्यगुरु मानते है। इन के पाच पुत्र और चार पुत्रीयाँ है। इन्होंने ब्रज भाषा में समाज ने पनप रही अधिकतर बुराइयों को अपने काव्य के द्वारा प्रस्तुत किया है। इन के काव्य में नीति, हास्य, भक्ति, ऋतु वर्णन परम्परा के साथ साथ समाज में व्याप्त रिश्वत, चोर बजारी, शोषण नैतिक पतन जैसी बूराइयों पर

लिख कर लोगो का ध्यान इस ओर खींचा है। जैसे

अरे! सिफारिस मर गई, अब गुंडन कौ जोर,
चांपलूस तू व्यर्थ ही यहां मचावत सोर
यहाँ मचावत सोर, लद गयौ समय तिहाँरौ,
काम कारबन हेतु, नई तरकीब निकारौ
कह संकर कविराय, डंड पेलो कर मालिस
डडां राखौ हाथ अरे! क्यो करी सिफारिस । [41]

समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार बेईमानी, मिलावट, शोषण, असमानता, छुआछुत का विरोध में लिखते है।

सावधान सामतं हो आयौ है ऋतुराज।
भ्रष्टाचारी भूत पै आज गिरैगी गाज।
आज गिरैगी गाज, जरिगे महल विलासी।
शोषित की बगिया महकेगी चिर प्रत्यासी। [42]

इनके प्रकाशित ग्रन्थ है। 'चिन्तन के स्वर, और ब्रज रचना माधुरी' जिस में इन्होने समस्या हारे है, पायौ है, हारे है, आगंन में समस्या-लायेंगे, समस्या-मडरायौ करै, दाद समाज कंटक, कलियुगी महापुरुष, जय कुसुम सौ, समस्या-प्यारी है लालाकी भेस, विजया मिष्ठान्न, बसन्त, विजया वाटिका, करकी, पटकी, मनमानी करें, लपटे, रितुराज की, नागरी रही, बरसैं बान है, धार है, 4 भक्ति दोहा, आई है, आगंन में, बिहरै, ढ़िग देख परै गहि जात नही आयौ है, बढो वर वरद सवारी है, हिन्दी दिवस, होरिके छीटा, पावस जय कुसुमावलि प्रीति, काम, लोभ, क्रौध, मोह, विविध ढ़ोगी लोग, विविध, कुंडली, व्यापारी, कील, अध्यापक, बाबू, नेता, डाक्टर, साधु, नेह न लैयत हिंमत में, पक्कौ नेता, भावत है आयबसी, ब्रज की शोभा, आयौ है बारे, कुडंली, सूरदास, आज को जीवन जैसे विषयों पर ब्रज माधुरी में ब्रज भाषा में प्रस्तुत किया है।

पहलवान भारी है हाथी सी हमारी देह, दंडऔ बैठक नित्त पेलत सकारे है।
झीगुर अनेक अरु दीपक दिमागी बहु, अति विकराल जीव चुटकी मे मारे है।
ठोकर की चोट बहु चेटा हू मिलाये धूरि, घूर के विसाल मौन, ठोकर यहि डारे है।

काम बड़े जंगी करि डारे बात बातन में, बातन के वीर हम कहू सौ न हारे है। [43]

*** * ***

जोर जोर सी दै सकै, भासन ऊल जलूल।
नेता पक्कौ है वही राखै नहि उसूल।
राखै नाहि उसूल, करै अपनी मनमानी।
झटपट दलकौ बदल भरै निज स्वारथ धानी,
कह संकर कवि नेह करै जो तोर फोर सौ।
अफसर पै लद जाई, बोल जो जोर जोर सौ। [44]

श्री जयशंकर प्रसाद जी ने समस्यापूर्ति के इन छन्दो को ब्रज भाषा में बहुत ही सुन्दर ढ़ग से प्रस्ततु किया है। इन की भाषा भरतपुर की बोल चाल की ब्रजभाषा है। इन्होंने अपने काव्य में विदेशी शब्दो का भी प्रयोग किया है। जैसे सिफारिस, मुवक्किल आदि। कई जगह पर तो अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है। जैसे ट्यूसन, हिटर, आदि राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों में प्रसाद जी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। नीति काव्य ब्रजभाषा में इन्होंने बहुत ही सुन्दर ढ़ग से लिखा है। इन के कुछ अप्रकाशित ग्रन्थ भी है। नारद मोह, विजय वाटिका (खण्डकाव्य) जयकुसु-मावली (नीति काव्य)

6. डॉ. रामकृष्ण शर्मा

डॉ. रामकृष्ण शर्मा का जन्म 25 अक्टूबर 1936 को सुहारीग्राम के वैर तहसील (भरतपुर) में हुआ। इन के पिता पं. प्रसादी लाल शर्मा और माता श्रीमती कलावती देवी है। इन्होंने एम. ए. हिन्दी और अंग्रेजी में किया और पी.एच.डी. में स्वर्णपदक प्राप्त किया। इन को विभिन्न उपाधियाँ दी गई। जैसे ब्रजविभूति, अंचलरत्न, मनीषी, ब्रज अकादमी द्वारा अभिनन्दित, रस भारती, इन्द्रधनुष, सांस्कृतिक मचं कला नयन द्वारा अभिन्दित किया गया।

डॉ. राम कृष्ण शर्मा गद्य-पद्य दोनों के कुशल साहित्याकार है। इन्होंने गद्य और पद्य दोनो ब्रजभाषा में रचे है। इन्होंने अपनी सबसे पहली रचना 1946 में जब वे 10 वर्ष के थे तब लिखी थी जो इस प्रकार है।

'अब तक बाबा रही लटूरी

अब सिर घोटम घोट भयौ।
प्यारे सेवक सबई गुनीजन
मै काहे कूँ ठोठ रहौ।।' [45]

आकाशवाणी पर इन की पहली पद्य रचना बालगीत के रूप में 1957 में प्रसारित की गई।

इन का ब्रजभाषा में रचित 'भारतगाथा' काव्य ग्रन्थ आधुनिक युग की सभी समस्याओं को समेटा हुआ है इस में समस्याओं के साथ-साथ राष्ट्रप्रेम, देश की संस्कृति, मानवता प्रेम, कलापक्ष और भाव पक्ष की सुन्दर समन्वय देखा जा सकता है।

भारत गाथा ग्रन्थ को तीन भागो में बाटाँ गया है। पहला भाग 'भारत महिमा, दूसरा भाग भारत पतन, और तिसार भाग भारत विकास'। जिनके के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

जाही देस माँहि गगं जमुना की धार बहें फूलन कदम्बन तमालन की छैया है।
जाही हेत छाँड़ि छीर सागर रमा के कान्त, नर रूप धीरे ब्रज वीथिन नचैया है।
जहाँ हिम गिर के उत्तुगं सीस उमा संग, राजे योगिराज कालकूट के पिबैया हैं।
ज्ञान गुरु सोने की चिरैया नाम पायौ जानें, हम तौरे भैया ! बाई देस रहै बैया है।। [46]

इसके अलावा डॉ. शर्मा जी का 'झगरौ काहे का' ब्रजभाषा में लिखित उपन्यास है। जिसमें राष्ट्रीय एकता और सप्रदायिक सद्भावना का संदेश है, 'भरत-सतसई'और 'विकास सतसई' में नूतनता और समसमायिकता के दर्शन होते है। 'ग्राम गाथा' में ग्रामीण समस्या को चित्रित किया है। 'पाँच कहें सो साँच' कहानी संग्रह में प्रजातन्त्र की विडम्बना को प्रस्तुत किया है, 'लोहागढ़ को मजन, 'बाबा मनोहरदास 'यारन के यार गुपाल', चिम्मान बाबरौ, बिचारी कलियाँ, 'पयैपा पटैल'रेखा चित्रो की रचना की है। डॉ. रामकृष्ण शर्मा ने ब्रजरचना माधूरी की रचना ब्रज भाषा में बहुत ही सुन्दर ढ़ग से की है।

ब्रज रचना माधुरी का परिचय :

ब्रज रचना माधुरी , सरब दोस निवारन छन्द , सिंहवलोकन छन्द, बसंत बहामे, बरखा बहार, सुतत्रता कौ बदलाव, परयो ए आकाल, जिये न जिये, गाम गाथा,

गनतंत्र कौ परब, होरी कौ त्यौहार, भारत सतसई का पूर्वाद्ध (जनम भूमि हो हिन्द) आदि की रचना की है। जिनके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

फहर रहौ ध्वज गगन में, लहरत मन आनन्द।
प्रान जाँहि परि राष्ट्र कौ, गौरव रहे अमंद॥
जन जन कौ कल्यान है भारत बने अजेय।
बीस सूत्र की पूर्ति सो, पूरन होवे ध्येय॥ [47]

***

जो मोरी विनती सुनों, हे दयालु ब्रज चंद।
नर पसु पंछी जो बनूँ जनम भूमि हो हिन्दी॥
गंगा जमुना हिम गिरी, आम्र कदम अरबिन्द।
तजो सुरग अबरग हू, जनम भूमि हो हिन्द॥ [48]

इस प्रकार शर्मा जी ने ब्रजभाषा में अनेको रचना प्रस्तुत की। जिन के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को प्रस्तुत किया, किन्तु इन में से इन की कुछ रचनाएँ अप्रकाशित है। जैसे भारत सतसई, विकास सतसई, गामगाथा, ब्रजमहिमा, कित रुस कन्हाई, झगरो काहे कौ, कुछ कहानी और रेखाचत्रि, जो अप्रकाशित है। ब्रजभाषा में कवियों में इन्होंने अपना एक अलग स्थान बना लिया है। गद्य-पद्य दोनों ही ब्रजभाषा में रचा है। जो कि ब्रजभाषा की उन्नति के लिए उठाया गया बहुत ही प्रशसनिय कदम है।

7. श्री प्रभु दयाल 'दयालु'

श्री प्रभु दयाल 'दयालु' का जन्म 16 मार्च 1607 को भरतपुर में हुआ। इन के पिता पं. रामचन्द्र शर्मा और मात श्रीमती चन्द्रावली हैं। और श्री मुरलीधर जमादार को अपना काव्य गुरु माना है। इन ने मिडिल तक शिक्षा ग्रहण की। सन् 1931 में श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर में आयोजित एक कवि सम्मेलन में 'दरबार' समस्या दी गई। दयालु जी ने इस पर बहुत ही सरल भाव से 'दरबार' की पूर्ति की जो कि उनके बालकौचित निश्चल भावविभव्यक्ति को सिद्ध करती है। जिस का उदाहरण इस प्रकार है।

धन के नगारे बाजे नारे नद ताल देत,
झीगुर की झांझ बजी सबरे घरबार में।
मधुर अलाप बारी कोकिल है गान हारी,
नीलकंठ नृत्य करी फिरे वृक्ष डाल में।
जुगनू की ज्योत जरै चपला प्रकाश करै,
धीमी-धीमी रसबूंद निशा अंधकार में।
बन में मोर सोर करै भृंगी भेदि सब्दकरै,
गान सभा जुड़ी मानौ पावस दरबार में। [49]

इन्होंने ब्रजभाषा में रोला छन्द में भी रचना की, किन्तु हिन्दी भाषा की रह ब्रजभाषा में इतना आदर ना मिल पाया। इन्होंने ने काव्य में ऋतु वर्णन का ज्यादा किया। ज्यादातर प्रकृति को आलम्बन और उद्दीपन रूप में वर्णित किया जिसका उदाहरण इस प्रकार है।

भटक पवन संग चटक चटक कलिका खिल जावत।
विकसित सुमनावली, गंध चहुँ दिसि बरसावत।
अपनौ वैभव देख, सुमन लतिका हरसावत।
भ्रमर भिखारी देख, द्रव्य अपनौ बरतावत। [50]

24 जनवरी 1931 को एक कवि सम्मेलन में दयालु जी ने 'कजरारेरी' पूर्ति को कुछ छन्द रचे। प्रस्तुत द्रष्टाव्य में नैनो की मार कितनी तीखी और असहनीय होती है। यह विभिन्न प्रतीको के माध्यम से बहुत सुन्दर चित्रण किया। जैसे -

सुई के चुभाए नर नैंक में उछर जात।
भाले की चुभन खूब रुधिर प्रचारे री।
तीर तरवार वीर ऐसी ही उपाधि करें।
जिनकैं लगै है दुख पाये तिन भारे री।
इनके जु धावनि की औषधि उपाय घने।
भनत दयालु मैने पोथी में निहारे री।
कैसे परै कल कौन औषधि भली है तिन्है।
जिनके हिए में चुभै नैन कजरारे री। [51]

इन को गुरुकुल वृन्दावन में एक कवि सम्मेलन में इन की पूर्ति के लिए एक यादी का गिलास दिया गया, श्री हिन्दी साहित्य समिति में ब्रज के बारे में समस्या पूर्ति के छन्द में प्रथम स्थान और स्वर्णपदक दिया गया।

'दयालु जी' ने ब्रजभाषा में ब्रज-रचना माधुरी की रचना की, जिस में विभिन्न विषयों का समावेश कर ब्रजभाषा में रचित एक सुन्दर रचना रची।

– ब्रज रचना माधुरी का परिचय

ब्रज रचना माधुरी दयालु जी ने ब्रजभाषा में रची जिस में विभिन्न विषयों का समावेश कर कुछ समस्या पूर्ति भी की। जिनके विषय इस प्रकार है। 'श्री कृष्ण जन्माष्टमी' जसंवत प्रदर्शनी कवि सम्मेलन में 'सोय रही, चली गई', महाराजा प्रताप की महारानी और एक भौलनी कौ सवांद, समस्या-पराये, अंखरा बढ़ाय देत नखरा क्वीन के, सरदवर्णन में 'टोला' भजत है, वेदकी विठरिए, लुभाए है, बारैगे, रितुराज, रितुराज सप्तक, समस्या कजरारे री, बसंत है, बसंत की, होरी है, मत्त सर्वे हमारी, श्री राव राजा रघुनाथ सिंहजी की जय हो पक्तिकाव्य भरतपुरराज्य के लिए ईश प्रार्थना पंक्ति काव्य, चुके, बसाये है, सन् 1924 की बाढ़ पै गणेश, शिशिर तुषार ने, दरबार में याही ते गंगा को काशी अति पियारी है, हमारी है, करिये, गुलाल लाल डारोना, कृष्ण नाम पायो है। टर जायगी, दयालु कृत भाग के बदं कपाट भये, रखवारे, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, सार है, लगायोरी, अभिलाषा, ब्रजचन्द्रकी, अवला, अवलौ अब लोकत है। वृद्ध विवाह, श्री हिन्दी पुस्तकलाय डीग की स्थापना पर सुखद बधाई, बधाई है। झाँकी है, बसन्त की, कवित्त, बसंत की लाबत है, छाई है, आये है, श्री ब्रजेन्द्र सिंह जी की 19 वी वर्षगांठ पै, पं. रेवती प्रसाद जी गोरधन निवासी कृत, भाल पै, समाज है, लाज, इत्यादि। जिसमें से एक उदाहरण इस प्रकार है।

पानी की बाढ़ आई प्रजा में कुलाहल मचौ,
पानी के रोकबे को रंग बहु रचायौ है।
पानी ने जोर कियो, गिर्द पथ तोड़ दियो,
तीव्र गती सों चरण खाई में बढ़ायौ है॥
नृपति मुकुट मणि दयालु श्री कृष्ण सिंह,
कियो परिश्रम चित्त नैक न हटायौ है।

बार-बार बारि ते बचौ है पुर बिहारी जू,
रावरी कृपा ने बूढ़त ते बचायौ है।। [52]

8. श्री मोहन लाल मधुकर

श्री मोहन लाल मधुकर जी का जन्म धौरमुई गांव में 13 अगस्त 1936 को हुआ। इनके पिता पं. भवँरसिंह और माता श्रीमती कम्पूरी देवी है इन्होंने एम. ए., एम.एड तक शिक्षा ग्रहण की। और अपना काव्य गुरु श्री प्रभुदयाल दयालु और महत गंगादास जी को मानते है। इन्होंने कक्षा आठ से ही कवित्त और सवैया लिखने शुरु कर दिये 'सरकड़े की साइकिल' पर आठ कवित्त लिख कर कवियों का ध्यान अपनी और अकर्षित कर लिया। इन्होंने अपनी पहल कवित सन् 1949 में दोहा बनाया।

हनूमान सौ है कहूँ, को बलधार वीर।
धौर मुई की लाज रखि, दूरि करी सब भार।। [53]

मधुकर जी आकाशवाणी के क्षेत्र से अछूते नही रहे। आकाशवाणी जयपुर से इनकी सबसे पहली वार्ता 'ब्रजलोक कथा' पर प्रस्तुत हुई, दूसरी वार्ता 'ब्रजभाषा का आधुनिक साहित्य' विषय पर प्रसारित हुआ, फिर मथुरा आकाशवाणी ब्रज लोक साहित्य, लोक देवता, लोककला, ब्रजमन्दिर, स्थापत्यकला, ब्रज लोक गीत, ब्रजधाम, ब्रज परिक्रमा, गाँव की चौपाल आदि वार्ता प्रसारित हुई। जिसके माध्यम से ब्रजभाषा काव्य का प्रचार मधूकर जी ने सांस्कृतिक और साहित्यक दोनो क्षेत्रों में किया। - परिच्छेद मधुकर जी सम्पादन के क्षेत्र में भी अग्रसर रहे। इन्होंने हिन्दी साहित्य समिति की पत्रिका 'समिति वाणी' में मतिराम की फूल मजरी और सोमनाथ की प्रेम पच्चीसी की पाठलोचना की। नवभारत टाइम्स में इनके संपादक के नाम से दो ब्रजभाषा में पत्र लिखे। वैद्य हरिकृष्ण कमलेश के बारे में एक समीक्षात्मक लेख प्रकाशित किया, ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों के काव्य संग्रह ब्रजगंधा की भूमिका मधुकार जी ने लिखी। ब्रज साहित्य संगम आगरा से इनको 'पत्रकार भूषण' की उपाधि दी गई।

मधुकर जी की गद्य रचनाएँ ब्रजभाषा अकादमी की पत्रिका 'ब्रजशतदल'और उनके ग्रन्थ ब्रज लोककला और संस्कृति गद्य रचना को छपने का प्रथम अवसर मिला। इसके अलावा आकाशवाणी जयपुर मथुरा और दिल्ली से गद्य-वार्ता का प्रसारण हुआ इन की अनेक वार्ताए प्रसारित हुई है जो कि इस प्रकार है।

शीर्षक और भाषा	आकाशवाणी केन्द्र	प्रसारण तिथि
1. ब्रजलोक की कथाए (ब्रजभाषा)	जयपुर ग्रामीण कार्यक्रम	6-4-1965
2. राजस्थान का ब्रज साहित्य आधुनिक काल (हिन्दी)	जयपुर ग्रामीण विभाग	26-7-1966
3. मन्दिरो की अर्न्तकथा लक्ष्मण मन्दिर भरतपुर	हिन्दी वर्षा, जयपुर	25-9-1968
4. भरतपुर का पक्षी बिहार (हिन्दी)	मथुरा	26-2-1973
5. भरतपुर क्षेत्र के अल्पज्ञात कवि और उनकी ब्रजभाषा को देन (ब्रजभाषा)	मथुरा	23-8-1974
6. भरतपुर के प्राचीनकवि सोमनाथ (हिन्दी)	मथुरा	23-8-1974
7. भरतपुर का राधाकृष्ण साहित्य (हिन्दी)	मथुरा	8-8-1975
8. ब्रजांचल के अल्पज्ञात ब्रजभाषा कवि(हिन्दी)	मथुरा	21-5-1976
9. गामन कौ सुख-चौपाल की चर्चा (ब्रजभाषा)	मथुरा	19-5-1977
10. आओ देखें राजस्थान भरतपुर जिला (हिन्दी)	जयपुर	2-4-1978
11. ब्रजलोकगीत में सामाजिक रीतिरिवाज ब्रजभाषा (ब्रजशतदल और ब्रज की लोककला और संस्कृति में छपी)	मथुरा	5-9-1978
12. ब्रज की हिन्दू स्थापत्यकला में राजाजवाहरसिंह का योगदान (ब्रजभाषा)	मथुरा	7-6-1978
13. ब्रज के ग्राम-देवता (ब्रजभाषा)	मथुरा	9-12-1980
14. समिति की और से (ब्रजभाषा) ब्रजगंधा ग्रन्त में छपी	मथुरा	1984
15. ब्रज के उद्योग धन्धे-विकास की संभवनाए (हिन्दी)	ब्रजभादुरी दिल्ली	24-3-1984
16. ब्रज के प्रसिद्ध दुर्ग (ब्रजभाषा)	ब्रजमाधुरी दिल्ली	23-8-1985
17. विरण रज दुर्लब कू डीग (ब्रजभाषा)	ब्रजमाधुरी, दिल्ली	11-7-1986
18. ब्रज क्षेत्र के आर्थिक विकास की संभावनाए	ब्रजमाधुरी, दिल्ली	25-10-1987
19. लोककवि छेदालाल चतुर्वेदी (ब्रजभाषा)	बयाना उपनिषद मे ही वाच्यो ग्या लेख	26-2-1989
20. ब्रजदर्शन-ब्रज के सास्कृतिक एवं साहित्य समाचार (ब्रज सारिका मासिक पत्रिका)	ब्रजमाधुरी, दिल्ली	31-5-80
20. ब्रजदर्शन-ब्रज के सास्कृतिक एवं साहित्य समाचार (ब्रज सारिका मासिक पत्रिका)	ब्रजमाधुरी, दिल्ली	29-11-80

20. ब्रजदर्शन-ब्रज के सास्कृतिक एवं साहित्य समाचार (ब्रज सारिका मासिक पत्रिका)	ब्रजमाधुरी, दिल्ली	25-4-81
21. समाचार साप्ताहिकी भर (मथुरा) के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	13-3-81
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	19-6-82
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	19-6-82
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	15-1-83
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	2-4-83
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	6-8-83
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	4-2-84
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	5-5-84
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	11-8-84
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	15-12-84
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	13-8-85
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	24-8-85
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	14-12-85
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	4-2-86
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की	मथुरा	10-5-86

समीक्षा (हिन्दी)		
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	23-8-86
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	16-11-86
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	28-2-87
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	8-8-87
21. समाचार साप्ताहिकी भर के समाचार की समीक्षा (हिन्दी)	मथुरा	27-11-87
22. ब्रज सौरभ क्रायक्रम में ही ब्रजाचल के (ब्रजभाषा में साहित्यक एवं सांस्कृतिक समाचार समीक्षा)	आगरा प्रसारण का स्वीकृत	31-10-90

9. श्री हीरालाल शर्मा

श्री हीरालाल शर्मा का जन्म 20 अगस्त 1929 को गाठौली (मथुरा) में हुआ। इन के पिता का नाम श्री श्याम लाल और माता श्रीमती गौमती देवी है। इन्होंने एम.ए. (अंग्रेजी) तक शिक्षा ग्रहण की। तथा हायर सैकण्डरी स्कूल के अध्यापक और प्रिसिंपल रहे दो वर्ष पहले ही रीटायर हुए। फिर भरतपुर जिले की प्रसिद्ध आवासीय महिला शिक्षण संस्थान आर्य महिला विद्यापीठ, भुसावर में सेवा में लगे हुए है।

इन्होंने अपने काव्य में विचार और भाव का ऐसा तादम्य रखा हैं। जो अलग नहीं किया जा सकता। जैसे-

ब्रजभाषा सुकुमार अलि है ई रस की खान।
बड़े-बड़े सकवीन के, जामें तने बितान॥
जामै तने बितान, रसीले रस अधिकाई।
सतरंग सौरभ भर्‌यौ, न बसी जाय निकाई॥
बह्म रह्यौ है नाचै, एक छछिया की आखा।
सिब-ब्रह्मा छबि, धन्य ताको ब्रजभाषा॥ [54]

इन्होंने ब्रजभाषा काव्य को सूरदास, सूदन लाल कवियों की तरह छन्दो का कुशलता से प्रयोग कर ब्रजभाषा काव्य को मधुर बनाया। ब्रजभाषा काव्य की भाषा

शैली उक्ति वैचित्र्य सभी को बहुत ही सुन्दर ढ़ंग से प्रस्तुत किया। ब्रजकाव्य के विषय में ऋतुवर्णन, बसंत चित्रण, कृष्ण वर्णन जैसे परम्परागत विषयों के अलावा आधुनिक जन जीवन को प्रभावित करने वाले राजनीति महंगाई, देशप्रेम आदि विषयों पर भी ब्रजभाषा में बहुत ही सुन्दर ढ़ंग से लिखा है। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

ऋतुवर्णनः

झूम-झूम लूम-लूम, धिरि आए कजरारे,
नील-पीत-स्याम, रंग रंगोली मचाई है।
पवन के झकोरे पाय, डोलत हिडौरे से,
मत्त गजराज करे, नभ ज्यों नचाई है।
रेलन पेलन हैं दामिनी संग भेलत है,
खेलत है खेल खूब करै लरजाई है।
दौरि-दौरि परस्पर बारे है पहारै नभ
मेघमाल आय भूरि, भूडरु मचाई है। [55]

महगाई :

बात जनहित की करें, काम बड़े बेमेल।
कीमत अकासी भई, चीनी कोला तेल॥
चीनी कोलातेल, बिलखते बासन सारे।
बुझी रसोई भभक उटी दहके अंगारे॥
कब तक भूख सहे, तिहाँरी कोरी धाते।
माल खसम के खांय, चार संग हंसि हंसि बाते॥ [56]

श्री हीरालाल शर्माजी ने ब्रजभाषा में गद्य और पद्य दोनों रचनाएँ रची। इन्होंने ब्रज-रचना माधुरी में ब्रजभाषा साहित्य में उर्दू कवियों का योगदान, ब्रजकाव्य और ब्रजपंछी कोयल, ब्रज का सांस्कृतिक जीवन और गंगा का महत्व, सूर साहित्य में ब्रज की होरी, जवाहर लाल नेहरु-बालकन में महान सिच्छक, जैसे विषयों की रचना गद्य रुप मे की जो कि ब्रजभाषा में रचा गया ब्रज और ब्रज के सांस्कृतिक जीवन पर बहुत ही सुन्दर लिखा गया है।

इसके अलावा इनकी गद्य रचना श्री हरि राम व्यास और उनकी रस भक्ति,

ब्रजकाव्य में समन्वयवादी द्रष्टिकोण यायकी, भरतपुर में ही वर्तमान ब्रज भाषा जानित स्रजन, ब्रज का अल्प ज्ञात कवि रतन सूदन कवि, ब्रज के अल्पज्ञात कविरत्न बलवीर, के अलावा नजीर की नजर माहिं श्रीकृष्ण, ब्रज कालीन कविन माहि यति राम, ब्रज की गौ संवर्द्धन परम्परा, ब्रजकाव्य में बिखरी अलख, ब्रजभाषा में श्रृंगार वर्णन, भक्तकवि मतिराम की राधा, ब्रज साहित्य में होरी जैसे विषयों पर बहुत ही सुन्दर लिखा है। इन्होंने गद्य में कई रेखाचित्र में लिखे है। प्रो. घनेकर इनका विख्यात रेखाचित्र है।

श्री हीरालाल शर्मा 'सरोज' जी ने गद्य के साथ पद्य मे भी उच्च कोटि की काव्य रचना की है। इन्होंने ब्रज रचना माधुरी में सूरदास, गाय की महिमा, ब्रज के पच्छी, लाल बलवीर, लोकमंच, ब्रज काव्य में समन्वयवाद, कविवर सूदन, मतिराम, भरतपुर, फादर बुल्फे कौ श्रद्धान्जलि, लठिया जाकै (कुबैत पै इराकी कब्जा) जैसी बहै बयार (दल-बदलून पै) सन् 78 (सी-आई की विजय पर), सिव-भगती, न नीर बरसाते है, गद्दी के भूखे, यार संग हँसि-हँसि बतिया, बसन्त के दो रूप होरी, मेघा, चम्पा लाल मजुंल पै दुर्दसा, अपने अभिनन्दन के समै, परिभाषा, मँहगाई, सार्वजनिय सिच्छा, अलक, कवित्त, ब्रजमाहि देवीपूजा, जसुदा की विथा, सत्ताधारीन के नाम, नाथद्वारा में, हमारौ है, आत्मा परिचय, सौ-सौ बेर नमन है जैसे शीर्षक देते हुए पर बहुत ही सुन्दर लिखा है। जिनके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

सूरा तोको धन्य है, सरज्यौ कियौ अपार।
बालकृष्ण लीलन सो, भरि डार्‌यौ भण्डार।
भारि डार्‌यो भण्डार, कहूँ पै धेनु चराबै।
चन्दा मांगे मातु, कहूँ नवनीत चुराबै।।
ग्वाल करें किलकारि मोद मन है भरपूर।
वात्सल्य बेठोर, धन्य तोको है सूर।। [57]

✻ ✻ ✻

भूखे गद्दी के निपट, रहैना जन हुसियार।
चरना-देवी बहुगुना, फिरि मिलि गए इक बार।।
फिरि मिलि गये इकबार, बगल मे लिए अड़ानी।

मारीची है खाल बिसमरी मीठी बानी।।
ऊपर है सब साठ, काठ है पूरे सूखे।
ल्यारी बड़ खूँख्वार निपट गद्दी के भूखे।। [58]

इस प्रकार श्री हीरालाल शर्मा जी मथुरा में जन्म लिया फिर 1957 से राजस्थान में आकर बस गए और ब्रजभाषा के प्रति उनका रुझान बढ़ता गया और उन्होंने ब्रजभाषा में अनेको गद्य-पद्य रचनाएँ रची । जिन के विषय परम्परागत होने के साथ-साथ आधुनिक विषयों पर भी बहुत ही सुन्दर रचनाएँ रची। जिससे इन का नाम बड़े-बड़े कविरत्नों के साथ बड़े आदर से लिया जाता है। आधुनिक जीवन में पनपती बुराईयो जैसे कुलीनता, भ्रष्टाचार, झूठ, प्रपच आदि। गरीब असहाय के हृदय की पीड़ा, आदि पर ब्रजभाषा में लिख कर ब्रजकाव्य की ओर लोगो का ध्यान आकृषित किया। जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

एक हाथ माखन है एक हाथ माट लियौ,
मातु ढ़िंग आय धाम मोद ही बढ़ावे है।
भीजे रस मन आप गावत सु तान लेय,
छोटे से कन्हैया 'सत्य' निर्तत रिझावे है ।। [59]

*** * ***

या जग मे एते सुखी गुण्डा कपटी चोर,
व्याभिचारी नाहि प्रेमरस नेता रिस्फतखोर।
नेता रिस्फतखोर माल जो सबको मारे,
करे मनोरथ पूर्ण अपनी इच्छा धारे।
कहे सत्य बलदेव दम्भ छल इनके मग में,
दया धरम सब ठाडिसु खी या सारे जग में। [60]

10. श्री बलदेव शर्मा 'सत्य'

श्री बलदेव शर्मा 'सत्य' जी का जन्म 13 अगस्त 1912 को बीकानेर में हुआ। इन के पिता का नाम श्री मधुसूदन शर्मा और माता का नाम श्रीमती कमलावती है। इन्होंने अपना काव्य गुरु श्री मट्टू लालजी श्री गोकुलदासजी को मानत है। इन्होंने 1932 से ब्रजभाषा में लिखना प्रारम्भ किया। इन्होंने गद्य-पद्य दोनो ही क्षेत्र में अपनी

कलम का चमत्कार दिखाया। इन के पूरे साहित्य को तीन भागों में बाटां जा सकता है। (1) भक्ति परक साहित्य (2) श्रीनाथजी उत्सव परक साहित्य (3) फुटकर साहित्य। इन के काव्य में अष्टछाप के कवियो के काव्य जैसी झलक पाई जाई है।

भक्ति परक साहित्य में इन्होंने श्रीनाथ जी की भक्ति में डूबकर सैकड़ौ कवित्त -सवैयो की रचना की। श्रीनाथजी उत्सव परक साहित्य में श्रीनाथजी के विभिन्न उत्सव शृंगार, और अन्य साधन का विवैंचन किया है। फुटकर साहित्य में आधुनिक जन-जिवन, नायक-नायिका भेद जैसे परम्परागत काव्य सृजना इनकी विशेषता रही है।

सत्य जी ब्रजभाषा के श्रेष्ठकवियों में से एक है। इन का 'श्रीनाथ-सेवा रसो दधि' विशाल ग्रन्थ सरस साहित्यक ब्रजभाषा गद्य के पाँच सौ पन्नो में लिखा गया श्रेष्ठ ग्रन्थ है। जो कि उन्हें उच्चकोटी के कवियों में स्थान देता है। इन के काव्यों पर अष्टछाप के कवियों का बहुत अधिक प्रभाव देखने को मिलता है। जिससे इनके काव्य में सेवा, प्रार्थना और अर्चना देखी जा सकती हैं। साथ ही इस प्रकार 'सत्य'जी ने ब्रजभाषा में अनेको गद्य-पद्य की रचना की। इन के प्रकाशित ग्रन्थ है। नाथद्वारे का सास्कृतिक इतिहाँस, श्रीनाथ सेवा रसोदधि, पुष्टिरसाल, श्री नाथ चिन्ह भावना, आरती सरुप, सात सरुप भावना, विट्ठलनाथजी के वचनामृत आदि इन्होंने 'ब्रज रचना माधुरी' कवि परिचै, वन्दना वल्लभ सप्त सरुप की, भ्रान्त्यालंकार, अष्टछाप, ब्रज के अन्य प्रभु, प्रार्थना, विरह बारहमासी में उत्सव गणना, सिंहावलोकन, श्रीनाथ अष्टक, ब्रजविलास में कुछ छन्द-सरस्वती वदंना, सिंहावलोकन, ब्रज स्थल संयोग वियोग ब्रज विहार वर्णन में कुछ छन्द, अनुग्रही परिक्रमा, मधुवन, ब्रजभाषा, नायिका का वर्णन (भारतमाता का रुप) गीत, ब्रज की बाला, काकरोली की ललना, बीकानेर महिला वर्णन, लखनऊ की नारी, चित्र भयावनी साहित्य नारी को, स्वामिनी जी को वर्णन, ब्रज स्वरूप स्वामिनी शृंगार, बसंत रुप नायिका, राष्ट्रीय रचना-भारत स्वतन्त्र है, साशन हमारौ है, भारत स्वतन्त्रता को आज दिन आयो हैं, पन्द्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी (उभय अर्धबारौ गीत कव्य, गांधी प्रशंसा, राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद महोदय, जवाहर लाल पर, लाल बहादुर शास्त्री, गृह मन्त्री गोविन्द वल्लभ पन्त, कविन के निधन सोकांजलि में पठित, रविन्द्रनाथ टैगोर की जयन्ति पै, भारतेन्दु बाबू

हरिशचन्द्र, रितुराज बपसन्त, वीर रस बसन्त, ब्रज की रंगीन होरी, नाथद्वारा की होरी, जयपुर की होरी, ग्रीष्म, भारत स्वातंत्र पै वर्षा, शरद, आज की व्यथा एकता पै, युग का जन, गरीब मंगता को वर्णन, तनखा न मिलवें पै मंजूर को वर्ण,न गणपति जी बाल लीला, शिव पंचायत, गरीबी पै, युग की पंचाग्नी, प्रेमी की स्थिति, भक्ति में भक्त की अति पुकार, ससुराल है, कविता व्यर्थ है, कवित्त, कविता कसी, हास्य रूप लखनऊ जन के नाम, प्रार्थना, कविता की कृपा, चाय चालीसा, वल्लभ शतक सौ कछ छदं, श्री विट्ठल, नाथद्वारा परिचै, प्रार्थना, सरस्वती वदंना, सिंहावलोकन-कवित्त, मेदपाट (मेवाड़) वर्णन, नगरवर्णन, नगर निमार्ण, बजार, गली वर्णन प्यारी मोहल्ला गढ़ और अन्य। जिनके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

मधुवन में बिहारी मधुर विहार करें,
सूर्य कुण्ड मन्दिर में भानु श्री बिराजै है।
कृष्ण कुडं ध्रव जी को मन्दिर मनोहर हैं,
शिव स्थल कुण्ड सामै बैठक प्रभु राजे है।
लवनासुर गुफा मधु सूदन नाम भयो,
लछमी नारायण तहाँ दाऊजी राजे है।
नारद सन्देह दूर चतुर्भुज धार प्रभू,
लौल मधु दैत्य बध सत्य काज साजे है। [61]

* * *

भागं के पिवैया ये भागं बिन चले नाँय,
तमाखू की तलब वारो चित्त को डुलात है।
अफीमचीए अमलबिन उवासी आमे
तैस हू कविता बिन कबी तड़फात है।
भाव भारी भाषा में डूबत सदा ही रहे
लिखबे के काजे सत्य मन बिललात है।
समझे ना सोचे ना पढ़यौ लिखयौ होय नाँय,
ताही को सुनाय करि मन हरखात है। [62]

इस प्रकार 'सत्य'जी ब्रजभाषा काव्य के बहुत ही प्रभावशाली कवि है।

जिन्होने अपना पूर्ण जीवन आराधना में व्यतित कर दिया उन्होंने अष्टछाप के कवियों जैसी रचना रची 'श्री नवनीत गोस्वामीजी' लिखतें है।

''सत्य जी ने हजारों कवित्त एव दोहो की रचना की। उनके दो महत्वपूर्ण कार्य की चर्चा किये बिना उनके कृतित्व का विवरण अधूरा रह जायगा। नाथद्वारें का सांस्कृतिक इतिहाँस, उनका महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। जो उन्होंने अपने प्रिय शिष्य कविवर श्री प्रभुदास जी वैरागी से लिखवा डाला। इसी प्रकार श्रीनाथसेवा रसोदधि तो उनकी जीवन भर की श्रीनाथ सेवा एवं भक्ति का निचोड़ है। यह ग्रन्थ उनकी जीवन साधना की चिन्तामणि है।''[63]

इस प्रकार अन्य कविरत्न भी इनकी और इनके काव्य की प्रशंसा करते रहते हैं।

11. श्री कमलाकर तैलंग 'कमल'

श्री कमलाकर तैलंग 'कमल' का जन्म सवंत् 1971 को रेबई गांव (ग्वालियर) में हुआ। इन के पिता का नाम श्री बलवत राव तैलगं और माता श्रीमती बल्लीबाई है। ये रीतिकाल के रससिद्ध कवि पद्माकर के वंशज है। इन्होंने अपने पिता, काका और बाल शास्त्री का अपना काव्य गुरु माना।

इन्होंने 1935 में एक छोटें से दोहे की रचना कर ब्रजभाषा काव्य लिखनें की शुरुआत की। इन की पहली कविता है।

तम थमयो उदयो चहत, अरुण अमल आकाश।
प्रात भयो उठ बैठ सुत, करहु कछुक अभ्यास। [64]

सन् 1937 में भारत के स्वतंत्रता आदोंलन से प्रभावित होकर कविता लिख डाली। इन्होंने निःसंकोच निडर भाव से अग्रेंजो को ललकारते हुए लिखा।

सुने विदेसी लोग, बात ये एक हमारी।
वापिस घर कौ करै, जायबे की तैयारी।
हमतो इहां सुतंत्र होइकै रहिबौ चाहत।
भारत अपनी सही हवा में बहिबौ चाहत। [65]

इन्होंने अग्रेजों द्वारा हो रहे अत्याचार, अनाचार अग्रेंजो ने हमारे रीतिरिवाज और संस्कृति को बिगाड़ा, लालच, धूम्रपान, चायपान और जातिपाति की ऊँचनीच

जैसी सामाजिक बुराइयों पर भी बहुत अच्छा लिखा। जिसका उदाहरण इस प्रकार है।

मन्द माल चख खोल तू लख होठन कौ हाल।
अरे धूम्रपान है दिल दिमाग की काल॥
घर में मचत अपार है हाय हाय को घोर।
चाय पिये बिन सीस पै पूरी आवत जोर।
चाय पिये ते जिन्दगी पावत नही विकास।
आयु घटत अरुं काय कौ होवत सत्यानास। [66]

इस प्रकार 'कमल' जी ने आधुनिक सामाजिक बुराईयों को ब्रजभाषा काव्य के रुप में कविता करके लोगों का ध्यान इस और आकर्षित किया। इसके अलावा इन के काव्य में भक्त रूप भी देखने को मिलता है। इन्होंने 'उद्धवशतक' में गोपी की वियोंग दशा का चित्रण 120 छन्दो में किया है। गोपी कृष्ण या प्रेम प्रसंग को 'कमल'जी ने 120 छन्दो के रूप में रचा। उदाहरण इस प्रकार है।

एहो स्याम सुन्दर तिहँरि इन नैनन में,
पीर भर्‌यो नीर कौ प्रवाह चल्यौ आवे क्यों। [67]

इनके प्रकाशित ग्रन्थ हैं, त्रिवेणी, प्रबोधनी, सूरदास इसके अलावा इन्होंने ब्रजभाषा में ब्रज-रचना माधुरी की रचना की जिस में अनेक विषयों का समावेश किया जैसे भीष्म प्रतिज्ञा, प्रबोधाष्टक, भारताष्टक, महँगाई, सूरदास, हमारौ भारत, तुलसीदास, जंग कौ प्यारौ हिन्दुस्तान, उद्धव शतक में, विनती, समर्पण, मंगलाचरण, उद्धव के वचन, उद्धवशतक के द्वितीय खण्ड में उद्धव की स्थिती, उद्धव के वचन, गपियों के वचन, तृतीय खण्ड में प्रकृति, श्रीकृष्ण की महिमा, ब्रजवासी, ब्रज की महिलाए, राधिका के वचन, जसोदा, नन्दबाबा का आशिर्वाद, उद्धव का प्रभाव, चतुर्थ खण्ड मथुरा में उद्धव का आगमन उद्धव के वचन, को अपने सुन्दर ब्रजभाषा के शब्दों को पिरो कर रचनाएँ रची।

माखन कौ चाखन तौ, सपनौ भयौ है अब।
दूध दह्यौ अपनौ, रह्यौ है नाहिं घर में॥
कहें कमालकर न छाछ हू कौ घोरा मिलै।
भरिये कहां तै छोरा छोरिन के नर में॥

पर पख मनाय बौतों, दूर रहौ खाय के कौ।
आवत है धान गुरु सक्कर न कर में।।
दोय गज टूकन की, नेक से कनूकन की।
खाय रही महँगाई आजु चराचर में।। [68]

इन्होंने विभिन्न विषयों के साथ-साथ ब्रजभाषा काव्य ने घनाक्षरी, सवैया, रोला, दोहा, अमृतध्वनि आदि छन्दो में रचना की।

12. श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल

श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल जी का जन्म 2 जुलाई 1931 को डीग (भरतपुर) में हुआ। इन के पिता 'श्री रघुनाथ प्रसाद मिश्र' और माता 'श्रीमती सरस्वती देवी' है। यह श्री श्रीनिवास ब्रह्मचारी को अपना काव्य गुरु मानते है। इन्होंने एम. ए. बी.एड तक शिक्षा ग्रहण कर अध्यापन में कार्यरत है। इन्होंने ब्रजभाषा और खड़ीबोली में लिखना कक्षा 10 से ही शुरु कर दिया था समस्या पूर्ति पर लिखना सन् 1948 से प्रारंभ किया इन्होंने ब्रजभाषा में पद्य और गद्य दोनों ही लिखे है। इन्होंने पद्य में ब्रजसंस्कृति के साथ-साथ समाज में व्याप्त बुराईयो पर भी ब्रजभाषा में मधुर शब्दो के साथ रचा है। जैसे इन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

महँगाई :

आई है कमर तोर, भारी महँगाई आई
पेट भरबे के ताई, रोटी है न दार है।
हाड़ मास पेलत है, रोज हाय-हाय करै,
हाथ पाम फैकै तोंऊ, पावन न पार है।
कैसे खामे दूध-दही ध्यौ का भाव आसमान,
हर एक चीज पै चड़ाव ना उतार है।
सुरसा की भांति महँगाई मुख फार रही,
हम पै न सही जात याकी पानी मार है। [69]

समाज में दहेज प्रथा का बोलबाला है। हमारा देश विज्ञान के साथ प्रगति के नये आयामों को तो स्वीकार्य करता हैं किन्तु कुछ रीतिरिवाज ऐसे है। जो खत्म होने की बजाय प्रगति करते जा रहें हैं दहेज प्रथा इनमें से एक है। जिसके बार में मुद्गल

जी ने बहुत ही सुन्दर लिखा है।

चारों ओर तेरौ ही, दहेज बहु सोर भयौ,
जित देखौ तित भूत, तेरौ ही सवार है।
फ्रीज इसकूटर सगाई माँहि माँगत है,
बीबी सौंहू पैले टी.वी., पावै कौ बुखार है।
जापै नही खाइबे कौ, औढ़िबे बिछायबे कूँ।
दैबे कूं दहेज नाहिं, ताकी माटी ख्वार है।
और औ दहेज हमें, कबलौ सताबैगौ तू,
हम पै सही ना जाय, तेरी पैनी मार है। [70]

समाज में पनप रहे राजनीति के पचड़े, दाव-पेंच को देख कर उन्हें सही मार्ग दिखाने की कोशिश की है। जैसे -

हमनै जिताये फिर, गादी पै बिठाय दिए,
सेवा कर जाईगे तौ, सीस पै चढ़ाइगे।
अपने ही अपने जु, पेटन मल्ह ते रहे,
जनता की नजरन, बेगि गिर जाइंगे।
जोड़-तोड़ मेई कहूँ, समै कूं बिताते रहे,
एक दूसरे की टाँग खीच जो सिहाइगे।
फूलदान जे सजाए कूड़ेदान डारे जाय,
पाचँ साल बाद फिर लौटिकै न आइगे।। [71]

इन्होंने पद्य के साथ-साथ गद्य में भी युगानुरुप लिख कर लोगों को अपनी प्रतीभा से अवगत कराया। गद्य में इन्होंने कहानी, एकाकी, रेखाचित्र, रिपार्ताज, संस्मरण, डायरी, उपन्यास, साहित्यक वार्ता आदि रचा है।

इन्होंने रेडियो रुपक में 'राम राम सबन कूँ' पूछता मुरख ना कहावै, निन्यानवें के फेर, कल्ल की कल्ल देखी जाएगी, भैस कौ खन्ना, मन चंगा तौ खटौरी में गंगा, दर्जन ऊपर दो, हरया म्हौर, पौगा पंच आदि प्रस्तुत कियें।

रेखाचित्र में काजखोरो काका, पिसन वारे मुंसीजी, किसोरी पडिंत, पन्ना चौकीदार, मुकन्दी, गीता बसन्ती, पाटूबाई, पिनुआ, बब्बल आदि रचें है।

इन की वार्ताए सन् 1966 से ब्रजमाधुरी दिल्ली, मथुरा और जयपुर आकाशवाणी से प्रसारित होती रही। जिनमें से कुछ इस प्रकार है। 'राम बचावे संगीतज्ञातन ते' अचनाहे-को संग, बुरे फँसे कैसन के चक्कर में, राम बचावे ऐसी बरात ते, लाटरी, तस्करी कौ माल, थाम लै चाकी लै लै होस, बरसाने की लठामार होरी आदि।

इन की कहानियाँ है टंटो टूटौ टारमिटी, फुटी-चुड़ी अमर सुहाग, और रथ लौट गयौ, आदि।

इन के 'राम भरोसे जो रहे पर्वत पै हरियाय' रिपोतार्ज है, एक दिन की डायरी और डायरी के पन्नान डायरी रचना है। 'ब्रज बसुन्धरा को काव्य सौष्ठव' छिन छन में काव्य सग्रह की, समीक्षा की इन का 150 पृष्ठो का ब्रजभाषा में लिखा गया उपन्यास 'कचन करत खरौ' पहला उपन्यास है।

मुद्गल जी ने ब्रजभाषा में पचीस रेखाचित्र, पन्द्रह एकांकी (रेडियो रुपक) और तीस हास्य वार्ताए लिखी है। 'निनन्यान में कौ फेर' प्रसिद्ध एकांकी हैं। इन की कविताओं में प्रेम की अनन्यता देश प्रेम, सामाजिक समस्या कूट कूटके भरी हैं। प्रकृति का भी सुन्दर चित्रण मिलता हैं। साथ वर्ग भेद, सामाजिक विसमता और असमानता पर गहरा व्यंग किया है।

इन्होंने **ब्रजरचना माधुरी** की रचना ब्रजभाषा मे की। जिनमें प्रकृति, राधाकृष्ण, होली, चन्द्रवली लीला, सूर समारोह, बासूँरी, समस्या बिसरिए, उधौ सो स्याम कौ अनुरोध, उधौ गोपी सम्वाद, उधौ को स्याम सौ निवेदन, स्त्रमिकन सौ, समस्या-नंद कौ लाला, मीठी ब्रजभाषा, दहेज के मारे, माहानि विधेयक पारित हेबे पै, मानहानि विधेयक वापिस लेबे के पीछे, समस्या-निहारौ, महँगाई, कन्डालिया, बात चली जात है, समस्या आइंगे, राजनीति, ससुरार की होरी, फागुन में ससुरार, जैसे विषयों का समावेश कर ब्रजमाधुरी रचना की रचना की जिनके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

सुरदेन्दु छटा उजरी-उजरी सबके सब भे उजरे-उजरे।
सब गैल भई उजरी-उजरी सिगरे दगरे उजरे-उजरे॥
सब बेलि भई उजरी-उजरी तरू पुंज भये उजरे उजरे।
कछु चेटक पूनम चन्दकियौ घनश्याम भये उजरे उजरे॥ [72]

*

होरी पै सुसरार में, बरसै रसकी धार।
मिसरी ते मीठी लगै फागुन में सुसरार॥ [73]

इस प्रकार मुद्‌गल जी ब्रजभाषा काव्य में प्रमुख कवियों में से हैं। जिन्होंने ब्रजभाषा में गद्य-पद्य की रचना की और ब्रजभाषा का प्रचार किया। डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक के शब्दो में "**भाषा में सुर की सी रमक, तुलसी की सी गमक, बिहारी की सी चमक, और भरतपुर अंचर के प्रसिद्ध कवि सोमनाथ की सी रमक के संग-संग ब्रजवासीयो के जीवन की सिंगरी(पूरी) ठुमक विशेष रुप से दर्शीनय है।**" [74]

13. श्री राधाकृष्ण 'कृष्ण'

श्री राधाकृष्ण 'कृष्ण' जी का जन्म 14 जुलाई 1928 को भरतपुर में हुआ। इनके पिता का नाम श्री मनदलाल और माता श्री नंदकुमार जी है। इन्होंने श्री नन्दकुमारजी को अपना **काव्यगुरु माना** इनका परिचय हम इन के द्वारा रची गई एक कविता के माध्यम से जान सकते हैं।

'जैपुर निवास गोपीनाथ मन्दिर के पास,
बस्ती पुरानी में हवेली एक न्यारी है।
जनम भू भरतपुर लगन में सनीचर है,
दो ही बरस को तज मरी महतारी है॥

***

कृष्ण कवि कविता की लगन लगावन ते,
लगी सो लगी बालपन तेई हमारी है।
पूरन कृपा है गुरु नन्द के कुमार जू की,
नाम राधा कृष्ण मेरौ, काम सरकारी है॥' [75]

कृष्ण जी ने ब्रजभाषा में पद्य की ही रचना की। इसमें इन्होंने परम्परागत विषय जैसे राधा-कृष्ण के प्रसंगो के साथ-साथ आधुनिक समाज में व्याप्त दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, अन्न जल की कमी, राष्ट्र की प्रगती, राष्ट्रीय एकता की शक्ति, नेताओ की आपाधापी, न्याय व्यवस्था, भ्रष्टाचार, सीमा पर अपने जान देने वाले वीर सैनिको पर बहुत ही मधुर भाषा में प्रस्तुत किया। जिनके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

अन्नजल समस्या हुई ना हल हिन्द में
हमारी योजनान की टिल्ली उड़ जायगी॥
बिल्ली सम बिलोक रहे देसी विदेसी सत्रु।
मारेगे छपट्टा झट्टा इिल्ली उड़ जायेगी। [76]

***

सोच-सोच हरि सकल नेता निहारै नैन,
आजादी कहा महा ऊधम सौ मचायौ है।
कृष्ण कवि आज तक सफल ना भयौ कोऊ,
विफल भई योजना खोज यही पायौ है।
गयौ है समाजवाद वद अपवाद कोरे।
भोरे भारतीन को विपथ में भ्रमायौ है।
खोटन की ओट खूब नोटन सौ वोटन सौ,
चोटन सौ भारत कौ भुरता बनायौ है। [77]

'कृष्ण' जी समाज के कोई भी कोनें से अछुते नही रहें। इन्होंने हर विषय पर अपनी कलम का चमत्कार दिखाया जैसे भक्ति रस देवी-देवता के विनय के छंद, दान लीला के छन्द, तीर्थयात्रा प्रसंग के छन्द, गोपी-उद्धव छन्द और विविध लीलाओं पर छन्दो की रचना की। वर्गभेद, अशिक्षा, राशन, जात-पात, महँगाई, बजट, चमचा, नई पीढ़ी, अचरण-दुराचार आदि विषयों पर भी अपनी कलम के जादू से लोगो को विभोर किया।

'कृष्ण' जी ने राधा गोपीनाथ परिचय काव्य शतक, काव्य कलश जैसे ग्रन्थ की रचना की जो प्रकाशित हो चुकी है। साथ ही ब्रजरचना माधुरी की रचना की। जिसमें श्री गणेश वन्दना छंद अमृत ध्वनि, श्रीकृष्ण नृत्य अमृत ध्वनि अन्नजल समस्या, राष्ट्रीय एकता, बजट, न्यायव्यवस्था, भ्रष्टाचार, चमचा, पैसा, राशन, दहेज प्रथा, कविता, समस्यापूर्ति, श्री रामदरबार, श्री हनुमान जी की प्रतिज्ञा, कश्मीर-पंजाब, वीररोद्र रस के छन्द, राष्ट्रपिता-महात्मा गांधी, मेजर सोमनाथ-परमवीर चक्र 1947, लैफ्टीनैन्ट कर्नल किशन सिंह राठौड़-महावीर चक्र हिन्द-पाक युद्ध 1948, सैकिन्ड लैफ्टीनैट रामस्वरूप -वीर चक्र हिंद पाक युद्ध 1948, जमादार प्रभाती सिंह-

वीर चक्र हिंद पाक युद्ध 1948, सुबेदार आनरेरी कप्तान बसन्ताराम-वीर चक्र हिंद पाक युद्ध 1948, सूबेदार मेजर आनरेरी कप्तान गोपालराम- वीर चक्र हिंद पाक युद्ध 1948, मौहरसिंह निरवाण- वीर चक्र हिंद पाक युद्ध 1948, हवलदार मेजर पीरु सिंह - परमवीर चक्र परणोपरांत1948 कप्तान राम राघव राना परमवीर चक्र 1948, लास नायक करम सिंह - परमवीर चक्र 1948, मेजर शैतान सिंह -परमवीर चक्र परणोपरांत 1948, चीफ एयर माशल अर्जुन सिंह- हिंद पाक युद्ध 1965 जनरल चौधरी, कर्नल ए.वी. तारापौर- परमवीर चक्र 1965, कप्तान कपिल सिंह थापा- हिंदा पाक युद्ध परमवीर चक्र 1965, लैफ्टीनैंट कर्नल गुरवशं सिंह- महावीर चक्र हिंदु पाक युद्ध 1965, कप्तान चन्द्र नारायण सिंह-महावीर चक्र हिंद पाक युद्ध 1965, मेजर पूरन सिंह - वीरचक्र हिंद पाक युद्ध 1965, लैफ्टीनैट कर्नल सपूर्णा सिंह- वीर चक्र हिंद पाक युद्ध 1965, मेजर राजेन्द्र कुमार वर्ली- महावीर चक्र हिंद पाक युद्ध 1965, मेजर शमशेर सिंह- वीर चक्र हिंद पाक युद्ध 1965, लैफ्टीनैट कर्नल मेघ सिंह- वीर चक्र हिंद पाक युद्ध 1965, लैफ्टीनैट कर्नल रघुवीर सिंह- चक्र हिंद पाक युद्ध 1965, मेजर राम भाष्कर- महावीर चक्र हिंद पाक युद्ध 1965, हिंद पाक युद्ध 1971, चीफ फील्ड मार्शल मानक शाह 1971, अन्योक्ति-पकंज, ममता, सत्य अहिंसा, कलियुग, पाप-पुन्य शिक्षा, समस्या-पूर्ति, ब्रजभाषा, अमृतध्वनि, भ्रमरगीत, उद्धव गोपी प्रकरण, उद्धव द्वारा श्री कृष्ण का उत्तर। जैसे विषयों का समावेश कर ब्रजभाषा के माधुर्य से मधुर रचना रची। जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

श्री कृष्ण नृत्य अमृत ध्वनि :

मोर मुकुट कर लकुट धर अधर बेनु गति मंद
ठुमक ठुमक कवि कृष्ण त्यों नत्तत्तत् नदँ नदँ
नृत्तत्तत् नँद नदँ चकित्तत् चित चित्तत
तत्तत् ताल बजत्तत्तत गति बाल ब्वृत्तत
मत्तत्तत् मन मुरनि छिति छननू छछूम छछोर
धित्तत्तत् धुनि धरनि हरि नृत्तत्तत् जिमि मोर ।[78]

ममता :

माँ की ममता की कहा समता तीनौ लोक।

माँ सम तौ माँ ही अहै अनुपमेय अवलोक।
अनुपमेय अवलोक विलोकत ही हिय हरसै।
जाके पय प्याये जीवन में जीवन सरसै।
लालन पालन करै प्रेम सो पूरन क्षमता।
मुख सों कैसे जाय बखानी माँ की ममता।। [79]

इस प्रकार 'कृष्ण'जी ने ब्रजभाषा में मधुरता से परीपूर्ण रचनाएँ रची। ब्रजभाषा के साथ कुछ हिन्दी, और अग्रेजी शब्दों का भी समावेश करके उन्होंने अपने काव्य को मधुर बनाया। इन की कुछ रचनाएँ अप्रकाशित हैं। जैसे रस परिचय जिस में रसांगन के सगोपांग का 200 पृष्ठो में वर्णन है, वीर बत्तीसी इस में परमवीरचक्र महावीर चक्रधारी वीरो के विषय में 32 छन्द है।

(14) श्रीमती विद्यारानी

श्रीमती विद्यारानी का जन्म 3 नवम्बर 1917 को मुगियार जिला हरदोई में हुआ। इन के पिता का नाम ठाकुर नारायण सिंह भगोरिया और माता का नाम श्रीमती रमा कुमारी है और यह अपने चाचा गणेश सिंह जी को अपना काव्यगुरु मानती हैं। इन की शिक्षा घर पर हुई। इन को अपने काव्यों को प्रकाशित करके नाम कमाने की कोई इच्छा नहीं हैं इन्होंने घर में ही अपने चाचा की मदद से सूरदास, रामायण, गीता महाभारत पढ़-पढ़ के पढ़ना लिखना सिखा। चाचा की मृत्यु के पश्चात् उन की प्रेरणा से कविता लिखना शुरु किया और सर्वप्रथम गीता के बहुत से श्लोकों का ब्रजभाषा में अनुवाद कर दिया। जिसका उदाहरण इस प्रकार है।

धरम क्षेत्र कुरू क्षेत्र में करन युद्ध इच्छा बारे।
मेरे अरु पांडु पुत्रन्नै उपाय किये का रच्छा बारे। [80]

इन्होंने काफी सारी रचनाएँ रची किन्तु इन के पति राजा अमर सिंह जी की नौकरी में ट्रान्सफर के कारण इधर-उधर जाने में काफी रचनाएँ खो गई, कुछ को चूहे खा गए। इन के कुल मिलाकर 20 ग्रन्थ हैं । जिनमें ब्रजभाषा की रचना के अलावा हिन्दी भाषा के नाटक और हिन्दी कविताएँ हैं। इन के रचे गए कुछ ग्रन्थ इस प्रकार है। सन् 1936 में शिव महिम्नस्तोत्र के श्लोको का ब्रजभाषा में भावनुवाद किया जिसका उदाहरण है।

महिमा तुम्हारी का प्रभो वाणी न वर्णन कर सके,
जब वेद भी है कथन करने में चकित गुण रुप के।
कैसे कहूं गुण रुप को क्योकर कि मन चिन्तन करै,
जब हो पार सब सो प्रभो! मन वचन कस वर्णन करै। [81]

-: शिव सरन सतक इस में शिव की अपार महिमा का वर्णन किया हैं मीरा की भांति इन्होंने शिव से अपनी शरण में लेकर मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की है।

-: मेरे प्रभु और कमनीय कुसुम संग्रह, मधुकन-काव्य संकलन, हिन्दी प्रेमगीत के साथ-साथ ऋतुवर्णन, नवयुवको का उद्‌बोधन, करुण कहानी, किसानो की कसक, जीवन आग जीव है पानी, अगर मै आलोचक होता, भारतभाल, भक्त चन्द्रहासे, आजकल, शिवाजी, हकलो का समूह, बूढ़े का विवाह, भारत भूमि, भक्त बन्धु नाटक एकांकी और रेडियो रुपक लिखे है। इसके अलावा विभिन्न विषयों पर ब्रजभाषा में इन्होंने हजार के आसापास कवित्त और सवैयें लिखे हैं। इन्होंने समस्यापूर्ति पर ब्रजभाषा में काफी कुछ लिखा हैं। जैसे मतवारे समस्या की पूर्ति में यह सवैया द्रष्टाव्य है।-

मन रंग तुरंग मतगं-पगे निहागं कोई जन वारे है।
कोउ फैशन फूल फिरे कितहू कोउ प्रश्न बने सतवारे है।
मदिरारत कोउ स्वभूति भृमे लिखते विजया लतवारे है।
धन्य है ते बनि भृगं हरी पद पंकज पे मतवारे है।। [82]

इन्होंने ब्रजरचना माधुरी की रचना में तमाखु के दोस, समस्या-तुलसी, समस्या-मतवारे है, समस्या नीकी, समस्या-रन में, समस्या-मतवारेहै, 'हितेषी' के प्रति, समस्या-राज की, समस्या-ते, समस्या-माल है, श्री दुर्गेश नन्दिनी विनय पत्र, भजन, श्री दुर्गेस नन्दिनी विनय पत्र (5 भजन है) जैसे विषयों का समावेश कर ब्रजभाषा में रचना रची जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

'तमाखू के दोस'

चाव सौ जात तमाखू चवाय पिये करि धूम सनेह सम्हारे।
काह कहों तिनकी मति को करै रोग में वृद्धि न ताहि विसारे।

अरु भक्षक को वये रक्षक जो हठ हेरे न हारि तजै हठ हारे।
बुद्धि हीन भयो सो अरे विधि ने भरि दीन्हे कलकं के अकं लिलारे॥ [83]

*** * ***

'जै जयति जै दुख दरणि देवी।
चरन वन्दना सुर अनन्दत नेह युत सब करत सेवि।
सक्ति एक विभक्ति लखियत भक्ति भावति भिन्न भूर।
मुदित मन जन कर तिनकी सकल वांछा पुरत पूर।
भयावनी अति भयावनीन विचित्र रुप सम्हारि चेति।
जगत विचरत फिरत उर के हरत तम दुःख कम न देति।
देविः बनौ का सुजस तुव हों बनी कुमती कुमारि।
नमहुं बारहिं बार राखहु सरन में विद्या निहारि॥' [84]

15. श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी

श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी जी का जन्म 4 जनवरी 1933 को कानपुर में हुआ। इन के पिता का नाम पं. ईश्वरी प्रसाद अग्निहोत्री और माता का नाम श्रीमती सरस्वती (वसंती) है। इन्होंने एम. ए. अँग्रेजी, एम. ए. हिन्दी तक शिक्षा ग्रहण की और राज सरकार के महाविद्यालीय शाखा में सन् 1957 से प्रवक्ता तथा 1961 में स्नातकोत्तर कालेज से सेवा निवृत है। इन्होंने ब्रजभाषा में दिसम्बर सन् 1988 से लिखना शुरु किया। इन को ब्रजभाषा में लिखने की प्रेरणा राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा रामेश्वरी कन्या महाविद्यालय में 'पढ़त प्रतियोगिता' और कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिस का इनको अध्यक्ष बनाया गया फलस्वरूप उस दिन से इन्हें ब्रजभाषा में लिखने का मन किया साथ ही श्री विष्णु चन्द्र पाठक, श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल, श्री वरुण चतुर्वेदी, श्री धनेश फक्कड़ आदि के सहयोग तथा मूल प्रेरणक इन के पिता जी से प्रभावित होकर इन्होंने ब्रजभाषा में लिखना शुरु किया और ब्रजभाषा में उच्चकोटि के काव्य की रचना की साथ ही अंग्रेजी का ब्रजभाषा में अनुवाद भी किया। इन्होंने समस्यापूर्ति के माध्यम से पर्यावरण, भारतकी नारी, आज के युवाजन, फागुन होली आदि विषयों पर लिखा है। इन के प्रकाशित ग्रन्थ है और ब्रज शतदल में स्फूट रचनाएँ हैं इन्होंने ब्रजरचना माधुरी में इन्होंने समस्या पूर्ति के रूप में भारत की नारी,

बसंत बसै, किसान बधू, बिगरैल, सुहाई है (समस्या पूर्ति), स्फूट एवं समस्या पूर्ति पर्यावरण, बड़ौ परिवार, आज के युवक, होरी, कन्हैया संबंधी (स्फूट एवं समस्या पूर्ति रुप में) कृष्ण, कृष्ण से, होरी पर (समस्या पजारेते) घना माँय पधारे पाहुने पाच्छिन कौ कथन, विज्ञान अरु विनाश, नसौ (ड्रग्स) पर 7 दोहे 1 कुडलियाँ रची और इन्होंने ब्रजभाषा में अंग्रेजी साहित्य का अनुवाद भी किया सांचो स्नेह मूलः विलयम शेक्सपीर, ईस-कृपा (नेत्रज्योति जाने पर) मिल्पन की , जगती जजांल बीच उरझे हम (The World is too much with us) मूल-विलियम बड़सवर्थ बादल (The Cloud) मूल-पी. बी. शेली, सैनिक कौ सपनौ The Soldiers Dream मूलः Campbell,प्रभु की रीत, The art indeed just my lord मूलः Hopkins, बूलबुलो से मूलः राबर्ट ब्रिजेज, फूरसत के छिन Leisure मूलः W. H. Davies gerontion मूल.टी. एस एलियट का अनुवाद इन्दिरा जी ने ब्रज रचना माधुरी में प्रस्तुत किया है। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

'ड्रग तौ कबहूँ न सेइये, ये हैं बिस बिकराल।
नागदंसा सौ हूँ बिकट, अति कराल यह काल॥' [85]

अनुवाद :

प्रीति की गैल, प्रतीत भरी तहँ बाधन कौ कछु काज सरै नाहिं।
नैन तौ सांचो वही कहिये जो असाँचे पिया सो सनेह हरै नहिं।
(प्रीति तौ साँची वही कहिये जो असांचे पिय सौ प्रतिति टरै नहिं।)
कोटि उपाय किये कुटनीन के प्रेम कौ बीज निकारचौ परै नहिं।
प्रेम की डोर अटूट, अहै, अरि के अभिघात सौ तोरै तुरै नहि। [86]

इस प्रकार इन्दिराजी, ब्रजभाषा के काव्य भण्डार को बढ़ाने में अपना सहयोग देती रही। इन्होंने प्रकृति चित्रण, कृष्णलीला, आधुनिक भावबोध और अनुवाद इन चारों पर बहुत ही मधुर छन्द, अलकांर युक्त रचनाएँ रची है। विशेषकर ब्रजभाषा में काव्यानुवाद कर इन्होंने ब्रजकाव्य साहित्य कोश की वृद्धि की है।

16. श्री वरुण चतुर्वेदी

श्री वरुण चतुर्वेदी जी का जन्म 16 जनवरी 1951 को भरतपुर में हुआ।इन के पिता श्री जयशंकर प्रसाद चुतर्वेदी और माता श्रीमती सरस्वती देवी है। इन्होंने

अपने पिता श्री जय शंकर प्रसाद चतुर्वेदी जी को ही अपना काव्य गुरु माना है। इन्होंने एम. ए. तक शिक्षा ग्रहण की और सिमको बेगन फैक्ट्री में अधिकारी के रुप में कार्यरत हैं। ये एक हास्य व्यंग्यकार कवि के रुप में पहचाने जाते हैं। इनको बचपन से ही कविता की और रुझान था सन् 1965 में जब ग्यारहवीं कक्षा में थे तब से कविता लिखना शुरु किया। इन के पिता खुद एक कवि थे। जिस से इन के घर का माहौंल काव्य में रचा बसा था इन्होंने विधिवत् कविता 29-1-68 को लिखी। सन् 1980 से आकाशवाणी में 8-2-80 को पहली रचना 'गीतन भरी सांझ' मथुरा से प्रसारित की गई। इसके अलावा आकाशवाणी जयपुर, दिल्ली, आगरा, जोधपुर, बीकानेर और दूरदर्शन दिल्ली पर इन की कविताएँ प्रस्तुत की गई। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में भी लेख लिखें।

वरुण जी ने समस्यापूर्ति पर लिखा जैसे समस्या लाल है, 'लपटी (कुडली) दहेज, प्रौढ़ शिक्षा, नशाबन्दी, समस्या पूर्ति के अलावा इन्होंने 'परौडी' भी लिखना शुरु की जो लोगों को बहुत पसंद आई इन की सबसे पहली परौड़ी है

''औ भैया दौड़कर आओ मोय मच्छर ने काटो है।
तुरत एक डाक्टर लाजो मोय मच्छर ने काटो है।
लगायो डंक मच्छर नै तभी याद आ गई नानी।
उठौ मै चौक कै चीखौ अरे लाओ कोऊ पानी।
सहारौ मोकू दै जाओ, मोय मच्छर ने काटो है।''[87]

इन्होंने ब्रजभाषा में भी परौडी लिखी है जैसे 'बीबी के बेलन की आरती' इसके अलावा कुछ गीत कुर्णलिया और लोकगीत भी लिखे जिसके उदाहरण इस प्रकार है।

'जूते में गुन बहुत है सदा राखिये पांव।
इन्हे पहनकर जाइये, शहर नगर या गांव।
शहर, नगर या गांव पड़ा हो चाहे कांटा।
कानपुर देशी हो चाहे होवे बाटा
घोर ग्रीष्म या शीत चलौ इनके बलबूते।
गर कोई लड़ पड़े, लगाओ कस कर जूते॥'[88]

इन्होंने परम्परागत गीतो के साथ सामाजिक बुराईयों पर भी गीत लिखे। 'भारत ज्ञान विज्ञान जत्था' भरतपुर की ओर से छपी पौथी 'अलख जगाये आखर' में वरुण जी का गीत 'हाट कूँ जइयो देवरिया' राष्ट्रीय साक्षरता आन्दोलन के दिनो में गावं-गावं में गाया जाता रहा है। इन को गीतो का राजकुमार भी कहाँ जाता है।

इन की ब्रज रचना माधुरी रचना ब्रजभाषा में रची गई हैं। जिसके अन्तर्गत इन्होंने सवैया-सरिता, कवित्त कुसुमांजलि, गीत-मजरी में नेतागीरी कौ चक्कर, कँपकँपी समय बड़ौ बलवान, तिरंगा, ब्रज कौ आनंद, कलयुगी नौतौ अरदास एक गंजे की, अरदास घने केस बारे की, सद्भाव गीत, तुलसी कौ मानस, हमारौ देस, किसान, खेत, पैसा, परिवार कल्यान, जनमाठे पै, प्यासी धरती करै पुकार, बात माटी की, बाबुल के नाम पाती, जो पढ़े सो बढ़े, कहानी कलम की, महाकवि सूरदास, किसान, लोकगीत, धरती मैया, जब से पिए गए विदेश जैसे विषयों पर रचनाएँ रची। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

बरसै पानी घनघोर घटा कारी कारी
लै लियौ विष्णु नै जनम बिरज में धूम भारी॥
सुसी मनाई दसहुं दिसन नै नाच रहे दिक्पाल।
सुरंग लोक में नचें देवता दै दै ठुमका ताल॥
सुरिन्दर बलिहारी। लै लियौ.... ॥[89]

* * *

हमकूं अ आ इ ई की किताब लै अरयौ देबिरिया।
लइयौ देबरिया हाट लै जइयौ देबरिया॥
घर सौ कोऊ पाती आवै हम पै पढ़ी न जाय।
काऊ और ते जो पढ़वाउ सबइ भेद खुल जाय॥
हमे पढ़ाइकै घर की लाज बचइयाँ देबरिया।
हमकूं अ आ इ ई... ॥ [90]

17. श्री राम बाबू शुक्ल

श्री राम बाबू शुक्ल जी का जन्म 28 दिसम्बर 1936 को भरतपुर में हुआ। इन के पिता श्री सूरज भान शर्मा और माता श्रीमती चिरोंजी देवी है। इन्होंने एम. ए.

(हिन्दी) बी.एड तक अध्ययन प्राप्त किया और अध्यापन में कार्यरत हैं। इन को कवि सम्मेंलन रस दरबार, कवि चम्पालाल जी मंजुल, कवि गिर्राज प्रसाद जी जैसे मित्रों से कविता लिखने की प्रेरणा मिली। इन्होंने नई कविता और ब्रजभाषा में गीत भी लिखे हैं। ब्रजभाषा मिश्रित हिन्दी खड़ी बोली का इनका सबसे पहला छदं सन् अस्सी में श्री हरीश भादानी की प्रेरणा से लिखा।

'मन की आँखे देखौ जरा उधार के

उनकी पलकों में भी सपने प्यार के' [91]

इसके अलावा ब्रजभाषा की मुक्त छन्द की एक नयी कविता 'पावस छियासी' शीर्षक से लिखी, समाजिक विषमता, भ्रष्टाचार, मँहगाई, गरीबी, बरखा के आभाव और जन-जन के जीवन की करुणा जैसे काव्य के विषयों पर अपनी कलम चलाई। इन का सबसे पहले गीत के बोंल है -

'मन की आँखे देखो जरा उदार के, उनकी आँको में भी सपने प्यार के'

इसके अलावा गद्य के क्षेत्र में भी इन्होंने अपना योगदान दिया। इन की दो कहानियाँ, और कविवर गिर्राज मिश्र का व्यक्तित्व और कृतित्व ब्रज-शत दल में छपा।

इन्होंने ब्रज रचना माधुरी की रचना की जिसके अन्तगर्त बिखर गई वह मृदु मुस्कान, 24कुण्डलियाँ, 5 कवित्त, पद, 3 गीत, ब्रज माहिमा, लोकगीत, 6 सवैया, पावस छियांसी जैसे विषयों का समावेश कर ब्रजभाषा का मधुर काव्य रचा है।

गद्य में 'ब्रजभाषा' गद्य विकास की चिन्ता, कवि गिरिराज मित्र का कृतित्व लाल कौर जैसे शीर्षको के साथ अपना कलम का जादू दिखाया। जिसके कुछ उदाहरण है।

पीरी सरसो
भयी सुनहरी
लाज-सरम ते
झुकि-झुकि जावै। [92]

***

घेरि लई नंद लाल, ग्वालिनियाँ भोरी।
केसरिया रंग डारि खेलगयौ होरी। [93]

इस तरह कवि रामबाबू शुक्ल जी ने ब्रज के आंचल की हरएक जीवन को एक नय रंग रुप के साथ प्रस्तुत किया ग्रामाचल रहन सहन, समाज में व्याप्त बुराईयों का वर्णन अपने काव्य में ब्रजभाषा में बहुत ही अनूठे ढ़ंग से प्रस्तुत किया है।

18. श्री माधौप्रसाद 'माधव'

श्री माधौ प्रसाद माधव जी का जन्म 14 जनवरी 1921 में लखनपुर तहसील नदबई, भरतपुर में हुआ। इन के पिता श्री पं. नन्दलाल शर्मा और माता श्रीमती सरस्वती देवी है। इन्होंने अपना काव्य गुरु श्री कुल शेखर जी को माना है। इन्होंने बी.ए. व्यायाम विशारद तक शिक्षा ग्रहण की हैं। इन की सबसे पहले लिखी गई इस प्रकार है।

'सुन्यौ होगौ जोधा रनधार वह बांकौ वीर,
जाने एक दिन दीठ दिल्ली पर डारी हैं।'

* * *

सुन्दर सलौनी यह भूमि सू वीरन की
छोटी सी नगरी भरतपुर हमारी है। [94]

'माधव' जी वीर रस के कवि माने जाते हैं। इन्होंने अधिकतर वीर रस में लिखा हैं। इन्होंने अपने काव्य के द्वारा जगरुकता का सदेंश लोगो तक पहुचाने की कोशिश की, इसके अलावा वर्गभेद राजनीति, चुनाव, भ्रष्टाचार, गरीबी, मँहगाई जैसे मुर्दो पर भी कलम चलाई। साथ ही वह ब्रज की परम्परागत विषय राधाकृष्ण की रस भरी लीलाओं, बसन्त की तस्वीरों को अपने काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। इन्होंने राजस्थान 'कलजुग' सहीदी दिवस, तरुण रक्त की पुकार जैसी कविताओ में वीर रस की खूब सुन्दर रचनाएँ रची। साथ ही 'संवत्सर की बंधायी'में प्रकृति के संग जीवन की पीर को प्रस्तुत किया। वीर रस के साथ इन्होंने व्यंग्य हास्य को भी अपने काव्य में प्रस्तुत किया।

इन्होंने ब्रज रचना माधुरी की रचना की जिसके अन्तर्गत कवि की अभिलाषा, कवि और कविता, कवि नगरी परिचय, उधौ सौ गोपीन कौ कहनौ, राधा कौ उधौ सौ कहनो, यौवन कौ आगमन, राधा छवि, अगंद के समझायबे पैरावन ने कहा कही, हनुमान, हमारे देस कौ होरी कौ विधान, षटपदी, बेरोजगारी, बसंत की, नेतान को

आगमन, इन्द्रा गांधी, द्रौपदी, समय को फेर, मिथ्या अभिमान, कलम कहे कान में, बिजारन की भिड़त, ढ़ीले कपडन चा, टी.वी. हनुमान वन्दना, प्रकृति कौ निस्वार्थ, पावस, कुन्डली, जन सक्ति, मुग्धा, सामाजिक कार्य-सेवा, नश्वर जीवन ताऊ पै अभियान, माटी के कौतुक, गिरिराज की सोभा, ब्रजभूमि की महिमा, अजय दुर्ग लोहागढ़ की कहानी वाइ की जुबानी, कलजुग, राजस्थान, भष्ट्राचार कौ ऐलान, आजादी के दीवानेन की कहानी, नश्वर जीवन पै मिथ्या भिमान, विषय लेखनी, जैसे शीर्षको विषयों पर माधौन जी ने बहुत ही अनुठा लिखा है। जिस से ब्रजभाषा काव्य का माधुर्य और भी मधुर प्रतीत होता है। इस लिए इन्हें ब्रजकाव्य के सनेही जन भरतपुर के भूसन की उपादि दी है इन को राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर, हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर, जिला पुस्तकालय भरतपुर द्वारा सम्मानित भी किया गया हैं। इन की ब्रज-रचना माधुरी के कुछ उदाहरण है।

हल गई लंका औ दहल गयौ लंकापति,
चहल पहल गाई महल अटान की।
सागर अथाह थम्यौ रक्त को प्रवाह जम्यौ,
विकल भई सेना समूची यातु थान की॥
अशुर समूह कांप ठांडे ते पछारै खात,
धारे मार वरवस देत बलि प्रान की।
धसन लगी धरनी खसन पहार लगे
सुनते ही भीषन हुकार हनुमान की॥ [95]

* * *

हम आजादी के मतवारे
जीवन ते मोह नांहि हमकूं।
कितनौ बल पौरुष है हममें
कई बार दिखायौ है तुमकुं। [96]

इस प्रकार माधव जी ने अपने काव्यों में वीर रस और व्यंग्य को प्रस्तुत करके लोगों को अपनी प्रतिभा से अवगत कराया, साथ ही ब्रजभाषा में दोहा, सवैया, छन्द का सुन्दर प्रयोंग कर काव्य को मधुर बनाया।

19. श्री रमेशचन्द्र चतुर्वेदी

श्री रमेश चन्द्र चतुर्वेदी जी का जन्म श्रावण कृष्ण तीज विक्रम सवंत् 1986 में सांतरुक तहसील कुम्हेर, भरतपुर में हुआ। इन के पिता का नाम श्री नवनीत लाल चातुर्वेदी और माता श्रीमती चन्द्रकान्ता देवी हैं। इन्होंने श्री पीतमदत्त चतुर्वेदी चच्चन को अपना काव्य गुरु माना हैं। इन्टर, साहित्यरत्न आयुर्वेद रत्न तक शिक्षा ग्रहण कर अध्यापक के रुप में राज्यसेवा में कार्यरत है। इन के घर का वातावरण संगीत में रचा बसा था इसलिए इन्हें बचपन से ही संगीत और काव्य के क्षेत्र में रुचि रही। इन्होंने कक्षा एक में ही आत्मा परिचय के रुप में आल्हा की दस पंक्ति रच दी जो कुछ इस प्रकार है।

नाम रमेश चन्द्र गांव साँतरुक, पिताजी कहियै नवनीतलाल
बाबा श्री नवल किसोर जी जिनके दरसन ते मै भयौ निहाला॥ [97]

फिर कक्षा तीन तक इन्होंने रसिया, आल्हा, ढ़ोला राझां लिखने लगे फिर 1939में दूसरे महायुद्ध के अवसर पर एक रसिया फौज में भरती के ऊपर लिखा। इसके बाद सन् 1948 में जस संघ के अध्यक्ष पीताम्बर दास और अटल बिहारी वाजपेयी, प्रो. बलराज मधोक, कँवरलाल गुप्त, बसन्तराव आक और परम पूज्य गुरुजी श्री गोलबलकर जी के सम्पर्क में आए और इन के जीवन, विचारधारा और काव्य रचना पर व्यापक प्रभाव पड़ा और इन्होंने राष्ट्रीय कविता फुटकर के रुप में लिखी।

इन की सबसे पहली हस्तलिखित पत्रिका 'लालिमा' प्रकाशित हुई। जिसका सम्पादन जगमोहन लाल माथुर और चन्द्रभान भारद्वाज ने भरतपुर से किया। इसके अलावा चौरासी खम्बा, नव निमार्ण, मथुरा से प्रकाशित ब्रजवाणी, जयपुर से प्रकाशित लोक शिक्षण दिल्ली से प्रकाशित चतुर्वेदी सन्देश, आंगरा से प्रकाशित दैनिक अमर उजाला और सैनिक पत्रों में कवि की कविता छपी। 1955 में बाराहमासी छन्द में ब्रजभाषा में पहली पचंवर्षीय योजना के साठ छन्द माँहि पद्यानुवाद लघुरुप में छपा। इसके अलावा कवि सम्मेलनो में प्रोत्साहन, पत्र पत्रिकाओं का सहयोग, आकाशवाणी पर कविता प्रसारण, घर का संगीतमय वातावरण, अध्यापन का व्यवसाय आदि ने श्री रमेश चन्द्र चतुर्वेदी जी को एक मधुर कवि के रुप में प्रस्तुत किया। इन के प्रकाशित ग्रन्थ हैं। अखिल भारतीय पंचवर्षीय योजना का पद्यानुवाद बारहमासी पत्र-पत्रिकाओं

में कविता है। इन की ब्रज रचना माधुरी उत्तम कृतियों में से एक है जिसके अन्तर्गत मगंलाचरण, कुण्डली, कवित्त, भारत की प्रधान आवश्यकता पर कवित्त, चतुष्पदी दोहा, कुण्डली लिखी ब्रजभाषा महिमा कवित्त, कुण्डली सांस्कृतिक रचना कुण्डली में टोपी कुर्ता, राष्ट्रीय गीत, कवित्त, ऋतु वर्णन, गीता महातम पर लिखा, गोकुल गमन में गीत, सवैया में नाममहिमा, गीत, स्याम सौरभ, बासुरी वैभव, लिलहारी, कवित्त, चोरी, जगन्यारी, ऋतुवर्णन बसन्त शृंगार रस, हास्य कवि सो, जैसे विषयों पर चतुर्वेदी जी ने बहुत ही मधुर सुन्दर लिखा है। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

अष्ट छाप सौ सजीली रास रंग सौ रंगीली
रस भरी सी रसीली सुधा सिन्धु सिन्धु सी बिलौनी है
भाव भर पूरी औ सुभाव सौ सुनूरी सदा
सांवरे की साँवरी सी सूरत खिलौनी है।।
देखिवे में दाख सी सुपेरिबे में पाख सी,
श्री साँवरे की आंखि सी सुहावनी सलौनी है।
ऐसी मिठलौनी काहू भाषा में न देखि परे
जेसी ब्रजभाषा बीच देखी मिठलोनी है।। [98]

*** * ***

सोहनी मूरति साँवरे की ए
तो मोहनि मूरति राधिका गोरी
सुख सागर नन्द किशोर जू हैं
गुन आगर है बृसभानु किसोरी।।
कह लौ बखान करौ गुन रुप कौ
कैसी बनी हरि राधिका जोंरी
ले गई मन मोहन कौ मन चोरी।। [99]

20. पं. रमेश चन्द्र भट्ट 'चन्देश'

पं. रमेश चन्द्र भट्ट 'चन्देश' का जन्म श्रावण 24 अप्रैल 1939 को नीमघाट मौहल्ला डीग भरतपुर में हुआ। इन के पिता श्री बालमुकुन्द भट्ट और माता स्व. श्रीमती सरस्वती देवी है। इन्होंने एम. ए. साहित्य रत्न तक शिक्षा ग्रहण की और हिन्दी सस्कृत

के अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। इन्होंने सब से पहली कविता सन् 1956 में गुरु निहाल सिंह जी के मार्गदर्शन पर चलकर 'उद्योग तिहाँरौ अभिनन्दन' शीर्षक पर लिखा जिस की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है।

उद्यौग तिहारौ अभिनन्द।
शतृशत बार करे बन्दन॥
तेरे कारन सौं किसान कूं कहबै जगत अन्नदाता।
तेरे कारन सौं कुम्हार हू बनो प्रजापति सुखदाता॥
तैनै भूख बुझाई तन की मन की प्यास मिटाई है।
नंगे बदन ढ़के सब तैनै तकली इहाँ चलाई है॥
तेरे कारन बने मरूस्थल आज यहाँ पै।
नन्दनवन उद्योग तिहाँरौ अभिनन्दन॥[100]

इन्होंने गद्य-पद्य दोनो क्षेत्रों में अपनी कलम का जादू दिखाया। इन्होंने पद्य के क्षेत्र में छंदबद्ध कविता के संगसंग आज के चलन की छदं मुक्त रचना खूब लिखी हैं। इन्होंने राधा कृष्ण के अनुराग भाव, रितुवर्णन, ब्रज के पर्वोत्सव और तीर्थो को अपनी कविता का विषय बनाया साथ ही वर्तमान समस्याओं कुण्ठा, शोषण, पारस्परिक विद्रेश, अपाधापी, और सरकार के प्रति विरोध जैसे विषयों को भी अपने काव्य का विषय बनाया। इनकी रचना को मोटे तौर पर चार भागो में बाँटा गया है। पहली बाल उपयोगी रचना और व्यंग्य विनोद, दूसरी भक्ति, पर्वोत्सव और तीर्थ महात्म्य की रचना, तीसरी समाज सुधार और देश प्रेम की रचना और चौथी आधुनिक भावबोध की छंद मुक्त रचनाएँ।

पद्य के साथ-साथ 'चन्देश' जी ने गद्य के क्षेत्र में भी खूब रचनांए रची। इन्होंने रेखाचित्र, ललित निबंध, विनोद संस्मरण, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि विधा पर अपनी कलम चलाई। इन्होंने गद्य के रेडियो कार्यक्रम ब्रज में प्रसारित किए जिस में विनोद वार्ता के रूप में ललित निबंध बोधकथा अनेक सामाजिक समस्या को रेखाकित करती कहानी, रेडियो रूपक, लघुनाटक, रेखाचित्र लिखें। इन्होंने ब्रज भाषा में 'लाग्यौ रे बिन्दावन नीकौ' नामक उपन्यास लिखा है। इसके अलावा 'लिलार कौ लिखौ नाय मिटै, पंचूकाका, चौधरी ठनठनपाल, मास्टर लाल बुझक्कड़ भाँदूराम शास्त्री,

डॉ. चमचादास बाटलोई, बाबू चवन्नी प्रसाद खटमलिया, लाला झरपट नाथ वर्मा, पत्नीदास पांडेय, चुगलीचन्द, महारथी गप्पीलाल, पालिस वाला, मिस्टर बगडानन्द इनके प्रसिद्ध रेखाचित्र है।'

इनकी जाकै पैर ना फटी बिवाई बू का जानै पीर पराई, तीन चमत्कार, बिल्ली मौसी की तीरथ यात्रा, गूलर बाना फूलन कौ हार, माना न मान देऔ ना तीन वरदान, चार खूंटे बदले का बदला, अकल की दुकान, नेकी कर कुए मे डाल, काम प्यारी है चाम प्यारौ नाय, जैसौ कर बैसौ भर, दहेज के आँसू, जोगी अरु दुनिया, आदि इनकी प्रसिद्ध लोक कथाएं है।

पत्र-पत्रिकाओं में भी इनका सहयोग रहा वैंकटेश समाचार बम्बई, दैनिक हिन्दुस्तान, ब्राह्मण गौरव, लोकशिक्षक, कादम्बनी जैसी पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई।

इन के पिता एक स्वतंत्रा सेनानी थे जिस का इन पर बहुत अधिक प्रभाव रहा इन की रचनाओं में गांधीवादी विचारधारा की झलक दिखाई देती है।

इनकी मथुरा-वृन्दावन आकाशवाणी से पहला ब्रज काव्य पाठ कार्यक्रम दिनांक 20-5-73 को 'मेरौ दर्द न जानै कोय' शीर्षक गीत से प्रारम्भ हुआ इसके पश्चात् रेखाचित्र लोक कथा और कहानी का प्रसारण होता रहा इन की लोकप्रिय रचना है।

1. लाला झरपट नाथ वर्मा (रेखाचित्र) मथुरा 14-1-74
2. बाबू चवन्नी प्रसाद (रेखाचित्र) मथुरा 8-11-74
3. मानो न मानों देऔ तीन वरदान (लोक कथा) मथुरा 21-9-80
4. दया करौ दुआ लेऔ (लोक कथा) मथुरा 15-1-89
5. लच्छो ताऊ की कहानी (कहानी) दिल्ली 24-5-90

इसके अलावा बाल कार्यक्रम आकाशवाणी मथुरा से प्रसारित होते रहे।

- संगीत रुपक- विजय दशमी 3-10-76
- कवि के मुख सौ- (कविता पाठ) गणतन्त्र दिवस के सन्दर्भ में दि. 25-1-77
- काव्य पाठ-आकाशवाणी-जयपुर दि. 21-7-78
- अष्टयाम के कीर्तनकार -चतुर्भुज दास वार्ता मथुरा 27-1-79

- संखन बजैगौ तो वरषा ना होय (लोक कथा) मथुरा 23-3-80
- तीरथ पुरानौ अपनौ बरसानौ (लोक कथा) मथुरा दिनांक 21-6-80
- कराऔ गंगा स्नान (लोक कथा) मथुरा दि. 27-12-81
- टेसूराम (संगति रूपक) मथुरा दि. 13-8-83
- बरखा रानी (संगीत रुपक) मथुरा 10-8-86
- लल्लू लाला की तीरथ यात्रा (लोक कथा) मथुरा दि. 15-1-89
- प्यारौ नायं चाम काम प्यारौ है (लोक कथा) मथुरा दि. 26-3-89

इसके साथ ही आकाशवाणी दिल्ली से ब्रजभाषा कहानी 6-7-90 ब्रजमाधुरी कार्यक्रम में प्रसारित हो चुकी है।

इन की ब्रजभाषा और खड़ीबोली दोनो भाषा में गद्य-पद्य रचनाएँ प्रकाशित हुई है।

- दीवाली लाल निशान भरतपुर दि. 3-11-69
- दीप जलाओ- वीर जनता भरतपुर दि. 11-11-69
- मुक्तक हिन्दी-युवक का पत्र आगरा दि. 4-6-69
- भूखी धरती - श्री वेकटेश्वर समाचार पत्र बम्बई 19-9-70

ब्रजभाषा में लोक शिक्षक जयपुर, कचंन लता खेतड़ी नगर (झुन्झुन) और ब्रज दर्पण मथुरा से प्रकाशित हुई है।

इसके अलावा इन के प्रकाशित ग्रन्थ है। मुक्त हरिका (काव्य), हिन्दी रहस्य-चन्द्रिका (काव्य व्याकरण) प्रकाश की प्रतिक्षा, उपन्यास-भूख, दुखिया का लाल, बा. उप अतंरिक्ष की यात्रा, दुर्ग संकीर्तन, लठावन महातम्य इन की रचना 'ब्रज रचना माधुरी' उत्तम रचनाओं में से एक हैं जिसके अन्तर्गत कवित्त सरिता में हिन्दी अरु ब्रजभाषा, डीग, जय-जय ब्रजधाम की, गुदरी के हीरे है। तुलसी, सूपत हुलासी कौ ए, हनुमान जयन्ती, रामनवमी, परशुराम जयन्ति, गिरि गोवरधन, बसंत, बरसाने आज होरी है, उजियारी है, दिवाली है, हास्य परिहास, पत्नी और दाढ़ी सवांद, पत्नी का सुझाव, देश दुर्दशा, स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. राधाकृष्णन, डॉ. जाकिर हुसैन, बाल गंगाधर तिलक, स्व. श्री गोपालकृष्ण गोखले, स्वाधीनता दिवस, हिंद में सदा बनौ रहै (आकाशवाणी जयपुर) दोहावली में ईश भक्ति पर 10 दोहे, स्वभाव परक पर 10

दोहे, पाखण्ड विघटन परम पर 8 दोहे, समाज परक पर 29 दोहे, नीति परक 10 दोहे, अन्योक्ति परक 4 दोहे, कुण्डली सरोवर, गंगा के पंडा, पइसा मैय्या बाप, रोटी, जय जंवाई, आज कौ समै, गीत जय जय ब्रजभूमि, सूनौ री मेरो ब्रजवानी कौ गान, मेरे अगन में आये नन्दलाल, गीत-मेरे भारत कू मत तोरौ, गीत मल्हार पद-बोलो कृष्ण बोलो राम, पद-तू क्यो हो गयौ आंतकवादी, पद-राम ते कहियो जाई रे, मेरौ जीवन भूल, भुलैया, पद-भज मन राम चरण अर्जेण्ट, पद-मैने देखौ जगत बटुआ, उड़ चल रे हंसा, ब्रजमासा गजल , होरी में कन्हैया छक्का में राजनीति हांसीके, डिस्को का सिंगार, आरक्षण को नतीजा, नई पीढ़ी की इच्छा, जीजा साली वार्ता, चटपटे ढड़ या, आधुनिक भावबोध में परस, भोर की तलास, जैसे विषयों का समावेश कर ब्रजभाषा में अनुठा काव्य रचा है। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

दोहा

ईश्वर भक्ति बाज सम, काम क्रोध सग खाय।
लोभ छांड चन्द्रेश अब, भव सागर तर जाय।। [101]

गीत

जय जय ब्रजभूमि जय जय ब्रज भूमि।।
बोलो राधे राधे कृष्ण वन मोरा मन झूमी।।
जय.......
सुबह सबेरे उठकै ग्वालिन गोरस लैके आमै।
नेह भरै नैनन बैनन ते मधु रसऊ पिलवायै।।
जमुना कीलहरें लहरावैं मोरन कूक सुहावै।
ब्रज ग्वाला ई न्द कौ लाला तानै ब्रज रज चूमी।।
जय...... [102]

पद –

मानव रे ! तू काहे हो गयौ आतंकवादी
...
...
प्रभु मेरे चन्देश बचाजा, धरम सनातन सतवादी

मानव रे ! तू काहे हो गयो आतंकवादी ।। [103]

ब्रज रचना माधुरी में पद्य के साथ-साथ गद्य की रचनाएँ भी है। जैसे ब्रज कहानी लच्छो ताऊ, पालिस बाला (रेखाचित्र) गय्या कब ब्यावेगी (ब्रजभाषा ललित निबंध) इस प्रकार चन्द्रेश जी ने ब्रजभाषा साहित्य में अपना अमूल्य योगदान दिया।

21. श्री बालकृष्ण थोलम्बिया

श्री बालकृष्ण थोलम्बिया जी का जन्म 1905 कार्तिक कृष्ण मावस सम्वत 1962 को 23/236 सराय कायस्थान कोटा में हुआ। इन के पिता श्री मन्नालाल जी और माता श्रीमती नारायण देवी हैं। इन्होंने पं. बनवारी लाल चतुर्वेदी जी को अपना काव्य गुरु माना है। इन्होंने सम् 1926 में सर्वप्रथम इस छन्द की रचना की।

बरसे बधु निर्मल प्रीति करै नर हू जो नही सपने परसै

..

..

दर सै उनई बस प्रेम घटा घन आनन्द को दिसि चौ बरसै ।। [104]

इन्होंने अपने काव्य में राधा-कृष्ण सम्बन्धी रचना रची जिसमें राधा की रहस्यात्मक भूमिका, जैसे विषयों के साथ-साथ मातृभूमि, आपातकाल, भारत छोड़ो आंदोलन, किसान, राष्ट्रभाषा, भारतीय संस्कृति में नारी सम्मान, कौमी एकता, नवयुवक प्रकृति का मानवीकरण जैसे विषयों का समावेशकर अपने काव्य को ब्रजभाषा से अलंकृत कर थोलम्बिया जी ने उच्च कोटि के काव्य की रचना की। इन को अनेक संस्थानों के द्वारा सम्मानित किया गया। जिसके उदाहरण इस प्रकार है, भारतेन्दु समिति (1970) जिला प्रशासन (1975) अखिल भारतीय साहित्य परिषद, कोटा, जिला परिषद (15 अगस्त 1977) नगर विकास न्यास (20-12-77) हाडौती इतिहँास एवं शोध संस्थान (गुरु पूर्णिमा 2036) अखिल भारतीय टाँक क्षत्रिय महासभा (1988) ज्ञानभाती (1988) शिक्षकसंघ (1985) राष्ट्र भाषा प्रचार समिति कोटा।

इन्होंने ब्रजभाषा में पद्य और गद्य दोनो क्षेत्रो में अपने कलम का जादू दिखाया इन के लेख पत्र पत्रिकाओं में छपते रहे जो कुछ इस प्रकार है। सेवा, चाँद (प्रयाग) शिक्षा भास्कर (बनारस) भारतेन्दु (पटना), कल्पवृक्ष (उज्जैन) कैलाश (जयपुर)

विठ्ठल सागर, जयपुर, जागती जोत (बीकानेर), मातृभूमि (झांसी) दिव्य सदेंश नान्दीमुख चम्बल चामल, चिदम्बरा, जागृति, हाडौंती वाणी, लोक सेवक, एकात्म (कोटा)

इनके शोध प्रबन्ध इस प्रकार हैं नवल कुतुबुद्दीन की रस कथा (जागती जोत) नन्द पचीसी, हाडौती पंचतन्त्र (चिदम्बरा) भूले विसरे (लेखमाला) चारणी गीतो में राष्ट्रीयता का मूल, हाड़ौती अचंल की सांस्कृतिक विरासत (आकाशवाणी) कुछ कहानिया हारजीत, तुम्हारा देवता सच्चा है, जनता जनार्दन, मसीहा गरीबों का।

इन के प्रकाशित ग्रन्थ हैं संत-नामदेव और उनके उपदेश, मन भाविनी इन्होंने ब्रजरचना माधुरी की रचना की जिसके अन्तर्गत मेरो गाम, ब्रज विभव, पाती, नागरी-नगरी, इन्दु और भारतेन्दु, मैथलिशरण के प्रति, तुलसी, बिंदिया यह भारती भालकी है , बसन्त, अन्तक बसन्त, शरद, सौहन की परतीत गयी, कली अरु भ्रमर, शृंगार, होरी, पंजाब, प्रसंग, सूक्ति, दीपक, आधुनिक, काटन पै चलती स्वतंत्रता या आई है, विविध समस्या पूर्तिया, अन्योक्तियाँ में रसाल काँटे सरिता, सर, साम्प्रदायिकता पै एकतीखा प्रहार, रामायण की एक परिणति (खड़ी बोली), चिकोटियाँ, नव किसान, मंत्रीमंडल विस्तार, कोमी एकता, ब्रज विलास, बिना मात्रा का दोहा, नेता, दलबदल, हिन्दी आरक्षण, सुमुखी, सूर के पद मै नाही माखन खायौ की छाया पर पैरोड़ी, गीत, भारतेन्दु चन्द्रिका, ऋतुराज ते, कारे धन भाग्यशाली घट, अयोध्या प्रसंग, दो समस्या पूर्तियाँ, कुछ दोहे और एक छन्द मुक्त रचना इन शीर्षको के साथ अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

दोहे :

अन्तर्गत जीवन सरस खीचिं निकट ले आय।
गुनवन्ती वाणी वधू गगरी ताप नसाय।। [105]

आरक्षण:

वर्ग भेद को मानते जब सब विधि अभिशाप।
फिर क्यो ढ़ोते जा रहै, आरक्षण की पाप।। [106]

छन्द मुक्त रचना :

मेरे घरकै सामु है

हवेली ली खिरकी ते

....

....

हवेली की खिरकी ते झांक पातो। [107]

इस तरह थम्बोलिय जी ने ब्रजभाषा में उच्च कोटी के काव्य को रच कर ब्रजभाषा को आगे बढ़ाने प्रचार में अपना योगदान दिया।

22. श्री रामबाबू रघुराय

श्री रामबाबू रघुराय जी का जन्म ललाम भरतपुर में हुआ। इन के पिता श्री शिवचरणलाल और माता श्रीमती श्याम देवी है। श्री कुलशेखर को इन्होंने अपना काव्य गुरु माना है। हिंदी मिडल, साहित्य भूषण तक शिक्षा ग्रहण की है।

इन्होंने अपने गुरु के आदेश से सर्वप्रथम गणेश वन्दना और शारदा वन्दना की रचना सन् 50 के आसपास की जो इस प्रकार है।

दोहा :

सिन्दुर वदन सुहात है, गज मुँख राजत चंद।
विद्या बुद्धि भंडार सब, रघु के काटत फदं॥ [108]

शारदा वंदना (अनंग सेखर छंद) :

स्वरूप सुभ्र सोभित महान मूर्ति मोहितं,
प्रसन्न चित्त पकंज पदाम्बुज सुभ करं।
अनंत बुद्धि दीजिये कृपा कटाक्ष कीजिए,
अराति नष्ट भक्त के कृपलिकं अभर वर।
युगक्कर वरद् घरै करोति नास सोचन,
सुहंस वाहन विराज वीन पुस्तकद्धर।
गुनग्गर पगप्पर मुनीष सीस नावतं
मनावत सु भारती नमामि मात हो कर। [109]

श्री रामबाबू रघुराय रीतिकालिन परम्परा के कवियों की श्रेणी में आते हैं इन के काव्य में नायिका भेद और नख शिख वर्णन विशेष रुप से देखे जा सकते हैं इन की भक्ति भावना भी रीतिकाल के रंग में रंगी हुई हैं इन की अभिव्यक्ति में रसात्मकता

का बोध होता है। इन्होंने श्रृंगार के साथ-साथ वीर रस में भी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं इन की डिग्ल मिश्रत ब्रजभाषा है। इन के दोहा (पयोघर, मृदुकुल, गयन्द, नर), विमल ध्वनि, इन्द्रबजा, घनाश्ररी (मनहर) सवैया (दुर्मिल, चँन्द्रकला मत गयन्द) छप्पय, सिंहवलोकन आदि छन्दों को प्रयोग सफलतापूर्वक किया है।

इन के प्रकाशित ग्रन्थ हैं स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ (कवि कुसुमाजली), लोहागढ़ ललकार में स्फुट छंद छपे हैं इन्होंने ब्रज रचना माधुरी की रचना की जिसके अन्तगर्त गणपति वंदना, कवि परिचय व जन्म, गणपति वंदना छंद अमृत ध्वनि, छदं विमल ध्वनि, छन्द्र इन्द्र ब्रजा, श्री सारदा अष्टक, छन्द घनाक्षरी में मनहर, माँ भगवती माँ अम्बिका, वीर रस श्री भैरवजी, छन्द अमृत ध्वनि में माँ काली, छन्द सवैया चन्द्रकला (दुर्मिल) में मां अम्बे, दीपावली वर्नन-घनाक्षरी-छंद घनाक्षरी, श्री राधारानी, कुण्डलिया कृष्ण कृष्नाभिसारिका, अभिसारिका नायिका (मनहरया घनाक्षरी) सवैया-दुर्मिल-चन्द्रकला, दोहा, सवैया दुर्मिल, श्री कृष्ण जन्माष्टमी छंद घनाक्षरी-सिंहवलोकन सवैया-दुर्मिल, घनाक्षरी-सिंहावलोकन, सवैया मत्त गयन्द, सवैया-किरीट (सिंहावलोकन) सवैया-मत्रगयन्द, सवैया-दुर्मिल, छन्द घनाक्षरी, गोवर्धनधारन (घनाक्षरी), श्रीकृष्ण (घनाक्षरी) रासमंडल (अमृत ध्वनि), (घनाक्षरी), रुप घनाक्षरी-विरहनी (रुप घनाक्षरी) विप्रलब्धा नायिका (घनाक्षरी) विप्रलब्धा कृष्णाभिसारिका, सवैया मत्रगयन्द विरहनी, छप्पय-कृष्ण कौ नव रस वर्णन, घनाक्षरी गोरौ-गोप प्रतिज्ञा, सवैया-नायक दच्छन, सवैया मुग्धानायिका, सवैया कृष्णभिसारिका प्रौढ़ा-नायिका सवैया (नवोढ़ा रूपकार सयुक्त) घनाक्षरी-अभर सहीद बसंत वर्णन, घनाक्षरी बसंत वर्नन-मुग्धा, घनाक्षरी, घनाक्षरी होरी वर्नन-वचन विदग्धा नायिका, घनाक्षरी-होरी वर्नन राधा जू कौ प्रन, घनाक्षरी-गनगौर पूजा मुग्धा, घनाक्षरी-ग्रीष्म, पावस-कुन्डलिया, अमृत ध्वनि-पावस, घनाक्षरी (विरहनी नायिका) पावस-कष्नाभिसारिका नायिका, पावस उत्कंठा नायिका, पावस-तीज झूला, झूला घनाक्षरी, शृंगार रस यमक, भ्रान्ति, घनाक्षरी सिंगार, घनाक्षरी नेत्र वीर रस घनाक्षरी कुचं वर्णन सिंगार रस, रुप घनाक्षरी, घनाक्षरी, घनाक्षरी विजियाँ, रुप घनाक्षरी, भगड़ी के पेट में हवेली, घनाक्षरी, मानव समाज, कुडलिया, छन्द छप्पय, छन्द घनाक्षरी, भरतपुर (लोहागढ़) छप्पय, कुन्डलिया, छन्द-विमल ध्वनि, छन्द छप्पय राजिस्थान, कुण्डलिया, मनहर घनाक्षरी-हिन्दी को महत्व, छन्द

कुन्डलिया (हिन्दी महत्व) घनाक्षरी हिन्दी महत्व, कुन्डलिया (खादी महत्व) घनाक्षरी (साइकिल) छप्पय (स्वस्ति वाचन) छन्द घनाक्षरी (तिरंगा झंडा) घनाक्षरी (पन्द्रह अगस्त) घनाक्षरी (छव्वीस जनवरी) सवैया मत्तगयन्द (मालती) सवैया (दुर्मिल या चन्द्रकला) नेहरु के प्रति घनाक्षरी (उपराष्ट्रपति श्री राधाकृष्णन) पचंशील रुपी बाँसूरी छंद घनाक्षरी (माला दीपक अलंकार सवैया मत्तगंयद, सवैया दुर्मिल चन्द्रकला, सवैया दुर्मिल, रूप घनाक्षरी, सवैया दुर्मिल, सवैया मत्तगयदं, घनाक्षरी, प्रहेलिका अलंकार सोरठा, दोहा घनाक्षरी, गीत जैसे शीर्षकों के साथ ब्रज रचना माधुरी के माधुर्य को बढ़ाने में रघुराय जी ने कोई कसर नहीं छोड़ी जिनके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

– गणपति वन्दना

> **सिन्दुर वदन सुहावनौ, गज मुख राजत चन्द।**
> **विधा बुद्धि भँडार सब, रघु के काटत पद।** [110]

परिचै :

> **परखत नित रतनन रहे सुवनर कला प्रवीन**
> **रामबाबू 'रघुराय' सु वास भरतपुर कीन॥** [111]

दोहा :

> **बाजी री बाजी कहां, बाजी कहू अपार।**
> **बाजी बाजी कह रही, बाजी नँद के द्वार॥** [112]

इस तरह रघुराय जी ने ब्रजभाषा कवियों में अपना एक अनूठा स्थान बना लिया। इन की रचनाएँ ब्रजभाषा में रची गई उत्तम कोटी की रचनाएँ है।

23. मुन्शी मटोल सिंह

श्री मुन्शी मटोल सिंह जी का जन्म 1 जुलाई 1927 को हुआ। इन के पिता श्री गिरिराज सिंह और माता श्रीमती धर्मा देवी है। श्री रामचन्द्र पटेल धमारी को यह अपना काव्य गुरु मानते है। इन्होंने मैट्रिक, आयुर्वेदाचार्य तक शिक्षा ग्रहण की हैं और खेती, वैधक ढ़ोलागायक के व्यवसाय में कार्यरत है।

इन्होंने अब तक कुल मिलाके 108 छोटी बड़ी पुस्तके लिखी। जिनमें से 82 प्रकाशित हो गई, और 26 अप्रकाशित है। इन्होंने जनसख्या नियंत्रण, देश-प्रेम, दहेज-प्रथा, लोक-अन्ध, विश्वास, छुआछुत, बधुआ मजदूरी जैसे विषयों को अपनी

कविता का विषय बनाया।

इनके काव्य को मोटे रुप में तीन भाग में बाटां जा सकता है।

1. ढ़ोला :- इसके अन्तर्गत ढ़ोला मारु प्रसंगो की रचना की जैसे विवाह, मांझा कौ निकासौ, नल की कथा, मोतिन को ब्याह, फूलसिंह पंजाबी की लड़ाई, दुमैती कौ ब्याह, मंसुख कौ ब्याह, चन्द्र मुकन्द की लड़ाई, गोहित पुर की लड़ाई, नल की औखा, मिही कुमार कौ ब्याह, भमर तालकी लड़ाई, लखिया वन की लड़ाई, इन्द्रजीत कौ ब्याह, ढ़ोला कौ ब्याह, मारु कौ गोनौ, हम्मीर कुमार को ब्याह, किसन लाल कौ ब्याह, रेवा कौ ब्याह, दखनी चीर, चन्द्रपाल कौ ब्याह, बगमगढ़ की लड़ाई, दरवाजे को ढ़ोला, आदि का समावेश प्रथम भाग में है।

2. प्रौराणिक प्रबन्ध काव्य – इस भाग में नरसी भात लीला, निहालदे नर सुल्तान, जीन नगर की लड़ाई, अमर सिंह राठौर, मारु कौ भात, हरिशचन्द्र तारामती, की चक वध जैसी रचनाओं का समावेश होता है।

3. मुक्तक रचनाएँ : इस भाग में इनकी लिखी ह्रास-परिहास की मन गढ़न्त रचनाएँ, इन रचनाओं में गेयता के संग-संग हास्य रस का भी समावेश किया है।

इन्होंने आकाशवाणी दिल्ली, मथुरा, आगरा से अछूतोद्वार, दहेज परिवार नियोजन, पर सहकारिता के प्रचार पर ढ़ोला शैली में 1968 में प्रसारण हुआ।

इन की ढ़ोला, धार्मिक कथानक सामाजिक विषयों पर अब तक 82 पुस्तक छपी है।

इन की ब्रजरचना माधुरी ब्रजभाषा में रचित रचना है। जिसके अन्तर्गत जन्मभूमिपरिचै, एक भरोसो एक बल, एक की बसावै का , समस्या निहारौ, भरमायौ है, नीति की बात, बुढ़ापौ, भजन, हास्य व्यंग्य विनोद में ईसर की भूल, डावाडोल चेला, भगत बकरीदास, दरोगा कौ नौकर, चार चतुर यार, मसखरा नौ बादर फारे, बूरे की विदा, अभिमन्यु वध जैसे शीर्षको का समावेश कर ब्रज रचना माधूरी के माधुर्य को प्रस्तुत किया जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

पर्वत के नीचे बसै, एक घमारी गामं।
नन्दराय कौ धन चरयौ, याते है ई नाम॥[113]

* * *

भले-बुरे किन कूँ कहे, दोऊ एक समान।
भले-बुरे की होत है, कर्मन ते पहचान॥[114]

*** * ***

पैसा बिना भैया है निरधन की ख्वारी॥
इक हौ गरीब निरधन भारी, नित की मजदूरो कर्‌यौ करै।
सिगरे दिन मेहनत खूब करै, संजा कूँ अपनौ पेट भरै॥
जा दिन मजदूरी नांय मिलै, ता दिन वू भूखौ मर्‌यौ करै।
का विधि बस्ती में गुजर करै, ई चिन्ता चित कूं नित आखरै॥
सो उठा बोरिया बिस्तर सब चलबे की कर दई तैयारी॥[115]

श्री मुंशी मटोल सिंह जी, ने ब्रजभाषा में अपना अनूठा योगदान दिया हैं जो सराहनीय है। इन्होंने ब्रज वैभव नाम से ब्रज की संस्कृति और पौराणिक ठिकानो का विशाद वर्णन तैयार करने में सलंग्न रहे। 3 जुलाई 1991 को इनका निधन हो गया हमने ब्रजभाषा के रत्न को खो दिया। किन्तु इनकी रचनाओं से आज भी यह हमें याद हैं और हमारे बीच है।

24. श्री नत्थूलाल चतुर्वेदी

श्री नत्थूलाल चतुर्वेदी जी, का जन्म 11 मार्च 1911 को सिकन्दर पुर खास तहसील कायम गन्ज, जिला फतहगढ़ में हुआ। इन के पिता श्री बह्मस्वरूप चतुर्वेदी और माता श्रीमती गोपादेवीजी है, इन्होंने श्री मधुसूदन जी को अपना काव्य गुरु माना है। मैट्रिक तक शिक्षा ग्रहण कर अध्यापन में कार्यरत है।

इन्होंने हिन्दी, ब्रजभाषा और अंग्रेजी में अपने विचार काव्य के माध्यम से व्यक्त किए। इन्होंने गद्य पद्य दोनो क्षेत्रों में अपने कलम का जादू दिखाया. इनकी रचना में श्रृंगार की सुहानी छटा, कृष्ण की आराधना, ज्ञान और वैराग्य की चेतावनी और देशकी एकता हेतु राष्ट्रीय भावनाएँ प्रस्तुत की है। इन्हें करुणा का कवि भी कहा जाता है। 'रुपसी विधवा' इन की कविता करुणा की उत्तम कविता है।

इन्होंने हिन्दी और ब्रजभाषा में कविताएँ रची किन्तु इनकी प्रिय ब्रजभाषा ही है, इनका मानना हैं कि ब्रजभाषा में मधुरता है। वह लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। कृष्ण के सौंदर्य को ब्रजभाषा में जिस तरह प्रस्तुत किया जा सकता हैं वह

अन्य भाषा में नहीं कर सकते। 'कृष्ण छवि' शीर्षक कविता का उदाहरण इस प्रकार है।

मोर को मुकुट सोहै, और दृग भृणाल सम।
कर्ण मध्य मकराकृत आनन चारु चन्द्र सम।
मणिमय एक बिन्दु सौहै शुक सी नासिका पै।
मोहक सुरीली बंशी राजत सुअधर पै।
कौस्तुभ मणि माल युत रहत वक्ष भाग पै।
केहरि कमर मांहि, कांधनी बंधी रहै।
तापर छुद्र घंटिका युत करन्धनी सजी रहे।
लालिमा चरण की रक्त पद्म सीं फबी रहै।
राधा नटवर की आंखिन के अंजन की।
गौरवर्ण मोहन पै आभा बनी रहे। [116]

इन्होंने ब्रजरचना माधुरी की रचना की है। जिसके अन्तर्गत हनुमान जी के तीन नाम, गणेशस्तुति, अभिलाषा, आज दिपत दिवारी हैं, दोहे नीति के, विरहणी राधा, गणेशस्तुति, श्री गोस्वामी तुलसी दास की आरती, होरी-सी मचाय दे, अनुराग जग्यौ, क्यो केशन की बदंरी घिरि आई, अब जे दिन आये, बसन्तागमन, बरही, यह कैसौ स्वराज है? रसखान सुधा, राधा विलाप, चलहु सखी जह वंशीवारे, कर में दीप धरे, दादू महात्मा, पावन-पावस, पावस आगमन, पावस प्रवेश, होरी की धूम मची, पावस स्वागत, तिय सुन्दर मत दीजै, आज अकुलाई, यात्रा विचार, आस निरास भई, वर्षा का प्रथम-दिवस, कृष्ण-जन्म, कान्हा तू तो अति उत्पाती, कमले को तिरियन पढ़ि पायौ? कोयलिया जा पिया के देश, शिव सेवक, तनया शोभा देवी के विवाहोपलक्ष में प्रणय बन्धन, जयपुर ब्रजभाषा अकादमी के प्रति उद्गार अध्यक्षजू, रंगीलो श्याम रंगि गयौ, बृज होरी कै रंग सौ आज रंग्यौ री, कृष्ण के मथुरा गमनोपरान्त ब्रजभूमि का विषाद आऔ ब्रज राज दुलारे, ए री भारती पुनीत, सकार, लंकार, कान्हा करत रहत बरजोरी, नीति वचन, दिवारी की रुप माधुरी, बरजि रही मन मोहन सो मोर, थकि थकि जात जीभ बपुरी कुशाल पत्र दीजै, खूब बनी झाँकी है एरी भारती पुनीत, सकार, लंकार जैसे शीर्षकों का समावेशकर ब्रज रचना माधुरी में माधुर्य रचा। जिसके कुछ

उदाहरण इस प्रकार है।

गरजितरजि लरजि, घन घोर घटा आई।
कृष्ण पक्ष कृष्ण रात्रि कृष्ण जन्म लाई।
झीगुंर झनकार भरी, नत्यत सुख दाई।
दादूर दबगं दम्भ तबल ताल लाई॥ [117]

✻ ✻ ✻

मोर पखा सिर सोह रहा, मन मोह लिया उस सोहन ने
मकरा कृत कुण्डल लटक रहा रुचि रुप धरा जगमोहन ने।
शब्दावालि शक्ति विहीन हुई, मति पंगु बनाई सूरज में।
लूट लिया सरबस मेरा रस राज की रजंन मूरति ने॥ [118]

✻ ✻ ✻

लाल लाल हाथ जाके, लाल है रसीले गाल
लालकौ खिलामेंगोद, लाल है लटान में।
लाल ही महावर लागौ, लाला भरी मांग लसै,
ललित ललना की लली, ललामता ललाई में। [119]

25. श्री धनेश फक्कड़

श्री धनेश फक्कड़ जी का जन्म 23 अप्रैल 1946 को भरतपुर में हुआ. इन के पिता श्री गोविन्द प्रसाद दुबे, और माता श्रीमती गंगा देवी है। इन्होंने हायर सेकण्डरी तक शिक्षा ग्रहण की। और मुक्त लेखन तथा अपनी निजी शिक्षण संस्था के संचालन में कार्यरत है। फक्कड़ जी हास्य व्यंग्य के बेजोड़ कवि है। इन्होंने भुटिया हरियाना की झुटिया, मेढ़ा सो डील डौल, गेड़ा सी खाल, पेचकस ते सुरझे ऐसे घुँघराले बाल, मूढ़ा समान जूड़ौ, भैस की सी चुटिया, कहू सौ मुँह, लड्डु से नैन, नाक साबून की सी बटियाँ, सड़क कूटनो ईजन जैसी देह, हवा भरयौ ब्लैंडर जैसी देह, फैले मति विजन, विलैया सी, चिपजाय बर्र ततइया सी, पौडर क्रीम कौ लेप कियौ जैसे, फूटी सी भीत पलस्तर डारंयौ, बनौ नेह कौ बानौ, राज की गुरधानी, सासन की होरी, जैसे उपमानों का उपयोग कर अपने काव्य की कमनीयता को बढ़ाया।

इन्होंने अपने काव्य में नारी रुप वर्णन, फैसन, नारी की पीहर को छोड़कर

आना, बच्चों का बोझ, सौतन का सदेंह, धनी की विरथा धन लुटायबौ बातन में भुरायवौ, बात-बात में आँखि दिखायबौ ससि का शासन, होरी की बरजोरी, पति की पिटाई, गरीबी में गुजारौ, मांग की लाज और लाज का बचाव, जैसी कुछ समस्याओं पर फक्कड़ जी ने अपनी कविता और गीतों के माध्यम से उजागर किया। इसके अलावा राजनीति पर करारा व्यंग्य 'बोलो हर गंगा' में देखने को मिलता है। फक्कड़ जी ने नेता, अभिनेता, पत्रकार, पंड़ा, पुजारी मौलवी, छुआछुत करने वाले, का पर्दाफाश कर असलियत बयान की। इन्होंने अपनी कविता में ब्रजलोक संस्कृति और परम्परा के साथ ब्रज लोकउक्ति और मुहावरो का भी प्रयोग किया। जैसे पराई अगि में मत दूध उफानौ, झगरौ झूठौ कब्जो सांचो, दस दिन में बीस घाट को पानी पीने, उर गये कबूतर, बुस्यौ सौ म्होडो लैकै, पाम कुसौने लायो, सतुआ सौ चाटिकै, काट रहे कान, चोच के नाम लिख्यो है चोंच कौ दानौ जौ आप पै आयगयौ, और त्यौरी चढ़ाइके आदि जैसे मुहावरें इन की कविताओं में दिखते हैं। इन की बहुत सी फुटकर रचनाएँ प्रकाशित हुई है। इन्होंने प्रसारण के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया है। 1969 में मथुरा, दिल्ली जयपुर, आगरा और जोधपुर आकाशवाणी केन्द्र से लगभग एक हजार कविता और आठ हास्य वार्ता प्रसारित हुई। इन को 1912 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित और पुरुस्कार दिया गया है।

इन की ब्रजभाषा में रचित ब्रजरचना माधुरी में प्रभु तुम कौन देस के वासी, वयसन्धि, महँगाई में कनागत, ब्याह लाये भुटिया, गजल हास्य रसिया, परिवार नियोजन, पत्नी पुरान, बोलौ हर गंगा, सुन सासुल चतुर सुजान, फक्कड़ तैतालीसा, भगं की तरंग, हमारौ कहा करै हुक्काम, अरी ओ दिल्ली रानी, कुण्डली-कुंज, हम हुक्का के बाप विद्रोह बीजुरा, लाला निनुआ सेठ, गोरी ने लूट लिये गाम रसिया, होरी, गीत, बलम अनारी, मेरौ देस मेरी धरती महान रसिया, फक्कड़ जी साचं-मांच फक्कड़ बनि जाओंगे, चन्द्र लोक में भिडन्त, मारी रे दइया, कलजुग कौ कृष्ण आज वसीवारे, हास्य नृत्यु नाटिका जैसे शीर्षकों का समावेश कर अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

टी.वी. नै घौषित करी, मानसून की डेट।

सूघी कमरा में घुसी बीबी हैवी वेट॥ [120]

* * *

रंग डारी रे मेरी चुनरिया,
अरी लाल गुलाबी केसरिया।
राह में फेरी गागर मेरी,
ठान रह्यौ हमसौ बरजोरी।
है कर जोरी साँवरे मोरी
मै हूँ मरे भोरी गुजरिया॥ [121]

* * *

आरे कान्हा आ आ आ, आ–आजा वंशी बारे।
तान मुरली की सुनाजा साँवर
आरे आ ना तड़फा मै तेरी तू मेरौ।
नाम राधा बरसानों मेरौ गाम रे॥ [122]

इस प्रकार फक्कड़ जी, ने अपनी रचनाओं में व्यंग्य-हास्य के माध्यम में पाठको को अपनी प्रतिभा से अवगत कराया साथ ही ब्रजभाषा में काव्य की रचना की। पद्य के साथ गद्य मे भी इन्होंने एक उपन्यास 'इमरती' और आठ हास्य वार्ताए रची जो आकाशवाणी केन्द्र से प्रसारित हुई।

26. ठाकुर अक्षय सिंह रत्न

ठाकुर अक्षय सिंह रत्नू का जन्म 28 दिसम्बर 1910 को ननसाल गांव काली पहाड़ी अचरौल के बगल मांहि जयपुर जिले में हुआ। इनके पिता श्री झुमार सिंह और माता श्रीमती जत्तू बाई है। इन्होंने श्री गिरधारी लालजी भट्ट तैलांग को अपना काव्यगुरु माना है। सन् 1926 में इनकी पहली रचना इस प्रकार की है।

सैकत सनीर करि पीर जनता की हरि, नृपति प्रवीर 'अकै'कीरती खटाई तै।
यत्र जल बिन्दु अपि मात्र हू अलभ्य हुती, तत्र सखत्र तोय तटनी तटाई तै॥
मानो मरुदेश उपनैन हीन हतो ताय, सरित स्वल्प उपनीत लपटाई तै।
धन्य कलि व्यंग बीच भागीरथ गंग भूप, मरुभूमि अंगआनि गंग प्रगटाई तै॥ [123]

अक्षयजी ने अनेक ग्रन्थ की रचना की, अनेक प्रकाशित हो चुकी है। प्रकाशित ग्रन्थ में प्रमुख है।

1. अक्षय भारत दर्शन , 2. अक्षय केसरी प्रताप चरित्र, 3. अक्षय जय स्मृति, 4. वाल्टर कृत-चारण राजपूत सभा के नये रुलिग्स पर दो शब्द। अप्रकाशित ग्रन्थ में श्रीमद् भगवत के दसम् स्कन्ध का ब्रजभाषा पधानुवाद, 'अलवर में उलट फेर, खण्ड काव्य और अक्षय तेजनीति समुच्य है।'

इन्होंने ब्रजभाषा के साथ-साथ राजस्थानी में रचना रची है। इन को अलवर दरबार और मत्स्य राज्य से सम्मानित किया गया।

इन्होंने ब्रजरचना माधूरी की रचना की। जिसके अन्तर्गत मंगलाचरण में 7 दोहे, कवित्त, 19 सवैया, श्रीलक्ष्मी परक, कवित्त दोहा, श्री देश नोक पर 4 कवित्त, 1 सवैया, 2 दोहा, प्रार्थना में 2 कवित्त, जाको उत्तर नाहिं आयवे पे पुनः प्रषित, अलवर परख पर 6 कवित्त, राजसत्ता(शक्ति) कौ प्रभाव, 6 सवैया, 4 दोहे उपालम्भ पत्र, अलवर पर कवित्त, काशी नवनिर्मित भारतमाता मन्दिर के क्रम में 4 कवित्त, श्री जवाहर लाल नेहरु की प्रथम जयपुर यात्रा पर 1 कवित्त, जयपुर विनोद 2 दोहा, रस लीला पर 2 कवित्त, द्रोपदी चीर हरण प्रसंग पर 1 कवित्त कशमीर विजय पर 28 छन्द, स्वतन्त्रता छन्द चामर अन्योक्ति गुलाब इक्कीसी पर 21 दोहों का समावेश कर ब्रज रचना माधुरी की रचना की। जो कि अत्यंत ही मधुर है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

दोहा :

गुरु रसाल तरु तै लख्यो, कोकिल खिल्यौ गुलाब।
रंग रुप मोहित भयो, रस हित हे बेताब॥[124]

कवित्त :

ईसाई व हिन्दू जैन बौद्ध सिख मुस्लिम आदि,
अन्य सभी मित्र ज्यों पवित्र ध्येय धाम है।
हृदयोद्गार मोरि वृथा तकरार छोरि,
मातृ भू संभार के विचार उच्च जमि है।
'अक्षय' स्वपक्ष रक्ष भूल मिलि है, अबै न,
परस्पर प्रतिकूल भूल में भरमि है।
एख नाव बैठे भूरि जात्रिय स्वभाव देशष

दूरि देष भाव याकौ प्रेम ते प्ररिर्णमि है।[125]

सवैया :

ज्यों नद नन्द संदेश वधू ब्रज्र वृन्द अनन्दित चन्द्रचकोर।
पेखि सुखी पुनि विज्जु छटा गन चातक मोर घटाघनघोर।
त्यौ रस पूरित पत्र पढ़े दिल ढ़ाढ़स चित्त वियोग विभोर।
प्रीतम प्रेम छकी पतियाँ छुइकैं छतिया छिलकात हिलोर॥[126]

इस प्रकार ठाकुर अक्षयसिंहजी ब्रजभाषा के कविरत्नो में से एक है। जिन का नाम आदर के साथ लिया जाता हैं और उन की रचनाओं को सरहाया जाता है।

27. श्रीमती विनोद कुमारी 'किरन'

श्रीमती विनोद कुमारी 'किरन' का जन्म 22 नवम्बर 1944 को भरतपुर में हुआ। इन के पिता श्री मेहश नारायण भारद्वाज और माता श्रीमती शान्ति देवी है। इन्होंने अपनी माता को अपना कात्यगुरु माना हैं। इन की सबसे पहली रचना खड़ी बोली की कविता (महारानी कालेज मैग्जीन) मे छपी जिसका शीर्षक हैं।

''जग मग करती दीपावली''

ब्रजभाषा की इनकी सबसे पहली रचना 'सोने की कौछनी' हैं जो सन् 1978 में आकाशवाणी मथुरा से प्रसारित हुई। इन्होंने गद्य-पद्य दोनो क्षेत्रों में अपना योगदान दिया इन्होंने अपने लेखन की शुरुआत पद्य से ही की इन्होंने और अपनी रचनाओं में नारी जीवन की विडम्बना को ज्यादा प्रस्तुत किया है । इन के तीन रुपक 'एक सौने की कौधनी' जो आकाशवाणी से प्रसारित हुई दूसरी 'बन्द लिफाफो' राजस्थान ब्रजभाषा आकादमी के प्रकाशन में छपा। तीसरा 'बुरे फंसे' अप्रकाशित है।

इन्होंने नारी को आधुनिकता का बोध करते हुए प्रस्तुत किया हैं। इन की आक्रोस, जी तो मरि गयौ, टूटन, पछतावे के आंसू, लापरवाही, नासुर असली मईया, चकव्यूह, भारत कौ परदा, कमरौ पूत, कहानियों में नारी की विडम्बनाओं को प्रस्तुत किया है।

इन कहानियों के अलावा एकांकी रुप (रेडियों) सोने की कौधनी, ब्याह के बाजे बजाना, बुरे फंसे, गुलकन्दी काकी (रेखाचित्र) आप मेरी अम्मा नाय है सकौ ई कैसौ पछ? मैने या तरिया नायं सोचौ, आक्रोश (कहानी) लापरवाही (कहानी) असली

मइयां (कहानी), भरम का परदा (कहानी) कमेरौ पूत (कहानी) जैसी इन की रचनाएँ सराहनीय है। इन को ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया है।

(28) श्री भंवर स्वरूप भवर

श्री भँवर स्वरुप भवंर जी का जन्म 30 जुलाई सन् 1914 को गांव आधियारी तहसील रुपबास जिला भरतपुर राजस्थान में हुआ। इन के पिता श्री प्रहलाद प्रसाद और माता श्रीमती हमरेजी है। इन्होंने 1927 में अपनी पहली कविता दोहा के रुप में लिखी जो इस प्रकार है ।

'ग्राम अटारी में रहै लाला दुलिया चन्द।
क्वार सनीचर वार कूँ प्रगट्यौ नक्टा नन्द॥' [127]

इसके पश्चात 1939 में भरतपुर में हुए एक कवि सम्मेलन में दो समस्याए 'उमंग है' राज की पर इन्होंने अपने सवैये सुनाए जो अत्यत ही सरहाय गए। इन्होंने अपनी रचना की एक पुस्तक 'हिन्द सुराज' छपवाई जिसके अन्तर्गत सामाजिक कुरीतियों का भाड़ाफोड़ किया इसके अलावा वे 'विश्व भारती' और दूसरी 'गोपाल गीता' पुस्तक का प्रकाशन करना चाहते है। इन्होंने अपनी रचनाओं के विषय समाज और शासन की बुराइयों, परिवार नियोजन, घरवाली का स्वरूप, दहेज के लोभी, जनसख्या, राजनीतिज्ञ की गिरगटी, न्यायव्यवस्था पर कुठाराघात, भारतीय संस्कृति पर पश्चिमी संस्कृति का आक्रमण, वोटर के चरित्र का भाण्डाफोड़, धन की बरबादी, बिरथा के खरच दहेज, छुआछुत, नशा की टेव, नारी उत्पीड़न, अनाप सनाप परिवार, बालब्याह, अनमेल ब्याह, विधवा की दुर्दशा, अन्ध विश्वास, पत्थर पूजा, पुजारी, पंडा, स्याने भोपेन की लूट, चोर बजारी, रिस्वत खोरी, प्रदूषण कौ दानव, जैसे विषयों का अपने काव्य में प्रस्तुत कर लोगों का ध्यान इस और खींचा। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

विविध सिगांरकरै, बार बने हिप्पीकट,
डाड़ी मूँछ अट्ट-पट्ट पीबै सिगरेट है।
नए नए सूट-बूट साकाहार झूठं-मूठ
बैड टी डिनर मध मीट भरपेट है॥
छोरा-छोरी भेद कछु 'भवँर' ना जान्यो परै

तहमंद जनाने से, लगाय जात लेत है।

नारि रूप नर है कै नर रूप नारि है

अर्द्ध नर नारी ते, भलौ सी लागै भेट है॥ [128]

इन को श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर और राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया है। इन की कविताओं का प्रसारण आकाशवाणी द्वारा किया जाता था इन की फुटकर रचनांए पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती है। किसान, राज, हिन्द, सुराज, विश्वबन्धु, समाज, आदि सकंलन छपे जो सराहनीय है।

'भँवर' जी ने ब्रजमाधुरी की रचना की जिसके अन्तर्गत आत्मकथ्या पर दोहे, सवैया, ईश भक्ति महा कवि बिहारी दोहा (कुण्डलियाँ) पद, श्रीमद्‌भावगत गीता को भावानुवाद में सवैया, दोहा, बालमीकि रामायण को भावानुवाद प्रथम सर्गयानी नारद सर्ग पर दोहा, क्रोच वध, दोहा गणपति वंदना, परमाती (प्रभाती) भारत की आरती, समाज सुधार, ब्रजभाषा, बिना पानी की जिन्दगी, परिवार नियोजन, कुण्डलीभिक्खीमालकी, विधवा-विलाप कुण्डलिया कवित्त, कुण्डली मक्खीमलकी, पाप हरन कुण्डली सवैया, कवित्त, दोहा, चोरकी रपट, दोहा, गढ़ तौ लोहागढ़, जेठ दोंगरे, व्याकरण बोध, भूत बाधा आप बीती, बाल लीला पर छन्द, कवित्त दोहा, नीति मुक्तावली पर कवित्त, दोहा, तर्ज आल्हा आजादी की लड़ाई (तर्जआल्हा) जैसे शीर्षको के साथ ब्रज रचना माधुरी में अपनी प्रतिमा का परिचय दिया।

इस प्रकार भवँवर जी, राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा कवियों में अपना-स्थाना बना कर अपनी रचनाओं से पाठको को ब्रजभाषा की मधुरता से अवगत कराया इन की रचना के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

– पदः

मेरौ मन भयौ विषयन कौ चेरौ।

ज्ञान ध्यान में मन नहिं लागै उर अज्ञान ऊँधेरौ। मेरो ... [129]

– ब्रजभाषा

ब्रजभाषा तौ हिन्दी की आत्मा है।

'भवँरा' यह भारत भूमि की भासा।

ना ये अग्रेजी कौ मिक्चर है।

ना विदेशीन के अलफाज की भासा।

रासौ रची कवि भट्ट नै जो,

अपभ्रस मंची दखारन भासा।

सोई मजदूर किसान के मुख

गंभन में विकसी ब्रजभाषा। [130]

29. पटवारी रामजीलाल शर्मा

पटवारी रामजीलाल शर्मा जी का जन्म भादो वदी 6, सम्वत 1957 वि. (सन् 1901) को हुआ। इन के पिता श्री प. भूधरमल शर्मा और माता श्रीमती भूरीदेवी है। इन्होंने पं. गंगाबक्स ज्योतिषी को अपना काव्य गुरु माना है। इन की पहली रचना है।

है भक्ति युक्त की दाता भोजन थारी।

भोजन थारी पै भोजन करै मुरारी।। [131]

इन्होंने रंगत खड़ी, रंगत मफिथ लामनी, रंगत छोटी, लामनी, रंगत बहरे तबील, रंगत छोटी तबील, रंगत शिकस्त, रंगत बारहमसी, रगंत जामिनी, रंगत लगड़ी आदि विषयों पर अपनी कलम बिना रोकटोक चलाई। इन को पुराणों की कथा पर ख्याल लिखने के प्रतिपच्छी है। इन्होंने स्थायी, चोक, होला, मिलन, पर लिखा है।

इन की रचनाएँ रसिया छन्द कवित्त सवैया भजन जिकरी, भजन संवादी दुकूला व रंगतदार, ख्याल लावनी कलगी अखाड़ा की काफी फुटकर रचनाएँ। इन की ब्रजमाधुरी आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित की गई। इन की रचना ब्रज रचना माधुरी में रसिया दहेज पर, ख्याल रंगत लंगड़ी रिश्वत पर, ख्याल तबील चुनाव सन् 80 लोकसभा, रसिया पढ़ाई पर जिकरी होरी में जिकरी को पिगल शास्त्र के गणो द्वारा हर मिश्र को रचाहै, महाभारत से, भजन सम्बादी भेंट भगवती महारानी, रुद्राष्टक, श्री बजरंगाष्टक,रीतों जजांल जमाने को, उटो जागो, रावण कौ अन्तद्वर्द (ख्याल) जय अलख निरजंन, करम गति, चौकीबदं (उधर न की दुजंग) माखन चोरी, चौकीबंद लिलहारी लीला, मध्य अक्षरी, ख्याल लावनी रंगत छोटी आदि अक्षरी, देशभक्ति, विभिषण शरनगति, सर्वव्यापी प्रभु, दो लाइना, नकशा, शीर्षको, प्रकृति पुरुष रोम रोम में राम, दुकूला कलमबन्द कमल बंद अधर में, सर्वव्यापी, जैसे शीर्षको के साथ पटवारी जी ने ब्रज रचना ने माधुर्य को प्रस्तुत किया। जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

टेक :

मुतलक खौफ खतर नाहि दिल मे होता है व्यापार
आपा देखलौ खुले दा रिश्वत का बाजार खुला। [132]

* * *

नर रट गिरधर चित लाई।
नर नन्द के है नाहक सागै कहाँ नीच तेरी अकल गई।
रट नर गिरधारी चित्त लाके जिसकी जग से कला नई।
रट हरि सागर अन्दर जन के करते काज सिहाई। [133]

इस प्रकार पटवारी जी ने ब्रजभाषा में रच कर अपनी प्रतिमा का परिचय दिया इन्होंने ब्रज केसाथ उदु भाषा के शब्दों का प्रयोग कर काव्य में मधुरता को बढ़ाया।

30. श्री यशकरण खिड़िया

श्री यशकरण खिड़िया जी का जन्म 4 अप्रैल 1904 को गांव जैतपुरा, तहसील आसीन्द जिला भीलवाड़ा राजस्थान में हुआ। इन के पिता श्री शक्तिदानसिंहजी और माता श्रीमती अनूप कुंवरि जी है। इन्होंने अपने नानाजी राव शार्दूलसिंह जी और पिताजी दोनो से काव्य की प्रेरणा मिली। इन के घर का वातावरण काव्य में रचा बसा था इसलिए ये बचपन से ही काव्य के शौकिन थे। कुरीति, कायरता, अन्धविश्वास के प्रति आक्रोश, राष्ट्रीयता की भावना के प्रति प्रगाढ़ता, अध्यात्म चेतना इन के काव्य के मूल विषय थे। इसके अलावा शिव महिमा, शिवा महिमा, ईश्वर महिमा, बुद्धदेव महिमा मनोपदेश, हितोपदेश, मिथ्याचार निदां, सत्कर्म महिमा, भावत्मक एकता, धार्मिक समन्वय, नीतिपरक रचना, मानवधर्म, सज्जनता, साहस, श्रमशक्ति महत्ता, मानवता, परोपकार, प्रकृति व्यवहार, शठता निन्दा, वृद्धावस्था की विकलता, चिन्ता-तृष्णा मोह, आलस्य आदि की निन्दा, जीवन की क्षण भागुरता, संतोष सुख साधु पहचान, गुरु-शिष्य व्यवहारआदि। ग्राम्य जीवन, यम नियम, परिवार कल्याण, स्वास्थ परक दोहे, घरेलु औषधालय, अछुतोद्धार ब्राह्मण धर्म, नकली नेता जैसे विषयों का चित्रण विविध छन्दो के माध्यम से किया है। इन छन्दों में सवैया मालती व मत्तगयन्द छन्द कुण्डलिया, त्रोटक, भुजंगी, षठपदी (छप्पय) रोला पद्धरिया,दोहा मनहर कवित्त धनाक्षरी का उल्लेख किया है। इन्होंने दोहावली में 711 दोहा, यशकरण ग्रन्त माला में

235, उद्बोधन में 125 के लगभग दोहे लिखे है।

इन के काव्य को निम्न भागो में बाँटा सकते है।

(1) भक्ति काव्य (2) नीति काव्य (3) ऐतिहाँसिक काव्य (4) उद्बोधन काव्य (5) व्यंग्य काव्य (6) राष्ट्रीय काव्य (7) प्रकीर्णक काव्य इन की अति आहे (काव्य) खारी बाढ़ वर्णन, शिवशिव महिमा और यशकरण दोहावली प्रकाशित पोथी है।

इन की ब्रज रचना माधुरी में शिवमहिमा पर दोहो सवैंया, कुण्डलिया, शिव महिमा (शिव स्तुति) पर सवैया, षटपदी,दोहा, कण्डलिया, यशकरण दोहावली, ईश-महिमा, हितोपदेश, दण्डनीति, मनोपदेश राष्ट्रीय एकता, संतोष, सज्ञनता, शढता, साधु की पजहाँन, क्षण भगुरता, वृद्धावस्था, साहस श्रम और शक्ति की महत्ता, परिवार कल्याण, मानवता, तृष्णा, मोह, परोपकार, प्रकृति व्यवहार, स्वार्थ, शासक और राजनीति, कुप्रथा, वीर दुरगादास का पत्र, औरगंजैब के प्रति, महाराणा के प्रति, दोहा ब्राह्मणों के प्रति, नकली साधु, द्रव्य का दुरुपयोग, भ्रम का भवँर पाशचात्य सभ्यता से प्रभावित आधुनिकओं के प्रति, पुरुषो के प्रति, उद्बोधन, अनमेल विवाह, युवकों के प्रति, दहेज की कुप्रथा, नुकता (मत्युभोज) की कुप्रथा, मदिरा के दोष, अछुतों का भूत, न्यायालय कर्मचारी, वकील, नकली नेता, चरणों के प्रति उपालम्ब, क्षत्रियों के प्रति, जैसे शीर्षको के साथ ब्रज रचना माधुरी के माधुर्य को प्रस्तुत किया, जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

बाल वृद्ध अनमेल के, करहु न कबहु विवाह
इनसे उर मे रहति है। कलह दुखानल दाह॥ [134]

* * *

सुरसुति का वाहन सदा, मोती चुगत मराल।
सुरसुति की कर नहीसकत, समता सुर सुरपाल॥ [135]

इस प्रकार राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा कवियों में इन का नाम आदर से लिया जाता है। इन की रचना का आकाशवाणी के जयपुर केन्द्र से प्रसारण होता रहता है। इन का महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन से कुभां पुरुस्कार मिला है। इन के काव्य ब्रज और खड़ी दोनों में मिलते है।

31. डॉ. हरदत्त शर्मा 'सुधांशु'

डॉ. हरदत्त शर्मा 'सुधांशु' का जन्म फागुन शुक्ल दशमी, वि. स. 1980 तदनुसार 2 मार्च 1938 को माढ़ँए गाँव (तहसील बहररोड़) जिला अलवर राजस्थान में हुआ। इन्होंने एम. ए. (संस्कृत) एम. ए. (हिन्दी), पी.एच.डी (विधावाचस्पति) तक शिक्षा ग्रहण की और राजस्थान शिक्षा सेवा (कॉलेज) में 1957 से कार्यरत रहकर मार्च 1992 में सेवानिवृत सेवा के अन्तिम काल में आचार्य, एम. एस. जे. कॉलेज भरतपुर में कार्यरत रहे। इन की पहली रचना 'गरेलपटी'समस्या पूर्ति के लिए सवैया की रचना की जो इस प्रकार है।

जग में सब भाँति के जीव बसै,
तिन मे एक जन्तु, बसै 'कपटी'
त्रयकाल त्रिवलोक में काहूँ कहूँ
या महासय की कबहूँ न पटी।
सब जीवन या विधि बीति गयौ
या की झपटी वा की झपटी
पछितावै कहा धरि मूँड पै हाथ,
रे ! मीचु की फाँस गरे लपटी, [136]

सुधांशु जी का मानना है कि काव्य में कितनी ही नई-नई विधाएँ आ जाए किन्तु वह परम्परा का साथ हमेशा रहता है। काव्य में परम्परा के दर्शन हमेशा रहते है। इन का काव्य भी परम्परा को साथ लेकर चलता है। इनके काव्य में राधा कृष्ण की प्रेम लीला, गौ और गौपाल, के साथ-साथ भूतकालिन भारत, गुलाम भारत, महँगाई, जातिवाद, अनैतिकता के बन्धन, राष्ट्र की वर्तमान और भूतकालिन दशा, परिवर्तनशील परम्परा, राष्ट्रभाषा समस्या, भारत की दुर्दशा अन्य देश का भारत की राजनीति पर प्रभाव, अलगाववाद की समस्या, देश की राजनीति में धर्म निपेक्षता, महँगाई जैसे विषयों का समावेश अपने काव्य में किया है। इन्होंने ब्रजभाषा में पद्य और गद्य की भी रचना की। गद्य में इन्होंने अमूर्त विषयों पर जैसे चरित्र चित्रण, जीवन और मत्यु, सभ्य राजनीति आदि विषयों के दार्शनिक विवेचन के अतिरिक्त उपदेशात्मक विषय, जैसे हमारे बाबा, कह्यौ करते पर सशक्त लेखनी चलाई है। जिन के कुछ

उदाहरण इस प्रकार है।

मोहन की छबि के मधुर, सागर में अब गाहि।
सूर रची रचना मधुर, लागत सुखद न कहि।
हरि सुमिरन मे लीन, सर नैन मूँदे रहे।
सब कछु भयौ नवीन, हिरसदै अन्तर कौ जगत। [137]

इन्होंने शतधिक मुक्तक, 50 गीत, 250 कविताएँ, प्रतिशोध खण्डकाव्य, लगभग 40 समीक्षात्मक लेख, स्फूट लेखन-भावना प्रधान, चिन्तन प्रधान, संस्कृत में स्फूट काव्य रचना, ब्रजभाषा में स्फूटलेख तथा काव्य रचना, संस्कृत श्लोको का हिन्दी में काव्य-रुपान्तरण जैसे साहित्य लेखन में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। जिनमें से इन के प्रकाशित साहित्य समिति वाणी (भरतपुर), मधुमती (उदयपुर) जाह्नवी (दिल्ली) संप्रेक्षण आदि अनेक पत्रिकाओं एवं तुलसी मानस संदर्भ, 'भारतीय नन्दन अभिनन्दन' आदि सकंलन ग्रन्थों में प्रकाशित लेख एवं कविताएँ, श्री नाथूराम शर्मा के प्रबोधयन, महाकाव्य तथा श्री नारायण वर्मा के दो गीत काव्यो के समीक्षात्मक आमुख लेखन, मधुमती (रा. स. अकादमी उदयपुर) का पाष्मासिक सम्पादन, आग और आँसू काव्य संकलन के छह कवियों में एक कवि तथा उक्त संकलन का सम्पादन-कार्य, सिसकती वेदना- काव्य संकलन (स्वकीय चर्यानत कविताओ का संकलन)

इन के द्वारा रचित ब्रजरचना माधुरी के अन्तर्गत श्री सरस्वती स्तुति, ब्रजभाषा महिमा, आत्मा कौ सरूप, राधा-कृष्ण प्रीति, बालकृष्ण, आत्मकाव्य, सूर स्मरण, खलवर्णन, सुजन-सुभाव, राष्ट्रदशा, राष्ट्र भाषा जैसे शीर्षक को अपनाकर अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया है। जिन के उदाहरण इस प्रकार है।

नैनन कौ कजरा करयौ कान्हा रुप अपार।
प्रतिबिम्बित सर्वत्र ह्वै गयौ स्याम सुकुमार॥ [138]

✻ ✻ ✻

ब्रजभाषा के सम मधुर भासा सुखद न आन।
भाव मधुरिमा मन हरै छन्दन की मुस्कान॥ [139]

✻ ✻ ✻

या ब्रजभाषा माँय सिगरे भारत कौ कवित्त।

अमृत रस बरसाय मोह्यो रसिक समाज सब॥ [140]

ब्रजभाषा में पद्य के साथ गद्य में भी इन्होंने खूब लिखा है। ब्रज माधुरी रचना के अन्तर्गत बोलिबो, साथी, चरित्र, जीवन और मृत्यु, सभ्यलोग, राजनीति, व्यवस्था चिन्तन, हमारे बाबा कह्यौ करते,. पाप-पुण्य, पुस्तक महिमा, संगति, आत्म-प्रशंसा, का है सकै, सान्ति जैसे शीर्षको के साथ अपनी ब्रजरचना माधुरी के माधुर्य को बढ़ाया।

इस प्रकार 'सुधांशु'जी राजस्थान के आधुनिक कवियों में से एक है। जिन्होंने ब्रजभाषा में रचना कर ब्रजभाषा के प्रचार में अपना सहयोग दिया। वैसे इन की हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, राजस्थानी, ब्रज अंग्रेजी सभी में रुची है। किन्तु इन्होंने ब्रजभाषा में अपने विचारो को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। इतिहाँस,धर्म दर्शन संस्कृति सभी में अपने विचारों को व्यक्त कर कविरत्नों में अपना स्थान बनाया।

32. श्री रामदास गुप्त

श्री रामदास गुप्त जी का जन्म 21 जुलाई 1921 को चौलपुर में हुआ। इनके पिता का नाम श्री बाबूलाल सरफि हैं इन्होंने प. हरि भगवान दीक्षित को अपना काव्य गुरु माना है। 'दास' जी का मानना है कि जो दिख रहा हैं वही लिखना चाहिए। जो जिदंगी में प्रत्यक्ष दिखे, सुने उसी पर विश्वास रखकर लिखना चाहिए। इन विचारों को इन्होंने अपने सवैया में इस प्रकार व्यक्त किया है।

'कवि लोग समाज के दरपन है,
इनि रुप दिखाइवो आयो सदा,
कछू सांची ही सांचीलखे सो कहे,
इनिकें मन ये ही है भायौ सदा,
ब्रजभाषा के नेही, सनेहिनि को,
मम प्रयास हिरदै में सुहावे सदा,
कछु रुप भले और बुरे हु लगै
कहिबे में कहा कवि को विपदा' [141]

इन्होंने ब्रजभाषा की बहुत प्रशंसा की है। इनके मतानुसार, ब्रजवासी मधुर है

और ब्रजभाषा मधुर है। ब्रज के सब मधुर है।

इन्होंने अपने काव्य में व्यंग्य को भी प्रस्तुत किया। इन्होंने देश की राजनीति, राजनीतिज्ञ राजनेता, राज व्यवस्था, प्रशासन, स्वतंत्र भारत में दुराचार भष्ट्राचार, विदेशी की गुलामी, नारी गमन, समाजवाद, झुगी झोपड़ी हटा कर महल खड़े करना, प्रशासन के भष्ट्राचार के कारण सुख-साधन का अन्त, समाज की असमानता, विदेश सभ्यता और संस्कृति, रुढ़िवादिता और अन्धविश्वास अपनी सभ्यता संस्कृति को भूलती चली जा रहीं नव साहित्य और साहित्यकार पर व्यंग्यात्मक काव्य की रचना की है।

'गुप्त' जी ने नारी का चित्रण भी अपने काव्य में अनूठा किया है। इन्होंने नारी के दो पक्षों का चित्रण किया है। प्रथम रुप पुरातन नारी जो कविने सुलच्छनी और आदर्श रुप मानी है। द्वितिय रुप कुनारी कुलधातक बताई है। प्रथम रुप की नारी में प्रेम की विशिष्टता, पति की सुरक्षा में रहने वाली, घर को सभांलने वाली पति को परमेश्वर मानने वाली नारी है। दूसरे रुप में नारी भटक रही हैं, कुलटा हैं, गृहस्थ में आग लगाने वाली नारी है।

रामदासजी ने ब्रचरचना माधुरी की रचना की जिसके अन्तगर्त सुलच्छना नारी, कछु ऐसी ही पापिन नारि भई, आधुनिक नारि, आजकल की नारी, कलहनी, कुल्टा, ब्रजमहिमा, ब्रजसंस्कृति, ब्रज की भाषा, ब्रज के वासी, ब्रज वनिता, ब्रजभाषा मांहि सिगारिक रचना, बसन्त के प्रतीक सौ वियोग सिंगार, सासान व्यवस्था पै, सिंगार और वीर रस, पच्छाताप, ग्रीष्म रितु सौ, हास्य-व्यंग्य, नयन, नीति, व्यंग्य, इक्कसवी सदी को स्वप्न, देविक व्यधि, ब्रजभाषा दोहा (इक्कीसवी सदी के व्यंग्यात्मक), मचंन की आधुनिक, कविता के ताई, भक्ति, राजनैतिक व्यंग्य जैसे विषयों का समावेश कर इन्होंने व्रज रचना माधुरी की रचना की। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

'ब्रजबाल, गुपाल औ नंद के लाल, जसोदा की एकु कहानी बनी।
जमुना तट के तरू पुज-निकुज, तमालनिह की निसानी बनी।
'कविदास' भले जुग बीति गयौ, अपनी ही रही न विरानी बनी।
ब्रजवासिनि की मधुरी ब्रज की, मन माँहि बसी ब्रजवानी बनी।' [142]

* * *

'हक नाहन ये कपिला जनता, अब क्रूर कसईयन पालै परी।
जन जीवन नाव थपेड़िन के झकझोरि है छैल हवाले परी।
नहीं जीवन नाव सम्हाले परै, विधान की रची कब टाले परी।
जाई सास ते न्यारी भई जु हुती सोई सास निगोड़ी है पाले परी॥'[143]

इस प्रकार गुप्त जी ब्रजभाषा के अनूठे साहित्यकार माने जाते है। जो अपनी बात मुँह पर कह देते है। और व्यंग्य करने में अचूक है। इन के काव्य में ब्रजभाषा का अनूठा स्थान है। जो अत्यंत सराहनीया है।

33. श्री रामदत्त शर्मा

श्री रामदत्त शर्मा जी का जन्म 15 सितम्बर 1926 को जती महौल्ला, भरतपुर में हुा। इन के पिता पं. जगन्नाथ प्रसाद शास्त्री और माता गंगा देवी है। इन्होंने कविवर सूर्य नारायण शास्त्री को अपना काव्य गुरु माना है। इन्होंने शास्त्री (संस्कृत साहित्य) एम. ए. (हिन्दी) एम. एड. साहित्य रत्न तक शिक्षा ग्रहण कर अध्यापन के कार्यरत है। इन को संस्कृत भाषा विरासत में प्राप्त हुई। संस्कृत के साथ ब्रजभाषा और हिन्दी का भी इनको ज्ञान प्राप्त है।

शर्मा जी का रुझान गद्य की और अधिक रहा इन्होंने पद्य की अपेक्षा गद्य रचनाएँ अधिक रची। ब्रजभाषा में इन्होंने अग्रांकिंत ग्यारह रेखाचित्र लिखे है। 'मै कोऊ', 'सीला' हरपरसाद सकुटआ, मा, फिरंगी लाल, ताऊ घासीराम, एडवोकेट हरीराम, जगन्नाथ जी जोशी, सूरज नारायण जी, शास्त्री, डॉ. गोपाल और भग्गोंजी। समीक्षात्मक लेख राजस्थान मोहि ब्रजभाषा रेखाचित्र ब्रजलोक संस्कृति माँहि आत्मीयता, और निरछल प्रेम भावु, श्री रमेशचन्द्र चतुर्वेदी व्यक्तित्व अरु कृतित्व जी हाँ मैं नकल हू, आदि। प्रकाशित पुस्तक के रुप में त्रिवधा, काव्य कलानिधि, हिन्दी व्याकरण, हिन्दी भाषा एवं साहित्य शिक्षण, हिन्दी भाथातत्व एवं उपचारात्मक कार्य, नैदानिक परीक्षण उपचारात्मक शिक्षण, शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा सिद्धांत शिक्षण विधि, विद्यालय प्रंबध सुक्ति सकंलन, लेख में नया शिक्षक, बोर्ड पत्रिका आदि प्रकाशित लेख है। इनके ढ़हती सड़क, सदी न पुरानो मकान, फूट, जवाहर बुर्ज, आमुख जैसे सराहनीय रेखाचित्र पद्य के क्षेत्र में इन की ब्रजभाषा में प्रकाशित कविताएँ दीपावली, स्मृति, स्वागत बंसन्त, मुस्कान अरु संघर्ष, करुन पुकार, कविताओं के अलावा पारम्परकि

सवैया कवित्त दोहा, छन्द लिखें। जिनमें युवकों की प्रतिज्ञा बाल प्रतिज्ञा, शास्त्रीजी की वर्षगांठ, स्मृति, होरी आई, विदाई गीत नौकरीमंत्र, कविता क्यो करु, बजट-टैक्स देवता, समाजवादी बजट, स्वागत बसन्त राष्ट्रीय, जागरण, आह्वान सैनिक सी, त्रिःतुपतीक स्वागत कुछ मुक्तक लोक नायक तुलसी, स्वागत मंत्रीजी, निष्ठुर प्रेयषि मरीज और डाक्टर, अव न आऊगौ तेरो द्वार, छीनी मेरे नैनन की नींद, मन क्यो आज उदास, निष्ठुर समय को व्यंग्य, मत तुम रूढ़ौ, प्यार के यर्थाथ, काऊ की याद, प्यार मिलै नायँ, प्रियपाती तुम्हारी, सी रहयौ हूँ, परिवर्तन, व्यवस्था, सम्बन्ध, आभिनन्दन, मुस्कान पहचान, राम, जन्म भूमि, मुक्ति, सरकारी प्रदर्शनी, स्वतंत्रता दिवस, इक्कीसवी सदी में पहुचावें को नुस्खा करुन पुकार, भारत व्थ्या जैसे शीर्षको के साथ विभिन्न विषयों पर इन्होंने रचनाएँ रची।

इन्होंने ब्रजरचना माधुरी के अन्तर्गत गद्य-पद्य दोनो का समावेश किया है। गद्य में काऊ, शीला, हरपरसादस सकटुआ, मास्टर फिरंगी लाल, ताऊ घासीराम, एडवोकेट हरीराम, जगन्नाथ जो जोसी, सूरज नारायण जी शास्त्री, डाक्टर गोपाल, भग्गौजी, जैसे शीर्षको के साथ रचना रची। पद्य अन्तर्गत कविता कौ उद्देश्य, नौकरी मन्त्र,स्वागत बसन्त, होरी कौ संदेसो, व्यंगई निष्ठुर समय कौ, तुम अब रूठै, तब याद काई की आवै है, क्यो मनुआ आजु उदास है आह्वान, जैसे शीर्षको को अपना कर ब्रज रचना की। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

'आंसुवन के नेह ते जाकूँ जरा कै
प्रान आचँल छाँह में जाकू छिपा कें
चीखती निशा की गहन बीहड़ सी डगर कूँ
पार कर पावै पथिक जा की दयापै
है बुझा देवै वही दीपक बहोदी
जब समय आवै निकट दिन के उदय कौ
व्यंग्य ई निष्ठुर समय कौ...'[144]

✻ ✻ ✻

चढ़ दुष्मन पै हथियार उठा, चल देओ देस बचावे को
हे भारत भपू के नवयुवको, उधत हौ रक्त बहावे कों।

अब समै नाँय है सोबे कौ, सोकें व्यर्थ में खोवे कौं
दूस्मन कैसौ ललकार रह्यौ, दे दै कें ताने बुला रहयौ
जा लिएँ तू उठ जा अरु जग जा, लै अस्त्र सस्त्र चटते चढ़ जा
वापस लैलै वू भूमि भाग, जो तेंने यूंही दियौ त्याग
दुस्मन कूं बढ़वे ते रोकौ, मन-मानी करवे ते रोकौ
दुस्मन जो आगे बढ़े नहीं, युद्ध विराम घोषना करै कहीं,
तै तू धोखे में मत आइंयो दुस्मन के आगे डट जाइयौ।[145]

इस प्रकार 'शर्मा'जी ने ब्रजभाषा में काव्य रच कर ब्रजभाषा साहित्य के कोश की वृद्धि कर अपनी कलम का जादू दिखाया। इन्होंने 1957 से 1960 तक भरतपुर की श्री हिन्दी साहित्य समिति के मंन्त्री रहे। राजस्थान ब्रज साहित्य समिति भरतपुर की स्थापना में इन का विशिष्ट योगदान रहा, 1981 से 1990 ये समिति के मंत्री पद पर रह कर ब्रजभाषा साहित्य सजृन को प्रोत्साहित करते रहे। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर की शोध समिति के तीन बरस तक सदस्य रहे। इस प्रकार ये किसी न किसी तरह ब्रजभाषा के विकास में अपना सहयोग देते रहे। इन का नाम राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकारो में बहुत ही आदर से लिया जाता है।

34. डॉ. दाऊ दयाल गुप्ता

डॉ. दाऊ दयाल गुप्ताजी का जन्म शुक्ल पूनम सम्वत् 1985 तदनुसार सन् 1938 को भरतपुर में हुआ इन के पिता श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता और माता श्रीमती किरन देवी है। इन्होंने एम. ए. (हिन्दी) प्रथम श्रेणी 1966, एम.एड. 1986 (स्वर्णपदक, प्राप्त) (पी.एच.डी) महाकवि रसानन्द व्यक्तित्व और कृतित्व, तक शिक्षा ग्रहण कर 1978 से राजस्थान शिक्षा सेवा में कार्यरत है।

इन को ब्रजभाषा विरासत में प्राप्त हुई। इन्होंने गद्य और पद्य दोनो का गहन अध्ययन किया। गद्य में इनका साहित्य अधिक रहा।

इन की आकाशवाणी से सैकड़ौ वार्ताए प्रसारित हुई । जिन में से प्रमुख है।

1. अधिक मास में समूचे ब्रज क्षेत्र की छवि समीक्षात्मक वार्ताप्रसारण-6 जून 1988 शाम 6:45 बजे
2. परकम्मा-ब्रज क्षेत्र की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधीन की समीक्षा

3. भरतपुर के रसानन्द कवि
4. भरतपुर अचंलकी एक प्रसिद्ध कवियत्रि 'मन्जुल' मित्र कुलशेखर
5. ब्रज काव्यः ब्रज पंछी मयूर (सोदाहरण वार्ता)
6. ब्रजकाव्य में कृष्ण प्रिय राधा
7. सूर काव्य में रास लीला कौ बरनन
8. ब्रज के परे कृष्ण भक्ति कौ प्रसार (राजस्थान में)
9. भाषा एक रुप अनेक 'घोलपुर की ब्रज भाषा'
10. ब्रज के परे ब्रजी कौ प्रभाव
11. ब्रज काव्य में सतसई परम्परा
12. ब्रज काव्य के अल्प ज्ञात रत्नः सूदन कवि
13. ब्रजभाषा के अल्प रात कवि सोमनाथ
14. रीतिकालीन कवीन की ब्रजभाषा सेवा (पद्माकर)
15. भरतपुर नगर कौ सांस्कृतिक स्वरूप
16. कृष्ण भक्ति परम्परा में सखी भाव और गोप भाव को भेद
17. भाषा एक रुप अनेक (भरतपुर जनपद की ब्रजभाषा)
18. ब्रजकाव्य में पावस की छटा
19. सूर काव्य में प्रेम और सौन्दर्य
20. ब्रजकाव्य में बंसत सुषमा
21. सूर साहित्य में बसन्त कौ वर्णन
22. ब्रज कवीन की साहित्य सेवा (रीतिकाल में)
23. प्राचीन ब्रजभाषा कवि 'कृष्णलाल' और उनको काव्य
24. ब्रजभाषा काव्य में नायिका भेद
25. हरिदास सम्प्रदाय कौ संगीत और संगीता
26. ब्रजलोक गीतन में नारी वेदना कौ सुर

इन वार्ताओ के द्वारा गुप्ताजी ने, ब्रजभाषा ब्रजकाव्य और ब्रजसंस्कृति के विविध प्रसंगो को उजागर किया है। इन्होंने नायिका भेद, ऋतुवर्णन, नारीवेदना, प्रेम, सौदर्य, रीति कालिन कवियों की साहित्यक सेवा हरिदास सम्प्रदाय का संगीत और

संगीतज्ञ जैसे विषयों पर वार्ता लिख कर ब्रजभाषा और काव्य के विविध पक्षो को उजागर किया है। जिन के विषय प्रतिपादन की शैली सरल सहज और बोध गम्य है।

इन की मौलिक रचना में दो कृतियाँ उपलब्ध है। एक कहानी जिस का शीर्षक 'नन्दू खाली हाथ लौटो' दूसरा 'मेहनत में भगवान' सवांद शैली में लिखा एक नाटक है। इन की रचना में राष्ट्रीय भावना देखने को मिलती ही है। साथ ही समसमायिक समस्याओं के साथ उन का समाधान भी होता है। राष्ट्रीय सरोकार, राष्ट्रीय एकता पर्यावरन, जनसख्या शिक्षा, साप्रदायिक सद्भावना आदि का चित्रण युगबोध में होता है। प्रान्तीय समस्या में नारी शक्ति जागरण स्थानीय समस्या में सामाजिक कुरीती जैसे विषयों पर लिखा। जैसे 'नदू खाली हाथ लौटो' कहानी के माध्यम से पर्यावरण की और ध्यान खींचा, 'मेहनत में भगवान' में आज के नवयुवक को प्रेरणा दी।

इन की रचनाओं में चलती भाषा, सहज सुगम और बौधगम्य है। गद्य के कहावत और मुहावरे प्रभावोत्पादक है। छोटे-छोटे वाक्यों में बड़ी बात कह देते है।

इन्होंने ब्रजभाषा में 31 लेख (समीक्षा वार्ता) पाठ्यपुस्तक कक्षा 1,2,5,6,9 राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित में लेख, सम्पादन भाषा व्याकरण एवं रचना की पुस्तक लिखी। इन्होंने ब्रज रचना माधुरी की रचना की। जिसके गद्य अन्तगर्त भरतपुर अचंल की एक प्रसिद्ध कवियत्री-वार्ता (ब्रजभाषा में) ब्रजकाव्यः ब्रज पंछी मयूर, ब्रज के परे, कृष्ण-भक्ति कौ प्रसार : राजस्थान में, भाषा एक रुप अनेक घोलपुर की ब्रजभाषा भरतपुर नगर को सांस्कृतिक स्वरुप, भाषा एक रुप अनेक भरतपुर जनपद की ब्रजभाषा। प्राचीन ब्रज भाषा कवि 'कृष्ण लाल' और उन कौ काव्य, हरिदास सम्प्रदाय कौ संगीत और संगीतज्ञ, ब्रजलोक गीतन में नारी वेदना कौ सुर, ब्रजकाव्य के अल्पज्ञात रतन सूदन, ब्रजकाव्य में सतसई परम्परा, नन्दू खाली हाथ लौटौ, मेहनत में, भगवान जैसे विषयों का समावेश कर डॉ. दाऊ दयाल गुप्ता जी ने अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया।

35. श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी

श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी का जन्म 6 अगस्त 1923 को मध्यप्रदेश में हुआ। इन के पिता ठाकुर श्री छट्टीलाल सोलंकी और माता श्रीमती जानकी देवी है। इन को मिडिल स्कूल के मास्टर साहब श्री मदनसिंहजी, हिन्दी के अध्यापक श्री सदाकत

हुसैन जी मामाजी सरदार प्राणासिंहजी, जीजा कोमलसिंहजी आदि से प्रेरणा प्राप्त की। इन्होंने सन् 1942 से नियमित लिखना शुरु किया। शुरुआत खड़ीबोली हिन्दी से की।फिर बाद में ब्रजभाषा में लिखना, शुरु किया। इन की पहली रचना, हिन्दी और ब्रजभाषा में लिखी जिस की कुछ पंक्ति इस प्रकार है।

कर चलवै की तैयारी
रणमेरी जग में ब्रज रई है
घू घू कर चंडी चिढ़ रई है
तू भी रण साज संजा कर
अब तज कर ममता सारी।
कर चलबै की.... [145]

सोलंकी जी समाज सेवक, राजनेता, पत्रकार, कवि, लेखक व संपादक के रुप में जाने जाते हैं। वैसे इन का व्यवसाय पत्रकारिता का हैं। यह सवेंदनशील कवि हैं, साथ ही प्रकृति के चितरे, राष्ट्रीयभावना, शृंगार पूर्ण कविताएँ रचते है। इन्होंने राष्ट्रीयता के जन, भूमि इतिहाँस और संस्कृति चारो विधायक तत्वो का समावेश कर रचना रची है। देश की समस्याओ, समाज की वर्तमान गिरावट के दर्शन, इन के काव्य में मिलते है। इन को रससिद्ध कवि भी कहते है। इन की शृंगारिक काव्य में संयोग शृंगार, वियोग शृंगार दोनों देखने को मिलता है। इसके अलावा भारत की भव्य संस्कृति, सभ्यता, रीतिरिवाज उत्सव, त्यौहार प्रकृति देश के गौरव और महापुरुषों का वर्णन इन के काव्य में मिलता है। राष्ट्र और संस्कृति के प्रतिसमर्पित, विश्व बधुत्व, एकात्म, जन-जन की पीड़ा, मानवीय मूल्यों का हास, बदलती परिस्थिति में राजनीतिक छलना, सत्रांस, नारी उत्पीड़न आतंकवाद, महँगाई, युग चेतना जैसे आधुनिक विषयों की और लिख कर लोगो का ध्यान इस और आकर्षित किया, ये बड़े ही सवेदंनशील कवि है। मानवीय भाव करुणा, आशा, निराशा, क्रोध आदि काव्य के माध्यम से परिभाषित किया।

इन्होंने ब्रजभाषा में दोहा, सवैया, कवित्ता के साथ-साथ नई चाल की रचनाएँ रची है। कुछ कुण्डलीयाँ और मुक्तक रचनाएँ भी रची। किन्तु मूल स्वर खड़ीबोली हिंदी है। इन की 'गागर' नामक दोहा संग्रह में लगभग 650 दोहे ही सैकड़ो ब्रजभाषा में,

कुछ उन की बोली में है। फुटकर कवित्त सवैया पचास है।

इन के प्रकाशित ग्रन्थ है। सन् 1969 में राष्ट्रीय एकता मूलक सरस काव्य की दोहावली 'गागर', सन् 1989 में प्रबंध काव्य 'तात्या टोपे'साधना सोपान 1994 में ऐतिहाँसिक शोध की पोथी 'टोपे की फासी' अनेक फुटकर रचनाएँ कुछ कहानीयाँ निबंध भी प्रकाशित हुए, प्रश्नोत्तरी, 1956 में कोटा को योगदान, इन की अप्रकाशित सामग्री जो उपलब्ध है वो इस प्रकार है। छन्दसि (ब्रजभाषा काव्य), अन्त्योष्टि (कहानी संग्रह) उदय (उपन्यास), उत्सर्ग, दूक (काव्य), रक्षासूत्र (काव्य), रण रागिनी।

इन की रचना 'ब्रज रचना माधुरी' के अन्तर्गत समर्पन, राष्टवंदना, संस्कृति, राजस्थान, सिंगार छवि, षटऋतुवर्णन बसंत, होरी, ग्रीष्म, बरखा, शरद कालवरनन भोर, मध्याहन, संझा, निशा, विविध, पंकज, कंचन, तीखे तीर, करुणा, निरासा, क्रोध, वेदना, सुनसान, युगदर्शन, आज का युवक, आज की नारी, परिवार कल्यानस यज्ञ युवक सौ रण आवहान, अणु अस्त्र निसेध, नीति, नव वरस को आगमन, दुरददसा, हियौ हुलसै, छवि आन लहै है, झूम झूम रही, होरी, कृष्ण तेरी बाँसुरी, मधुवन में, कुंडलियाँ, सवैया, (कवित्त) शरद पूर्णिमा, स्वाग, अनुराग फाग (सवैया), ग्रीष्म सवैया, ग्रीष्म आतप सवैया उत्कंठा, बरखा यौवन (शृंगार), अधेरें में (समस्यापूर्ति) तुलसीदास, युवक सौ, जैसे शीर्षको पर लिखकर अपनी भावनाएँ काव्य में व्यक्त कर ब्रजरचना माधुरी के माधुर्य को बढ़ाया है। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

'मन में मनुहार बसी पिय की,
तन मोद भरे नव योग भए है।
जब सौ उन आनन रुप लख्यौ
तब सौ कोऊ ठोर न नैन जमें है।
वे बैन बसे कै मृदु बोल धूले
कछु और सुने नहि चाव रहे है।
कैसे कहुं सखि कहत न आवै
रसना पै जमे छवि आन लटे है॥' [147]

कुंडलियाँ :

कठां रात मानव कहत बलिहारी विद्वान।
निज कुंठा बाटंत फिरत बनते बड़े सुजान॥
बनते बरे सुजान बुद्धि कौ भयौ अजीरण।
अभिलाषा विश्वास शौर्य कौ कहे वितीरण॥
युग द्रष्टा परमार्थ हत पुरुषार्थ भू-लुठां।
बड़े धुरन्धर कवि विभु नितहु करते कुंठा॥ [148]

इस प्रकार इन्होंने ब्रजभाषा के साहित्य की बढ़ोत्तरी करते रहे। यह अनेक संस्थाओं से जुड़े हैं जैसे भारेतन्दु समिति कोटा, अखिल भारतीय परिषद कोटा, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर, इतिहाँस संकलन समिति, इंडियन हिस्ट्री काँग्रेस, ड्विीजनल पत्रकार संघ कोटा-हिन्दुस्तान समाचार इन को अनेक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जो इस प्रकार है। जिला प्रशासन कोटा से सम्मानित, साहित्यकला मंदिर से पुरस्कृत, हिन्दुस्तान समाचार से स्मृति चिन्ह प्राप्त, अखिल भारतीय पुष्टिमार्ग परिषद कोटा से सम्मानित, विद्यालय जिला प्रतियोगिता में पुरस्कृत, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी से सम्मानित किए गए है। इस प्रकार वे साहित्य के क्षेत्र से किसी न किसी तरह जुड़े रहे और ब्रजभाषा की उन्नति का प्रयास करते रहे। इन का नाम ब्रजभाषा साहित्यकारो में बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है।

36. श्रीछुट्टन खाँ साहिल

श्री छुट्टन खाँ साहिल, का जन्म सन् 1938 को कामां भरतपुर में हुआ। इन के पिता श्री मया नजीर और माता श्रीमती सब्बो है। इन्होंने श्री मिश्री लाल को अपना काव्य गुरु माना है। यह एक मुसलिम परिवार में जन्मे हैं इन की भाषा मुसलमानी है। इन के आठ भाई बहन है। इनकी आर्थिक स्थति खराब होने के कारण मदरसे में उर्दू लिखने पढ़ने का ज्ञान प्राप्त किया। इन की ब्रजभाषा की प्रथम रचना इस प्रकार है।

मधुवन में मोहन यों ग्वालन सौ बोले,
चलो राधिका कूँ झपाएँगे चलकै
वो पनिया भरन को आती ही होगी,

तो हम बाकी गागर गिराएंगे चलके [149]

इन्होंने सर्वप्रथम इन पंक्तियों को ब्रजभाषा अकादमी को राजस्थान सरकार से मान्यता दिलाने के लिए सम्मेलन कविवर गोपाल प्रसाद मुद्गल के सचांलन में किया। गया। इस सम्मेलन में सब ने साहिल जी की इन पंक्तियों से प्रभावित हुए, इस तरह वे सम्मेलन में अपनी प्रतिभा का ज्ञान देते रहे। इन्होंने समस्या-सुहावनी है. दहेज, नारी उत्पीडन, प्रेम एवं विरह, प्रकृति प्रेम और पर्यावरण देश प्रेम, राष्ट्रीयता एवं साप्रदायिक सद्भावना, जैसे विषयों पर ब्रजभाषा और खड़ीबोली में लिखा है।

इन के दोहों में अनुप्रास, यमक, उक्ति वैचित्र्य, भ्रान्तिमान, व्यतिरेक आदि अनेक अलंकारो का सहज प्रयोग किया जाता है।

'साहिल' जी की उदूझ में गजल, ख्याल लावनी हिन्दी गीत आदि का प्रकाशन बहुत सी पत्र पत्रिकाओं में हुआ है। इन की हिन्दी की ख्याल, लावनी परम्परा, प्रकाशक, राधाकृष्ण प्रकाशन आंसरी रोड दिल्ली, खोजी नजर-प्रकाशक नैनीताल, मेहनत की दुनियाँ प्रकाशक ब्रजशत दल, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर से प्रकाशित रचनाएँ है।

इन की रचना ब्रज रचना माधुरी के अन्तर्गत सरस्वती वंदना, ब्रजवंदना, 3 गजल, गीत (हौरी) गीत चंग, होरी (मेवाती), होरी, होरी (रंगीलौ फागुन रे, होरी मल्हार, दुपट्टा, चुनरिया, विरह गीतच, डॉ. मनोहर लाललोहिया के लिये, प्रारभिक रचना, कवित्त, रच कर ब्रज रचना माधुरी की रचना की जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

कवित्त :

'टूट जाय नांय आस जीवन मिलै उसास।
सेवाभाव दास बन काज अति भारौ है।
पार न परेगी तात गाल जो परैगो हाथ
अब तौ तेरे आगन में चांद कौ उजारौ है॥' [150]

गीत :

रसिया सौ रिसि आई खिलि आई गोरी।
तोते ना खेलू जा सावंरिया होरी॥

चितवन की वान तन मोह की कमान पै।
कजरारी धार धरै दरपन कौ सान पे।।
अधरन की छलकै रुपरंग की कमोरी।। तोते... [151]

इस प्रकार 'साहिल' जी ने ब्रजभाषा में काव्य रच कर अपनी प्रतिमा का परिचय दिया और अपने भावों को गजल, कवित्त आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया जो अत्यंत सराहनीय है।

37. श्री हरिप्रसाद शर्मा 'हरिदास'

श्री हरिप्रसाद शर्मा 'हरिदास'जी का जन्म 28 अक्टूबर 1932 को गुन्सारा (कुम्हेर) राजस्थान में हुआ। इन के पिता पं. मदन मोहन शर्मा और, माता श्रीमती कस्तूरी देवी शर्मा हैं इन्होने एम. ए. अंग्रेजी तक शिक्षा ग्रहण कर दो वर्ष पूर्व राजकिय सेवा के वरिष्ठ लेखा परीक्षक आगरा के पद से सेवा निवृत हो गए है। इन की ब्रजभाषा की सबसे पहली रचना की कुछ पक्तियाँ इस प्रकार है।

खबर ना हती, हमकूँ ऐसी।
करिबे चकाबन्दी जमिगे।
बी.ए. एम. ए. पढ़िकैऊ,
अब और पढ़ाए जामिगे।। [152]

इस तरह फिर इन की कलम थमी नही वह ब्रजभाषा में पद्य-गद्य की रचना करते गए। ये भक्त कवि के रुप में ज्यादा जाने जाते हैं इनके नित सेवा और वर्षोत्सव से सम्बधित अनेक पद हैं, जो इनकी मौलिकता और सेवाभावना तथा भक्ति भावना के परिचायक हैं इन्होंने भगवान श्रीकृष्ण, श्री वल्लभाचार्य, श्री गुसाई जी, श्री जमुनाजी पर पद नही लिखें अपितु अष्टयाम सेवा के पद, नित्य कीर्तन के पद, वर्षोत्सव के पद, होरी लीला के पद व अन्य फुटकर पद जैसे परेखै-भ्रमर गीत, प्रौढ़ा नायिका, अभिसारिका नायिका, मुग्धा नायिका तथा श्री नाथ कौ विरह की अभिलाषा, व्रज में गौकुल कुन्ड पर रहिबे को मन, सनेह प्रिय श्री कृष्ण के दर्शन की अभिलाषा आदि पर बड़े ही सुन्दर और भाव विभोर पद लिखे है। जिस का एक उदाहरण इस प्रकार है।

श्री वल्लभ प्रभु भूतल आए।
जय जय कार भयौ त्रिभुवन में बाजत मंगलचार बधाये।

दैवी जीव उद्धारन कारन, अरु करि है भक्तन मन भाये।
श्री वल्लभ अरु मुरली मनोहर, हरिदासनि एक हीकर गाये। [153]

इन्होंने पुष्टि सम्प्रदाय के कई ग्रन्थों का हिन्दी रुपान्तरण करके सप्रदाय की बड़ी सेवा की है। इन्होंने प्रभु की जगाने से लेकर पढ़ने तक की सभी भावना को अपने पदों में समेटा है। जैसे राग देवगंधार, राग बिलावल, राग धनाश्री, रागमालव, राग विलाबल, राग मालकोश, राग केदार, राग काफी, रसिया, राग मल्हार, जैसे विषयों पर पदो की रचना की। जैसे एक उदाहरण इस प्रकार है।

नन्द नन्दन झूल रहे पलना।
गहि डोर झुलावत सब मिलि, गोकुल की ललना।।
कोऊ एक सखी फिरखी फिरावत कोउ बजावत झुनझना।
कोटि मदन छवि हरि की राजत निरख निरख मन चलना।। [154]

इन की प्रकाशित रचनाएँ है। श्री गोपी जन वल्लभाय, श्री यमुनाष्टक एवं संपादन (टीका सहित), नित्य सेवा विधि (श्री हरिदास कृत), पं. मदन मोहन शर्मा व्यकित्व एवं कृत्तित्व, श्री महाप्रभु वल्लभपाचार्य सक्षितं परिचय, श्री गुंसाई विठ्ठलनाथ (संक्षिप्त परिचय), श्री महाप्रभु एवं पुष्टिमार्ग श्री वल्लाख्यान (ब्रजभाषा टीका)।

अप्रकाशित ग्रन्थ है। श्री कृष्ण जन्म (नाटक) दानलीला (नाटक)षोड़श ग्रन्थ की ब्रजभाषा टीकाएँ। पुष्टिमार्गीय ब्रजयात्रा। पुष्टिमार्ग एवं वल्लभाचार्य वंशावतश श्री श्री 108 श्री गो. पुरुषोत्तम लालजी महाराज कोटा (मथुरा)।

इन्होंने ब्रजभाषा में सभी विधाओं को अपनाया। जैसे पद सवैया कवित्त, विशुद्ध पुष्टि भक्ति के पद लिखे ही कृष्ण कृष्णकाव्य के अधिक पद लिखे है। सेवा, सत्संग और अध्ययन की भावना से पदो की रचना की है।

इन्होंने ब्रज रचना माधुरी की रचना की जिसके अन्तगर्त गद्य और पद्य दोनों लिखे, गद्य के के अन्तगर्त गद्य निबंध आनंद की खोज, महाप्रभु श्रीमद्वल्लाचार्य एवं राष्ट्रीयता एकता, पद्य के अन्तर्गत पाठको ने सौ नम्र निवेदन, श्रीकृष्ण कौ विरुद धर्माश्रयी स्वरुप, महाप्रभु वल्लाचार्य के विनती, पद, श्री गुसाईजी श्री विठ्ठलाथजी को, जमुना जी की विनती नदांलाय में जगावे के पद, निकुंज में जगावे के पद, शीतरितु में जगावे के पद, राग मल्हार, मंगला-निकुंज भावना, कलेऊ (छैया)नंदालय की

भावना, शीतलकाल में वन्दना, चीरहरण लीला मंगला, शीतकाल में कलेऊ के पद, हिलग-शीतकाल में मंगला के दरसन, प्रेम रोग, वत्रचर्या-चीरहरन, शीतकाल में (पौषमास) निकुंज में मुरली वादन, भोग सध्या, सिच्छा को पद (शरनागत धरम प्रधान) शीतकाल में मंगला के दरसन हिलग, कालेऊ के पद, शीतकाल में खण्डिता, मंगला, नंदालय में कलेऊ की भावना, निकुंज में राधा कृष्ण दोऊ कलेऊ करे मंगला दर्शन के पद, निकुंज में दापत्य के लि की मंगला, मंगला, शीत रितु में मंगला प्रभु के सनमुख, खण्डिता बाल्यवस्था की खण्डिता, निकुंज लीला में खण्डिता, मंगला सन्मुख में, दरसन खुले तब मंगला, शीतकाल खण्डिता, महाप्रभु जी की बधाई, श्री गोकुलनाथजी की बधाई, निकुंज लीला में खण्डिता, नित्य लीला को ऋम-चंदन के टिपारे कौ श्रृंगार गर्मीन में चंदन यशोदा मैया स्नान कूँ बुलाय रही है-स्नान कौ पद, श्रृंगार धराते समय, उष्य काल में चदंन के श्रृंगार पै फूल घृंगार, फूल के श्रृंगार में राग सारंग, श्रृंगार सन्मुख के पद, वर्षा रितु, में सिगांर राग मल्हार, श्रृंगार सन्मुख, चंदन राजभोग में कवित्त राग सारंग, सिगांर घटाकर दरपन दिखाते समय, निकुंज में ब्रजभक्त श्रृंगार की भावना, उराहनौ, वात्सल्य भावना सिंगार, पालने समें झूलते समय, यशोदा द्वारा गोपियो के उराहने का उत्तर, पनघट राजभोग दर्शन खुलते तब,राजभोग दरसन में श्री गोवरधन पर्वत के ऊपर छाक लीला, राजभोग समर्पते समय, बुलायबे कौ पदक कुंज में भोजन कौ पद, वन मेंछाक लीला, राजबोग आवे तब बुलायवे कौ पद, भोजन करते समय, आचमन कराते समय, बीरी आरोगवत के, उष्टकाल में राजभोग सम्मुख-रागनारगं राजभोग के पीछे दर्शन में, निकुंज में, श्री राधिका के पद, केला जी कुंजन कौ पद, विरह, भावना-पक्ष में आवनी के पद, विरह वर्षा रितु, मुरली के वादन वेनुनाद, वंशीवचन, विरह राग मल्हार श्री नाथ जी को पद, मुरली के पद, प्रेमरस उसीर महल रवसखाने के पद, श्रीनाथजी कौ नाम देव दमन है कवित्त-गर्मीन में सीप कौ सिगारूं धरावै खिराक में गाये दुहवे के पद, संध्या आरती कौ पद, ब्यारु कौ पद, मान लीला, दूति वचन, प्रभु वचन, मान मनायबे कौ, मान घूटवे कौ पौढ़बे कौ पद, नाम निवेदन पुष्टिमार्ग दीक्षा, मानलीला राग विहाग, वनातर विरह-रागपूर्वी, पधारते समय आवनी कौ पद, उत्थापन आवनी राग गौरी, ओढ़वे के पद-सुरतान्त, श्रीराधे जू के वचन मान कौ पद, श्री ठाकुर जी के वचन, वर्षोत्सव जन्माष्टमी नंद महोत्सव के

दिन पालनौ झूलें, गोपीवचन राग सारंग, जल क्रीड़ा स्नान यात्रा, उराहनौ, स्नान यात्रा, रथ यात्रा, प्रभुवचन, रथयात्रा, मंगला में सन्मुख, पवित्रा एकादशी, सावन के हिंडोरा में जगावे के पद, यमुना तट पै हिंडौरी, राग मल्हार-मुरली के पद, ठाकुर जी वचन, ब्रज गोपागना के वचन, वन में चंदुरिया के राग मल्हार, वर्षा में श्याम घरा, टिपारे कौ सिगारू, कुसुभी छट्ट आषाढ़ सुदी छट्ट के दिन, राग मल्हार, मंगला, मंगलाराग मल्हार, पावस रितु में विरह, सोने का हिंडोरा, सुरति केली वर्षा रितु राग मल्हार, झूला झुलवे-राग मल्हार, हिंडोरा झले तब, दान, एकांत में दान, दान में विरह, रसमय दान, कलात्मक दान, दान की लूट, ठाकुरजी के वचन, गोपी वचन, ठाकुरजी के राधा का वचन, रसात्मक दान, यशोदा मैंया के वचन उरहाने श्रृंगार, दान कौ राजबोग में, दानलीली दानधारी गोवर्धन पै, बसंत होरी, रसिया होरी कौ, नंदगांव की होरी, घमार, सरवी वेष में होरी, छेड़खानी शनय, पनघट, होरी में लड़ाई होरी में भोजन कौ पद, गोरी श्री ठाकुरजी वचन रसिया, राग विलावत, होंरी कौ रसिया, होरीभावना होरी मंगला, होरी कौ उधम होरी में मान-होरी के दिन, राग बसत होरी, रसिया, होरी में कलेऊ को पद-मंगल भोग धरे तब, ठकुरानी घाट पै होरी, भ्रमर गीत (आसक्ति दसा) परेखा ऊधौ सौ गोपी के वचन गोपीन को श्री ठाकुर जी का संदेश, गोपी वचन श्री ठाकुरजी के वचन ऊधो सौ, के वचन, गोपीन कौ श्री ठाकुरजी को संदेश, गोपी वचन श्री ठाकुरजीक प्रति (ध्यान अ, प्रणय मिलन, कलहंतरिता नायिका के भाव ते भावित सुरति केलि कौ पद, कृपा अनुग्रह, विरह कौ दान, सत्संग को महत्व, भगवद् रस माँहि मिगग्न रहनौ, अन्यूनता को पद, मधुबन बास की भावना, ब्रज कौ महात्तम, भजनान्द को सुख, श्रीगिरिराज तरैटी बासकी भावना जैसे शीर्षकों विषयों को अपना कर ब्रजरचना माधुरी की रचना की है। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

मंगला–राग मल्हार

मै तौ जागी री जागी री मैतो जागी री।
बूँद लगत सावन की रतिया, नींद नैनन सी भागीरी
परी परी प्रछितात पलंग पर बिन पिय रैन अभागीरी
कोऊ री देऔ मिलाय हरि, सौ मैं विरहन बड़भागीरी॥ [155]

* * *

चंदन की हरि हाथ, मुरलिया।

मधुर मधुर बजवत नंद नंदन, लिए गोपिका साथ॥

धोती उपरना पहरि लालजू धरे टिपारौ माथ।

कहा कहू शोभा 'हरि जू' की ये है त्रिलोकी नाथ॥ [156]

इस प्रकार 'श्री हरिप्रसाद शर्मा' हरिदासजी ने ब्रजभाषा को साहित्यक कोश को गद और पद्य दोनो श्रेत्रों में वृद्धि करने में सहायक रहे। इन को शिल्प रत्न, पुष्टि मर्मज्ञ एवं अनेक संस्थांओ द्वारा अभिनन्दित कर सम्मान एवं पुरुस्कार दिए गए। इन का नाम राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकारों में बड़े ही आदर से लिया जाता है।

38. पं. बालीराम शर्मा (बाल)

पं. बालीराम शर्मा (बाल) का जन्म 15 दिसम्बर 1918 को कामा (भरतपुर) में हुआ। इन के पिता श्री पं. रामुसुखी है। श्री गिरबल लाल जी को इन्होंने अपना, काव्य गुरु माना है इन्होंने ब्रजभाषा के साथ-साथ उर्दू और खड़ीबोली में भी कविता लिखी है। इन की सर्वप्रथम रचना कक्षा पांच में पढ़ते समय 'स्कूल प्रतियोगिता में कारी है' समस्या पर रचना रची जो इस प्रकार है।

एक तौला बात जापै बपीस मन गर्व करै,

कभी नहीं कोई सन वानी कही प्यारी हैं।

सदा हट करत जो औरन की मानै नाहि

जन्म सौ ही टेव दुर्वचन की डारि है॥

दूसरे के सदगुण कभी चित धारे नाँये

फेर पछतावै रहे नैन जल जारी है।

वाली कहे ऐते चिन्ह जामें मिल जामें सोई

ऐसो नर मूर्ख पदवी को अधिकारी है॥ [157]

उन्होंने अंग्रेजो के समय पर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। और कई बार जेल भी गए। इन में देशप्रेम की भावना का सागर जो कविता के रुप में दिखाई देता है। ये लोगो को देशस्वतंत्रा सग्राम में प्रेरित करते रहे, इन की इस रचना को देखिए

चुंदरिया मेरी ऐसी बनायदै रंगरेज।

आजादी कौ घरे खेच कै बढ़िया दै बँधेज॥

एक तरफ कूँ गांधी बाबा आजादी कूँ खड़े भये।
एक तरफ कूँ वीर जवाहर जेल के भीतर पड़े जाये।
सरदार भगतसिंह फांसी पर हो एक तरफ कूँ अरे भये।
एक तरफ कूँ सुभाष बाबू घोड़े पर हो चढ़े भये।
हाथ तिरंगा झंड़ा जिनके लहराता हो तेज।।
चुंदरिया मेरी...........।। [158]

यह पिगंल शास्त्र के ज्ञाता माने जाते है। पिंगल शास्त्र के लक्षण अनुसार अनेक छन्द लिखे, जिनमें नायक-नायिका भेद, अलंकारों का प्रयोग, प्रत्येक शब्द में अन्त्यानुप्रास के साथ सिंहवलोकन पिंगल के छोटे से छोटे बड़े से बड़े छन्दो की रचना की है। इन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

छन्द मयूर सारनी

'शीश कालकीचलै कटारी, ज्ञान ढ़ाल ते हटा खिलारी।' [159]

इन्होंने काव्य में भक्ति भावना को प्रस्तुत किया तो दूसरी और आधुनिक समस्याओं कुशिक्षा, दहेज प्रथा, जनसंख्या विस्फोट, भष्ट्राचार, दूरदर्शन और संस्कृति पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव जैसे विषयों पर भी अपनी कलम का जादू दिखाया। जैसे

करौगे जब तक ना दहेज कौ त्याग।
गावै देस हमारौ कैसे खुशहाली कौ राग। [160]

इस प्रकार शर्मा जी ने ब्रजभाषा में अपनी भावना को काव्य के द्वारा प्रस्तुत किया। इन की रचना ब्रज रचना माधुरी अत्यंत ही सुन्दर रचना है। जिसके अन्तर्गत ब्रज काव्य सुधा गागरी, ब्रजलोकगीत, सवैया, मत्तगयन्द 7 भगण दो गुरु, किरीट (8 भगण), (सुन्दरी 8 सगंण एक गुरु)मदिरा 7 भगन एक गुरु गंगोदक (8 रगण), गंगोदक, महीधर (28 लघु गुरुक्रम) दुरमिल, सुन्दरी, छप्पय छन्द, अनंग शैखर छंद (लघुगुरु का क्रम)मै की सिहवलोकन (आदि अन्त वर्णमाला), मध्याक्षरी, कमल बन्ध, खड़ग बन्द, मदिरा छंद (सात भगण), कपाटबध, स्तुति पशुराम जी महाराज, दोहा, जिकरी 'गुरुमहिमा', गोपियन जिकरी जिकरी गुरु भक्ति जैसे शीर्षको के साथ 'शर्मा'जी ने बहुत ही सुन्दर अपनी रचना प्रस्तुत की है। जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

कपाट बंध

दिनभर सुन नर गाय कर, राधावर घनश्याम।
नख पर गिरवरधारकर, रखी टेर ब्रजधाम। [161]

सवैया :

भारत भूमि स्वतंत्र भई जिनके बल देशमहान कहाबै।
छूत अछुतहि भेद मिटाकर आपस के सदभाव बनावै।
शासन के हित पंचम सालहि वोटन सौ अधिकार दिलावै।
सोच रहे अपने मन लीडर का विध सौ जनता सुख पावै। [162]

इस प्रकार शर्माजी ब्रजभाषा के धनी पिंगल शास्त्र के ज्ञाता, अखारे के उस्ताद कवि सिद्ध हुए है। साहित्य की सेवा करते रहे। कामवन में साहित्यक संस्था 'अखिल भारतीय साहित्य परिषद, कदम्ब व ब्रजवाणी का आपका संरक्षण प्राप्त है। इनको 30 जनवरी 1992 में राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर ने कामवन में सम्मानित किया गया है। इन का नाम ब्रजभाषा साहित्यकार में बड़े ही आदर से लिया जाता है।

39. सुश्री शकुन्तला रेणु

सुश्री शकुन्तला देवी का जन्म 24 जून सन् 1921 ई. को झालरापाटन में हुआ। इन के पिता पं. गिरधर शर्मा, और माता श्रीमती रत्न ज्योंत्सना देवी है। इन्होंने स्वाध्याय एवं स्वप्रेरणा सौ साहित्य -रतन, एम. ए. (हिन्दी) निजी अध्ययन तथा बी.एड. (बीकानेर से) अंग्रेज़ी फारसी का भी अध्यय प्राप्त किया। और सरकारी शाला में अध्यापिका थी। गर्ल्स हायर सैकण्डरी स्कूल, झालरापाटन के प्रधानाध्यापिका के पद से सन् 1975 ई. में सेवानिवृत्त हो गई है। ये बचपन से ही साहित्य के माहौल में पली बड़ी है। इन्हें ब्रजभाषा के साथ-साथ हिन्दी, उर्दू, फारसी भाषाओं का भी ज्ञान है। इन की तुलना मीरा और महादेवी वर्मा से भी की गई है। इन्होंने बचपन से ही ब्रजभाषा में लिखना शुरु कर दिया था। इन की 'साहित्य प्रारम्भिक गुजराती का इतिहाँस हिन्दी में, उन्मुक्ति' गद्य काव्य सकंलन सीता सीता (काव्यमय जीवन रेखा), 'जय मंगला' काव्य संकलन (महाकवि क्रीटस की नाईटिंगेल का हिन्दी अनुवाद), मधु सजीवन और मुखमास (महाकवि हाफिज की फारसी रुवाईन का अनुवाद) दमला का मारग मानवी लघु कथा-काव्य प्रकाशित कृतियाँ है।

इनकी 'ब्रजमाधुरी' में सेव्य ठाकुर बालकृष्ण की भावानुकभूति, गीति-तेरौ भरोसौ, आ रे दुलारे, पाहि हरे, हे अविकारी, कैसौ कियौ कमाल, इतरावै मती ना, ऐसौ अनुरागी, मै का की सरना जाऊँ?, न पतियाओ, तोहिन बिसराऊ, सुहानी रितु आई, गीत मै तेरे रंग राची, सुनियौ चित्त लगाय, दहेजन पजरै नारी, बालक कृष्ण समाना, मातृवन्दना, भजन, निजी जीवन सौ जुरौ भयौ पद-बनवारी तिहाँरी मै मानी दया, पद, सवैया-रैन ब सेरौ कालचक्र, आत्म-सुत विवेक, क्रोधिता, अनपढ़नारी, जिज्ञासा, कुचक्री, भवमुक्ति, ब्रजाङ्गना, कवित्त-कामना, सरोजनी नायडू, श्री बालकृष्ण, चेतावनी, कृपानिधान, जैसे शीर्षको के साथ ब्रजमाधुरी के माधूर्य को बढ़या है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

सवैया :

जात नही सुषमा बरनी सब ही जन कौ चितचोर चितेरौ।
रम्य वनस्थली में बन देवी के मन्दिर सौ सुखधाम धनेरौ।। [163]

कवित्त :

धन हू न चाहूँ धरा धाम हू न चाहूं सब,
वैभव-विलास ठोकरन ठुकराउ मै।
मान मरजादा त्यौं अनन्त सुख शांति लाभ,
इनकी न चाह चित्त स्वप्न हू में लाऊ मै।
दैन ही चहौ जो देव ! कृपा वरदान निज,
कीर्ति विलगाऊँ भुक्ति-मुक्ति हूँ न चाहूँ मैं।
तेरे चरनारविन्द हृदय लुभावौ रहै,
तेरी नेह छाकी नित प्रेम-भक्ति पाऊँ मैं।। [164]

इस तरह मानवीय संवेदना से जुड़ी राष्ट्रभक्ति, नारी जागरण सम्बाधित कविताए भी रची किन्तु मुख्य विधा तो कवित्त, सवैया, गीति छन्द रही। इन की काव्य कला और उत्कृष्ट भावना की भूरि भूरि प्रशंसा की जाती है। राजस्थान साहित्य अखादमी उदयपुर ने सन् 1993 में इनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व छापा हैं जिसके सम्पादक डॉ. दयाकृष्ण विजयव गीर्य, (अकादमी अध्यक्ष) और लेखक डॉ. गदाधर भट्ट है। इन की कुछ कृतियां अभी अप्रकाशित हैं जो इस प्रकार है। महाकवि हाफिज

के सम्पूर्ण फारसी दीवान का हिन्दी अनुवाद (सयुक्त लेखन सर्व श्री मुल्ला मोहम्मद हुसेन फादर भाई, परमेश्वर शर्मा, सुश्री शकुन्तला रेणु एवं विवेक), समीक्षात्मक निबन्ध मीरा, सूर, तुलसी, महात्मा गांधी, मदन मोहन मालवीय, महारानी पदमनि आदि। काव्य सकंलन-कवन (प्रथम कृति), आरती (गीतकाव्य संकलन) सजला (प्रेमगीतिया), रत्नकण (हँसिकाये) संगीत (भावगीत हाफिज शीरजी की रुवाईया), सीख शादी की बालगीत। इस प्रकार 'रेणु' जी ब्रजभाषा के साहित्य रत्नों में से एक है। जिन्होंने अपने काव्य को ब्रजभाषा में प्रस्तुत कर ब्रजभाषा के साहित्यक कोश की दिनप्रतिदिन वृद्धि की है। अभी वे अपनी द्रष्टिहीन होते हुए भी बोलकर रचना लिखा रही है। जो अत्यंत ही सराहनीय है।

40. डॉ. श्रीमती आशाकुल श्रेष्ठ

डॉ. श्रीमती आशाकुल श्रेष्ठ का जन्म 13 दिसम्बर 1945 को हुआ। इन के पिता श्री ओंकार सरनजी कुलश्रेष्ठ और माता श्रीमती फूलश्री देवी हैं। इन का बचपन बड़े ही लाड़ प्यार में बीता। इन्होंने एम. ए. 1968 बी आर. कॉलेज आगरा से किया। पी.एच.डी विषय भरतपुर तहसीलके लोकगीतो का लोकशास्त्रीय अध्ययन (1977 आगरा विश्व-विद्यालय) बी.एड. 1979 राजस्थान विश्वविद्यालय से किया। 21 मई सन् 1966 को इन का ब्याह श्री जगदीश प्रसाद से हुआ। इन्होंने 1977 से लिखना प्रारम्भ किया। इन्होंने ब्रज संस्कृति पर ज्यादातर लिखा, ब्रजभाषा पर पद्य की अपेक्षा कृत गद्य के क्षेत्र में इनका रुझान अधिक रहा। इन्होंने अखिल भारतीय साहित्य परिषद द्वारा आयोजित गोष्ठी में 'हिन्दी भाषा शिक्षण बनाम लोक भाषा-शिक्षा विषय पर पत्र-वाचन किया, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी की और से आयोजित ब्रजभाषा कवयित्री व लेखिका सम्मेलन में 'ब्रज लोक गीत की संस्कृति और साहित्यक महत्व' विषय पर पत्र वाचन किया। इन का लेखिका सम्मेलन में सक्रिय भाग रहा जो इस प्रकार है। (1) राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित राजस्थान लेखिका सम्मेलन उदयपुर, सम्मेलन स्थल कृषि विस्तार निदेशालय मोहन लालसुखडिया, विश्वविद्यालय सभागार (20-1-84 से 21-1-84) संयोजक डॉ. सुधा गुप्ता (2)सम समायिक रचनाओं में द्वन्द्व और राजस्थानी लेखिकान की वैचारिक भूमिका विषय पर चर्चा में भाग लिया। (3) राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित लेखिका सम्मेलन

कोटा दिनांक 6-7-8 अक्टूबर 1984 में भाग लिया।

साहित्य के क्षेत्र में भी इनका सक्रिय सहयोग रहा जैसे अखिल भारतीय साहित्य परिषद शाखा भरतपुर में 1986 से 1990 तक साहित्य सचिव पद पर कार्यरत रहे।

आकाशवाणी के क्षेत्र में भी इनका साक्रिय भाग रहा जैसे वार्ता-लोकगीत में होली आकाशवाणी आगरा से प्रसारण दिनांक 23-2-91 पिरचर्या - 15-4-90 को पुरुष बनाम महिला समानता की लड़ाई, साहित्यिक की 5-9-84 को भरतपुर क्षेत्र के लोकप्रिय गायक आकाशवाणी मथुरा, 2-11-84 को भरतपुर के लोकगीत बोलते है (वार्ता) आकाशवाणी मथुरा से प्रसारित की गई।

इन्होंने राजस्थान के पूर्वांचलीय परिवारिक एवं लोक संगीत के रगारंग कार्यक्रम का आयोजन एवं निर्देशन भी किया जैसे दिनांक 4-1-89 को रविन्द्र मंच जयपुर, में श्री गिरीजाप्रसाद तिवारी (तत्कालीन विधान सभा अध्यक्ष) द्वारा उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में भरतपुर की 18 महिला कलाकार द्वारा रंगारग कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। दिनांक 9-3-91 को रवीन्द्र मंच जयपुर के खुलै मंच पर ब्रजसुर मण्डल के तत्वाधान में ब्रज होरी कार्यक्रम में भरतपुर की 5 महिला कलाकार द्वारा आशा जी के निर्देशन में प्रस्तुत किया।

इसके अलावा इन की सार्वजनिक सहभागिता भी रही जैसे नई शिक्षा नीति कैम्पस राजकीय उच्च मा. विद्यालय नगर (भरतपुर) प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह की अध्यक्षता, राजकीय माध्यमिक विद्यालय (नंदबई) में एस. यू. पी. डबल्यू, कैम्प का उद्घाटन, रा. मा. विद्यालय चितौकरी के वार्षिकोत्सव (5 मार्च 1982) पर समारोह की अध्यक्षता अभियान भरतपुर के अन्तर्गत जिले के साहित्यकार एवं कवियों की गोष्ठी (16-2-92) में भाग लिया। और गणित समिति की सदस्य चुनी गई।

इन के प्रकाशित लेख है। (1) ब्रज के रंगीले पर्वत के रंगीले लोकगीत- ब्रज की कला और संस्कृति विशेषांक (सम्पादक - डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, प्रकाशक राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर अप्रैल 1988) (2) माह फागुन में भरतपुर ब्रजनारी कौ लोकजीवन (शोधयात्रा) 'ब्रज शतदल' त्रैमासिक पत्रिका फरवरी 1986 (3) ब्रज के लोकगीत तथा लोक संगीत-ब्रज होरी स्मारिका, 24 मार्च 1986 -

गांधीनगर क्लब, एवं ब्रज सुर मंडल जयपुर (4) प्रतीक्षा (एंकाकी) आधुनिक ब्रजभाषा गद्य, सम्पादक -डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक प्रथम संस्करण 1990 प्रकाशक, राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी जयपुर (5) अनपढ़ (एंकाकी) (6) कायस्थों का समाज में स्थान (खड़ीबोली) (7) अष्टछाप काव्य में लोकतत्व (8) लोकगीत तथा लोक संगीत (खड़ीबोली)

इन की रचना 'ब्रजमाधुरी' के अन्तर्गत ब्रजनारी लोकगीतन कौ सस्कृतिक अरु साहित्यिक महत्व, ब्रजलोक माँहि समानन कौ मल्हार, रसिया गायकी अरु लोकजीवन, एंकाकी-दानौ री मारयौ तैने असुर संहारौ, पूर्वाचंलीय लोकगीतन के विविध रुप, जैसे शीर्षको के साथ अपनी रचना प्रस्तुत की। जो ब्रज के माधुर्य को प्रस्तुत करती है। इन्होंने भरतपुर अचंल के लगभग 2000 गीतों का संकलन किया। और अगामी भावी कार्यक्रम है कि ब्रज क्षेत्र के विवाह पर टेली फिल्म बनाने की योजना है। इस प्रकार आशा जी राजस्थान के कविरत्नो में से एक है। जिन्होंने ब्रजसंस्कृति के साथ ब्रजभाषा के साहित्य कोश की वृद्धि की है।

(41) कवि अर्जुन लाल

कवि अर्जुन लालजी का जन्म 26-11-1936 ई. को करौली (राजस्थान) में हुआ। इन के पिता श्री श्यामा लाल और माता श्रीमती ल्हौरी बाई है। इन के परिवार में पत्नी श्रीमती सौना देवी, पुत्र- भगवानदास, नरेशकुमार और प्रेमसिंह, पुत्री- इन्द्रा और अनीता है। इन्होंने प्रौढ़- शिक्षा प्राप्त की और ठेकेदारी (सरकारी) भवन, पथ व बाँध निर्माण कार्यरत है। इन्होंने लिखना प्रारम्भ वर्ष की आयु शुरु कर दिया पर सन् 1987-88 से वे दो अर्थ वाले, तीन अर्थवाले, उलटवासी, पद, भजन और पैरोड़ी लिखने लगे। ब्रजभाषा में इन्होंने 1960 से कविता लिखना आरम्भ किया। इन की प्रथम रचना कुछ इस प्रकार है।

'केशव का विधि तुमकूँ पाऊ?
लेखिलेरोज लक्षण नाँही आमे, क्या मैं जनत कराऊँ।
निराकार साकर कहे को, का कूँ मै अपनाऊ?' [165]

इन्होंने ब्रजभाषा में भजन पद, गीत, दोहा, चौपाई, रसिया, मल्हार, होली, कीर्तन आदि जैसे छन्द की रचना की।

इन्होंने दोहे सबसे अधिक लिखे 23000 दोहा लिखे है, करीब दो सौ चौपाई इसके अलावा दस-दस, पाँच-पाँच अन्य छंद लिखे है।

दोहों में इन्होंने मानवताधर्म, धार्मिक सर्कीणता, क्षेत्रवाद, भाषावाद से मुक्त होकर यथार्थ का चित्रण किया, क्रान्ति का सन्देश, प्रगतिशील, विचारों का प्रस्तुत किया।

अर्जुन जी, ने जीवन के हर एक पक्ष पर कलम चलाई परन्तु ज्यादातर आजकल की राजनीति, समाज और संस्कृति पर लिखा है। इन को हम कबीर भी कह सकते है। इन्होंने कबीर की तरह ढ़ोग का विरोध, देवी-देवता को भपोग लगाने पर करारी चोट, जात-पात का भेद, मजूदर किसानो के पक्षधार, बुद्धिवाद पर करारी चोट धनवान का विरोध, राजनेता के भ्रष्टाचार और देश की हर समस्या पर इन्होंने लिखा है। जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

अल्ला, ईशुर राम कौ, अर्जुन नाम नकेल।
डालै पंडित, मौलवी, बाँधे ऊंट पुछेल।। [166]

✻ ✻ ✻

श्रमिक बत्ती भाँति है, कृषक तेल समान
दोनो मिल दीपक जले, और अधेंरो जान।। [167]

✻ ✻ ✻

बीड़ी बिच्छू भाँति है, सांप भांट सिगरेट।
जर्दा जहर समान है, पान मसाले मेट।। [168]

इन्होंने मुख्य रुप से ब्रजभाषा में दोहे लिखे है। इन के अनेक दोहावली, कीर्तनमाला और खनिया बारहमासी प्रकाशित साहित्य है।

इन की रचना 'ब्रजमाधुरी' के अन्तर्गत इन्होंने 'दो आखर-सौ ज्ञान' शीर्षक देकर विभिन्न विषयों पर 206 दोहे, और कुछ चुनिंदा और दोहा-244 रचे हैं। इसके अलावा अर्जुन लाल जी के दोहे पर कुछ साहित्यकारो के विचार है। जिनमें है। श्री त्रिलोचन शास्त्री, अध्यक्ष मुक्तिबोध, सृजनपीठ, डॉ. हरी सिंह गौड़ विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.) डॉ. शीतांश भारद्वाज, विद्या विहार, पिलाना (राज.) श्री भीष्म साहनी, पेटल नगर दिल्ली, श्री नंद चतुर्वेदी उदयपुर (राज) श्री कर्मेन्दु शिशिर हनुमान नगर

पटना, डॉ. महेन्द्र भानावत उदयपुर (राज)के द्वारा अर्जुन लाल जी के दोहे पर विचार प्रस्तुत किए गए है। इन के दोहो के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

पराधीन पाथर गिनौ, खुद का भी खुद नाँय।
जैसे पेड़ खजूर कौ, खुद की खुद ना छाँय॥ [169]

✻ ✻ ✻

अर्जुन राजन राज मै, मन जैसे कानून।
मानव के तन ते नही, तजै पेट भरे चून॥ [170]

इस प्रकार कवि अर्जुनलालजी ब्रजभाषा के चतुर चितरे है। इन्होंने ब्रजभाषा में बीस हजार दोहो की रचना कर अपना नाम गिनीझ बुक में लिखाया। दूरदर्शन आकाशवाणी से काव्यपाठ का प्रसारण भी होता है। इस तरह राजस्थान के कविरत्नों में इन का नाम आदर के साथ लिया जाता है।

42. श्री रामनाथ कमलाकर

श्री रामनाथ कमलाकर जी का जन्म भाद्रपद 10 सवंत 1980 को कोटा में हुआ। इन्होंने श्री हरनाथजी और श्रीनन्द चतुर्वेदी को अपना काव्य गुरु माना है। इन के काव्य में ओज, माधुर्य, प्रसाद ये तीनों गुण और नव रस मिलते है। इन का काव्य भक्ति के रस में डूबा हुआ है। इन्होंने प्रेम की सहजता, एक निष्ठता और अनन्यता का समन्वय काव्यों में परिलक्षित होती है। प्रेम और भक्ति का मधुर का संगम मिलता है। सन् 1943 में शिव वन्दना के रुप में इनकी यह रचना दष्टाव्य है -

गोद में गनेस शेष खेलत समोद सीस,
छूट-छूट छहरैं तरंग गंग पानी की।
कहै 'कमलाकर' विलोचन तृतीय ताप,
मोचत मरीचिक मयंक सुधा सानी की।
मुंड-मुंड माल के सजीव हवै सराहै भाग,
झुंड़-झुंड़ झाँकी करै देव सूल पानी की।
मंद-मंद बाजत पदारविन्द चापिबै में,
बीन सी चुरीन श्री भवानी महारानी की॥ [171]

इन के काव्य में वियोग में प्रेम का आनंद वियोग में तपस्वीतप, रासलीली,

बासूरिया की धुन, गोपी उद्धव प्रसंग, होरी जैसे विषयों पर काव्य की रचना की।

कमलाकर जी और कविता एक दूसरे के पूरक है। इन्होंने अपनी कविता के बारे में लिखा है।

गुन-गुन गोविन्द के गहने पहिर गात
जोई सोई गात जान कौन जोग साधा है।
छंद घुघरुन बाधँ नाचत निरन्तर ही
मेरी कविताई जाने मीरा है कि राधा है। [172]

***

मेरी कविता हाय बाबरी जन ही की
केतिक सिखाई तऊ बार-बार भूलै है।
बंसी वन कबौं कान्ह प्यारे के अधर चूमे
गोबिन्द गरे में गजरे सी कबौ झूलै है। [173]

इन को राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर ने विशिष्ट साहित्यकार के रुप में सम्मानित किया। मित्र परिषद झोटावाड़ा में महाकवि बिहारी पुरुस्कार दिया, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया।

इन के प्रकाशित ग्रन्थ है। एकोऽहम्, हंस तीर्थ, मेरे गीत तुम्हारे चरन, दिलकश दौर और 'ब्रज रचना माधुरी' आदि की रचना की है।

43. कविराज नन्दकिशोर 'ब्रजदास'

कविराज नन्दकिशोर 'ब्रजदास' जी का जन्म दिनांक 1 जनवरी 1944 को राजस्थान के पूर्वांचल (बिशनपुरा) में हुआ। इन के पिता श्री हिंगलाजदान सिंह जयपुर रियासत के भूतपूर्व जागीरदार और माता श्रीमती सुखाबाई है। इन्होंने इनके दादा ठाकुर ईश्वरीदान हिंसजी डिंगल, पिंगल, उर्दू, फारसी आदि अनेक भाषा के प्रतिष्ठत कवि जिनकों अपना काव्य गुरु माना है। इन्होंने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त करी और राजस्थान के बिजली विभाग में कार्यरत है। इन के परिवार में इनकी पत्नी श्री साँयर कँवर और एक पुत्र, एक पुत्री है। इन्हें बचपन से ही काव्य में रुची थी। शुरुआत में इन्होंने, उर्दू में लिखना शुरु किया, फिर ब्रजभाषा में पद लिखना शुरु किया। ब्रज तथा हिन्दीभाषा और खड़ीबोली में पद लिखने के साथ-साथ

उर्दु और अंग्रेजी में अनेक 'कलाम' व 'पोयट्री' लिखते है। कवि व गीतकार 'ब्रजदास'जी अपने जयपुर चारण सभा के महासचिव के पद पर एक लम्बी अवधि तक सदैव निर्विरोध निर्वाचित रह कर समाज सेवा करी। चारण समाज के अतिरिक्त जयपुर के गौड़िया सम्प्रदाय के साथ-सात अन्य शीर्षस्थ सम्प्रदायाओं में पूर्ण सम्मान प्राप्त है। श्री ब्रजदास जी को 'ब्रजभाषा अकादमी राजस्थान (जयपुर) द्वारा अभिनन्दित किया गया, राजधानी की गरिमामयी संस्था 'भारती-मन्दिर' से सम्मानित तथा 'साहित्यकनिधि की उपाधि से अलंकृत किया गया। और राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी सन् 1995-96 में 24-12-95 को सूर्यनगरी जोधपुर से सम्मानित किया गया।

इन्होंने शुरुआत में उर्दू भाषा में नवाब रोमानी उपनाम से एक लम्बे समय तक उर्दू में रचना रची। फिर भक्ति-साहित्य की और रुझान हुआ अष्टछाप के कवि सूरदास, नन्ददास, कुम्भनदास आदि के साहित्य को पढ़ कर ब्रजभाषा और भक्ति साहित्य के काव्यों की और इनका ध्यान आकर्षित हुआ और ब्रजभाषा में भक्ति साहित्य की रचना शुरु कर दी। ब्रजभाषा में श्री हरिनाम चलीसा, श्री सदगुरु चालीसा प्रकाशित कृतिया है। श्री हरिनामा शतक 108 पद (पाण्डुलिपि तैयार), श्री हरिलीली शतक श्री सदगुरु शतक ब्रजभाषा में अप्रकाश्ति कृतिया है। इन्हेंने अपनी कृतियों में हरि को अनन्य भक्त समझकर, कला सौंदर्य शब्द सौंदर्य, पद-सौंदर्य, वाक्य-सौंदर्न्य और नादसौदर्य तथा ध्वन्यात्मकता, गुरु की महिमा, पापी हृदय में उठे प्रयाशित की भावना, व्यंग्यपूर्ण भाषा का प्रयोग कर ब्रजभाषा में अनूठे काव्य की रचना की है। इन की 'ब्रजरचना माधुरी' इन में से एक है जिसके अन्तर्गत श्री हरिनाम-शतक, विनय-श्री हरिलीला शतक, श्री निताई- और शतक, सन्त महिमा, उद्धव संवाद, परहित, पश्चाताप, उपांलम्भ विरह पर पद रचना की। पहेली और विनय जैसे शीर्षकों के साथ अपनी रचना प्रस्तुत की। जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

मै तो मगन फिरूँ दिन-राती।
कोऊ काल में छिन न अघाऊ, सतगुरु के गुन गाती।।
सवन-सुरंग शब्द की रासी, प्रविस भईसब भाँती।
हदृय कोश में धरी भई है, श्री गुरुवर की थाती।।
रवि-सीस-तारा-उड़गन-बिजुरी, जहाँ-तहाँ दमक दिखाती।

मोर उर उजियार भयो है, बिना तेल अरु बाती॥
कोई मरम समझ नहीं पावै, बात कहै मन भाती।
लोग कहै मैं भई दुख्यारी, मै डोलूँ मुस्काती॥
'बिरजदास' जग-नीत बावरी, नैक समझ नही आती
कोऊ कहै कुल तारनवारी, कोऊ कहै कुलधाती॥ [174]

* * *

जारे देख लई ठकुराई
औरन प्रति निभावत डोलत, हम ते करत चतुराई॥
कुब्जा नेह लगत अति प्यारो, ताहि महल नित जाई।
हमारी देह विरह में जारत, औरन को सितलाई॥
मधूपुरी के मधुप बन गये, दीन्हो बिरज भुलाई।
कुलिश-हदृय बन बैठे कान्हा, नहि त्यागत निठुराई॥
हम भोली-भाली बप्रजगोपी, कहा करे कित जाई।
साँच सुनी है कौन जगत में, जानत पीर पराई॥
का जाने अभ को दिन धारि है करुणा कान कन्हाई।
का पै जाय गुहार सुनावै, निठुर भये यदुराई॥
हा! 'ब्रजदास' भई गति उलटी और रहे सुखपाई।
अपने जन दर्शन के काजे, तड़प-तड़प रह जाई॥ [175]

इस प्रकार ब्रजदास जी ब्रजभाषा और बहुआमी प्रतीमा के धनी है। इन्होंने ब्रजभाषा में अनूठी रचनाएँ रची, साथ ही उर्दू में भी 'दीवान ए-नवाब' (पाण्डुलिपी तैयार) प्रकाशित कृति है। राजस्थान के ब्रजभाषा कविरत्नों में इन का नाम बड़े ही आदर से लिया जाता है।

44. श्रीमती शान्ति साधिका जी

श्रीमती शान्ति साधिका जी का जन्म अषाढ़ कृष्ण पक्ष की पड़वा सं. 1971 वि. (सन् 1914 ई.) को झालरापाटन में हुआ। इनके पिता पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' राजगुरु झालवाड़ राजस्थान और माता श्रीमती रत्न ज्योत्सना देवी है। इन्होंने अपने पिताजी पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' को अपना काव्य गुरु माना है। इन के घर का

वातावरण बचपन से साहित्य में रचा बसा है। इन का भी काव्य में रुझान बढ़ता गया। इन्होंने अपना परिचय इस प्रकार दिया है।

नवरत्न गिरिधर शर्मा की प्रिय पुत्री हूँ मैं।
माता-रत्न ज्योत्सना की कोरव उपजी हूँ मैं॥
बन्दु ईश्वर के संग खेल-खेल बड़ी भई।
बहिन शकुन्तला की स्नेही-भागिनी हूँ मैं॥
विमला परमेश्वर दो छोटे भाई-बहिन हैं मेरे।
शक्ति, प्रभा, ज्ञानवती की सुधिकर जननी हूँ मैं।
माननीय पंड्या कुल-भूषण-स्नेही-महा-
राधा गोपाल जी की जीवन संगिनी हूँ मैं। [176]

इन्होंने कक्षा आठ से ही कविताएँ लिखना शुरु कर दी। कविता में इनका नाम शान्ति है। फिर शान्ति साधिका हो गया। इन की सबसे पहली रचना इस प्रकार है।

जारे! जारे! कन्हैया! जनम के छली!
अरे ! जारे!! कन्हैया...
जनमत ही मैया-बाप कौ छँड़ि गयौ
जाय बसाई गोकुल की गली तैनैं जाय बसाई गोकुल की गली
जारे ! जारे ! कन्हैया ....
प्रीति-दुरंगी सभीकू खली, तेरी प्रीति-दुरंगी सभी कूं खली।
जारे! जारे! कन्हैया ! जनम के छली
जारे! जारे! कन्हैया ! जनम के छली॥ [177]

खड़ी बोली की पहली रचना है।

नहीं है यह संसार असार।
अलौकिक पावन पुण्यागार।
....
सुनो मेरे अन्तर-उद्‌गार।
नही है यह संसार असार। [178]

इसके अलावा इन्होंने गुजराती और हाड़ौती में भी कविता लिखी है। इन की

सभी कविता में विविध विषय जैसे देशभक्ति, ईश्वर वन्दना, समाज सेवा, नेता के गुणगान और भारतीय नारी के स्वरुप को चित्रण किया हैं इन्होंने अभिलाषा, चिन्ता, स्मरण, गुनकथन, उद्वेग, प्रलाप, व्याधि, उन्माद, जड़ता मूर्छा मरन से युक्त वेदना के भाव से औत प्रोत-गीतिकाएँ लिखी है जो ब्रजभाषा परिस्कृत ब्रजभाषा हैं, व्याकरण सम्मत ब्रजभाषा है। इन की रचनाएँ इस प्रकार है हीरा और लाल (अप्रकाशित) कैसे भूलू (सस्मरण-अप्रकाशित) स्वप्न भी साकार हुआ करते हैं। (ऊषा अनिरुद्ध की कथा पर आधारित) जीवन यज्ञ (अप्रकाशित), कैसे भूलू (सस्मरम-अप्रकाशित) स्वप्न भी साकार हुा करते हैं। (ऊषा अनिरुद्ध की कथा पर आधारित) जीवन यज्ञ (अप्रकाशित), सती सुकन्या (अप्रकाशित) जसमा ओड़नी (अप्रकाशित), बुन्देलखण्ड की महारानी सरिधा (अप्रकाशित) उर्दू की शेरों और शयरी, शक्तिकुमार स्मृति पुष्प-प्रथम, शक्ति कुमार स्मृति पुष्ट-तृतीय, शान्ति सुधा, शक्ति कुमार स्मृति, पुष्प-तृतीय अन्तर प्रेरणा, शान्ति सुधा इन की रचनाएँ है। इन की 'ब्रजमाधुरी' रचना के अन्तर्गत प्रकटीकरण-1, पालना -2, बाल-हठ 5, उपालँभ-लीला, उपालँम , जैसे शीर्षकों के साथ अपनी रचना प्रस्तुत की है। जिसमें कृष्ण के जन्म से लेकर उपालंभ तक को अपनी रचना के माध्यम से ब्रजभाषा में बड़े ही सुन्दर ढ़ग से प्रस्तुत किया है। जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

सोने कौ पालना, मोतियन की डोरी।
फूलन कौ पलना, रेसम की डोरी।
झूले नन्द-नन्द, झुलावै नन्द गोरी॥
सोने को पालन रे..... [179]

*** * ***

मैया! नहीं पीऊ दूध कौ घूट।
मोहें चन्द्र-खिलौना दै लूट। मैया नहीं....
मैया ! धरती पर चन्द्र बुलाऔ।
वाहै दूध-कटोरा पिवावौ।
...
...

हाय ! मोहे चन्द्र खिलौना दै लूट।
मैया ! नहीं पीऊँ दूध कौ घूँट। [180]

इस प्रकार 'शान्ति साधिका' जी ब्रजभाषा काव्य नवरत्नों में से एक है। जिन को राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित कियाजा चुका है। इन ने पद्य के साथ गद्य काव्य की भी रचना की। सन् 1973 में गोवर्धन पूजा पर गद्य काव्य की रचना की। इस प्रकार साधिका जी ब्रजभाषा के साहित्य को को अपने ज्ञान के भण्डार से वृद्धि करती रही है।

45. श्री भँवरलाल तिवारी

श्री भँवरलाल तिवारी का जन्म 7 सितम्बर 1911 को हुआ इन के पिता श्री लक्ष्मी नारायणजी ज्योतिशाचार्य और माता श्रीमती गट्टूबाई है। स्व. श्री गुलाबचन्द्र से प्रेरित होकर इन्होंने बचपन से ही कविता लिखना शुरु कर दिया था। इन के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित होकर श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल लिखते है।

डग झालावाड़ माहि, लक्ष्मी के घर जाए,
जाने सुरसति मातु, जीभ पै बिठारी है।
ब्रजभाषा माहि नित, साहित्य सृजन, कियौ,
प्रेरना दई है डग, फली फूलवारी है।
जाकी बात राजान नै, मानी परजा नै मानी,
सातो जात साहित्य पै, रह्यौ बलिहारी है।
जुरौ है जमीन सौजूं, फूलौ है करौ है खूब,
झालावाड़ कौ बिहारी, भवँर तिवारी है। [181]

इन्होंने उर्दू और अंग्रेजी में मिडिल पास कर, प्रथमा साहित्य विशारद और विशेष योग्यता की परिक्षा पास कर अध्यापक बन गए। फिर अध्यापन का कार्य छोड़ फर्स्टगेड डाक्टर्स की एम. डी. एच. की डिग्री लेकर प्रेकटिस करने लगा। सन् 1942 से देश भक्ति के गीत लिखना शुरु कर दिए। झालवाड़ा, राजपुर, भवानीमंडी, चौमहला, कोटा, उज्ञैन, मैसौदा, पचंपहाड़ डग आदि जगह पर कविता सुनाने जाते रहे।

इन्होंने चीन युद्ध, पाक युद्ध, बाँगला युद्ध, लियाकत अली, भट्टो वेनजीर,

शेख अबदुल्ला, समाजवाद, जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी, 15 अगस्त, चंड प्रतिमा, गोवा, राजा परीक्षित, जौहर, काशमीर, भारत आदि पर लिखा। पद्य के अलावा इन्होंने गद्य में भी रचनाएँ रची। पं. गिरधर शर्मा नवरत्न पर लेख लिया। इसके अलावा बलिदान कौ बकरा, युवको उठो, पिता-पुत्र के कर्तव्य, गाड़ी चली गई, पिंजरा व तोता, ब्राह्मणों की दशा, प्रकाश को स्वागत, विधाता कृष्णा कौ उपालंभ आदि पर कुछ छोट लेख लिखे है।

इनकी ब्रजभाषा में रचित 'ब्रजमाधुरी' रचना के अन्तर्गत वदंना में गणपति, शंकर, कृष्ण वंदना, माँ-दुर्गा, जय-जय शिव तांड्व, रामायण, सेवा भाव, बसन्त, ग्रीष्म, पावस, शीत, ऊधव- गोपिका संवाद, सवैया शृंगार रस, पीपल पूजन, मानिनी नायिका, वचन विदग्धा नायिका, काग (आगतपतिका नायिका) परकीया अन्य संयोग दुःखिता नायिका, दृग, स्वकीया खंडिता नायिका, आगतपतिका नायिका, अज्ञात यौवन नायिका, रुप गर्विता नायिका, प्रेमगर्विता नायिका, शृंगार परक दोहा (कोमलता) सिंगार (दोहा), विरहिनी, चित्र के आधार पै, विरहनी के सोरठा, विरही-विरही की व्यथा (सवैया) समस्यापूर्ति में नेता (कुंडलिया), भूमि कशमीर की, मोरे मन में समायौ है, और कलपाओ ना, जगत हसंई है, रहिं ते अब तौ कछु आस बँधी है, भूलि गये अब लोक भलाई, मिलिगौ स्वराज पै सुराज मिलि पायो ना, दीप मालिका, राखी है, जानकी चली गई, मनोहरकी, पावस अँधेरी में, विविधा में भारत छोड़ो आन्दोलन 1942. इस प्रकार इन्होंने ब्रजभाषा साहित्य में अपना विशिष्ट योगदान देते हुये ब्रजभाषा साहित्य को नवीनतम दिशा प्रदान की।

46. गौरी शंकर आर्य

श्री गौरी शंकर आर्य का जन्म 21 अगस्त 1921 में हुआ। इनके पिता श्री भँवरलाल और माता श्रीमती मोत्याँबाई हैं इन्होंने उच्च शिक्षा ग्रहण की। इनको साहित्य सृजन की प्रेरणा रामचरित मानस के तुलसी के छन्दों और बिहारी और रसखान के सवैया से प्रेरित होकर काव्य सृजन शुरु किया। इनकी ब्रजभाषा की पहली रचना इस प्रकार है।

वृषभानु लली भरिबे जल कूँ
घट लै धरते इकली निकली।

अपने मन में डरती-डरती,
मग में अति चौकति जाति चली।
तब कुन्जन ओट ते आ मन मोहन
अनि गही भुज चौकि अली।
मुख खेलि पुकार चही करिबो,
मुख पै मुख दे चुप कीन्ही लली। [182]

इन्होंने अपने काव्य में परम्परागत विषयों का समावेश किया। जैसे राधा-कृष्ण की रहसि - केलि, गोपी से छेड़-छाड़ प्रीतम से विछाह, होली, संयोग-शृंगार में उत्सुकता, आनन्द, लालसा, दर्शनेच्छा, मिलन, विह्वलता, वियोग-शृंगार में पीड़ित नायिका, प्रकृति का वर्णन उद्दपन के रूप में जैसे विषयों पर ब्रजभाषा में बहुत ही मधुर रचना रची है। जैसे -

सखि बीन बजा न दई लई बीन नवीन कली अनही निकली
भरतार सितार न देद अरी, भरतार बिना नाहिं बात भली
कोउ साज नहीं मन भावत हैं जब साजन हू घर नाँहि अली
मति जाईयौ तू निकरै न बनै सकरी है सखी यह प्रेम गली [183]

इन्होंने ब्रजभाषा में परम्परागत विषयों के अलावा परौडी की रचना की। परौडी को नए अंदाज में व्यंग्य के साथ प्रस्तुत किया। जिनके विषय आधुनिक जीवन की समस्याओं जैसे शिक्षा जगत में विद्यार्थी शिक्षक, परीक्षार्थी, नकल, ट्यूशन और शिक्षा जगत में व्याप्त कुरिती, चुनाव चर्चा, मंत्रियों से शिकायत दलबदलू भक्ति राजनीति में फैली गंदगी समाज की गरीबी बेरोजगारी दहेज नशा मुकदमा, जुआजैसे विषयों का समावेश कर इन पर तीखे व्यंग्य के वारों से लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। जैसे कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

कविरा संगत साधकी और चिलम की वास।
एक फूंक मिल जाय तौ समझ सुरग में वास॥ [184]

इस प्रकार गौरी शंकर जी ने अपने साहित्य में दोहा, कुंडली, कवित्त, सवैया सबका समावेश कर ब्रजभाषा में अनूठा काव्य प्रस्तुत किया है। इनकी रचना ब्रज-रज-कन में इन्होंने अछूतोहार (समस्यापूर्ति), स्त्री शिक्षा (समस्यापूर्ति) होली श्री कृष्ण

जन्माष्टमी 15 समस्यापूर्ति पावन में, मिसरी द्विअर्थक सवैया, मुक्तक तकनीकी तालीम सूखो सावन, हरियाली अमावस, भक्ति पद, फागुन का प्रभाव, बसंत की विरहन की तीज, रक्षा बन्धन, जन्माष्टमी पर्व, आवाहन, पावस हिडोरा, होरी कौ रंग, बसन्त कौ रास गीत, माता लक्ष्मी का उलाहनौ, पैरोडी, विनय पत्रिका, महात्मा तुलसी सौ क्षमा याचना के संग, परिच्छा के परिच्छक की पत्नी के नाम, महात्मा सूरदास सौ छमा याचना के संग, नापित के प्रति (हास्य), वन में, भारत-पाक युद्ध 1971, सवैया स्थित प्रज्ञ, सवैया (याचना), मकर संक्रान्ति, कामना, गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती समस्या मानस की अहिल्या द्वारा राम स्तवन, होरी के दोहे, बरवै छन्द (विरहनी गोपी-वचन ऊधौ सौ, ग्वाल वचन ऊधौ सौ, एक व्यंग्य, पौस कोको महिना (वियोग पक्ष) (संयोग पक्ष) ब्याज स्तुति, ऐसे नयन तिहँरि सुमुखी (गीत), काव्य कौ हेतु, हतासा (व्यंग्य), सजला विहहिनी, होरी, होरी की गारी, हैदराबाद विजय।

समस्या पूर्ति – कर्तव्य हमारे, प्रारंभिक रचना, ग्रीष्म सखी वचन स्याम सौ, कामना झालवाड़ 1945, अभिलाषा, गोआ विजय एक पथ द्वै काज, समापन न्याय तुला के निमित्त आसका, दृढ़ विश्वास, स्वागत कुसुमारकर के सहचर संवतत्सर नव वर्ष ।

इस प्रकार ब्रज-रज-कन में आर्य जी ने ब्रजभाषा में मधुर रचना कर ब्रजभाषा के साहित्य कोष में वृद्धि की है। जिनके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

तरु के तर खरी अरी झरी बीच कोइ को,
परसि के सरीर सिह रायौ समीर ना।
घूँघट सभारे घट धारे पनहारिन के,
बड़ी-बड़ी बूदन ते भीगे कहूँ चीर ना।
नांहि पीर जागी टेर सुनि-सुनि पपीहा की,
सीतल पुरवैया के लागे आलि तीर ना।
ताप ते तपायौ तन मन हू तरसायौ वै,
आई बरसात बरसायौ नेकुं नीर ना। [185]

* * *

मुख गुलाल-मण्डित मुदित, हँसी नवेली नार।
ज्यों बसन्त के बाग बिच चटक्यौ पक्यौ अनार॥ [186]

47. श्री बनवारी लाल सोनी

श्री बनवारी लाल सोनी का जन्म 14-01-1944 मकर संक्रान्ति को अटूस जिला आगरा उ.प्र. में हुआ। इनके पिता स्वर्गीय श्री प्रहलाद जी रामायणी हैं, इन्होंने वर्ष 1965 में शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित रूरल सर्विसेज डिप्लोमा किया, और वर्ष 1970 से कार्यालय महालेखाकार (ले.प.) राजस्थान जयपुर में कार्यरत है। ये भारतेन्दु हरीशचन्द्र, रसखान, घनानंद श्रीधर पाठक, सूर तुलसी, गोपाल प्रसाद मुद्‌गल नाथूलाल महावर, मुकट सक्सेना, रमेश सजल एवं रामनाथ कमलाकर से प्रभावित रहे हैं। इनके काव्य से भक्ति भावना और आधुनिक समस्या दोनों देखने को मिलती है।

भक्ति भावना में रामकथा, राम भक्त हनुमान जी की जीवनी, कृष्ण-सुदामा का वार्तालाप, शबरी की भक्ति, भगवान शंकर, तुलसी की रामभक्ति देखने को मिलती है आधुनिक समस्या में देश की हरएक समस्या को अपने काव्य में प्रस्तुत करने की कोशिश की है। जैसे मँहगाई, दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार ऑफिस में चल रहे भ्रष्टाचार, पाश्चात्य सभ्यतदा का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव, पैसों के पुजारी, नेताओं के ऊपर व्यंग्य जैसे विषयों का समावेश अपने काव्य में किया है। जिनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

क्लर्क होय तौ लाख में, अफसर कू द्वै लाख।
बिना नोट रिश्तौ नहीं, छानी जग की खाक॥ [187]

* * *

नेता ऐसौ नाम है जामै जगत समाय।
बिन मेहनत तकलीफ ये, माल चकाचक खाय॥
माल चकाचक खाय, वोट कू घर-घर जाबै।
जीत जान के बाद, सबन सौ आँख चुराबै।
कट सोनी कविराय जोर ते भाषन दता।
तारनहारौ देस नाव कौ केवल नेता। [188]

इन के काव्य में व्यंग्य भी देखा जा सकता है। इन्होंने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अन्याय, अचनाार और विद्रुपता पर करारा व्यंग्य प्रस्तुत किया है। दहेज

प्रथा, अस्तपताल की दुर्दशा, डाक्टर, नर्स, कम्पाउन्डर चपरासी जनता को लूटते, दफ्तर में व्याप्त दुर्दशा, महँगाई की मार, रेल यात्रा पर व्यंग्य युवकों पर व्यंग्य, आज के स्कूल और पढ़ाई पर व्यंग्य प्रस्तुत किया है। जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

कम्पोडर औ नर्स कूँ।
जब तक मिलै न दाम॥
तब तक रोगी कूँ सखा।
मिले नही आराम। [189]

* * *

ढ़ीली सी कमीज काहू सरकस के जोकरसी।
गरमी परी गरे बीच चीर लटकाई है॥
पाँच रुपा जूतन की पालिस पै वार देतु
राम जानै कोलेज में होति का पढ़ाई है॥ [190]

इस प्रकार सोनी जी ने अपने काव्य में ब्रजभाषा में सभी विषयों का समावेश कर अपने काव्य को अनूठा प्रस्तुत किया है। इन के प्रकाशित ग्रन्थ रामकथा (काव्य) वर्ष 1988, पत्र-पत्रिकाओं में 300 से अधिक रचनाएँ छपी। धूप एक बरामदे की (आगरा), श्रमणोपासक (बीकानेर), मधुमती (उदयपुर), कश्ती (अलीगढ़), राष्ट्रधर्म (लखनऊ), बचें (दिल्ली), ब्रजशतदल (ब्रजभाषा अकादमी जयपुर), स्वर्ण क्लश (हाथरस), भागीरथी (पूर्णिया) (बिहार), शुचि (बीकानेर), भारती (मुम्बई) रश्मिरथी (सुल्तानपुर), प्रौढ़ शिक्षा (नई दिल्ली), ब्रजभाषा (जयपुर), राजस्थान पत्रिका (जयपुर), समाज सेवा परिचय (इन्दौर), एमिटी एण्ड नेशनल सोलिडेरिटी (नई दिल्ली), प्रज्ञा (फरुखाबाद) पंचेश्वर (मुम्बई), वेद प्रदीप (नासिक), लेखा परीक्षा अर्चना (जयपुर), आजकल (नईदिल्ली) हिमप्रस्थ (हि. प्रदेश), क्रान्तिमत्यु (मेरठ), भारतीय रेल (न. दिल्ली), सैनिक समाचार (न.दिल्ली) लेखा परीक्षा प्रकाश (न.दिल्ली आदि-आदि पाण्डुलिपियो रामगुलाम (तुलसी जीवनी), हनुमानचरित्र (काव्य) एवं अनेकानेक विषयों पर लेख कविताएँ, लघुकथा आदि-आदि।

इन्होंने ''ब्रज रचना माधुरी'' की रचना की जिसके अन्तगर्त ब्रज, गोवर्धन, वृन्दावन, राधा, मुरली, साँवरिया, उद्धव, पैसा, धन करम, धीरज, समय, होनी,

माता, अहंकार, माटी, सुख, चन्दन, विधा, कवि, नेता, बाबू, जंग, नरृतन शादी, बिना बुलाए, बचपन, श्री हनुमान प्रार्थना, हनुमान-महिमा अशोक वन, मीरा, शबरी, रामचरित्र मानस, भक्ति-छन्द शिव बारात, धनुष यज्ञ, दशरथ-कैकयी संवाद, कैकैयी का वरदान माँगना, श्री राम कौशल्या वार्तालाप, राम वन गमन अत्रि ऋषि अनुसुइया का सीता को उपदेश जयंत संवाद, (सीता हरण) राम सुग्रीव मिलन, विभीषण का दशकण्ठ को समझना, लक्ष्मण शक्ति, राम आगमन की प्रतीक्षा, राम-राज्य, होनी, श्री तुलसीदास की जीवनी रत्नावली की व्यथा, महँगाई, रसिया,दहेज के दोहे, अस्पताल के दोहे, दफ्तर के दोहे, महँगाई के दोते, होरी, सवैया, कवित्त, रेल के दोहे, कविता हनुमान विनोद, दो छन्द, महँगाई, आज मुक्त छन्द मीरा, शबरी, सीता, काँटे, अपनी-अपनी, मन माँहि कारिख, होरी, होरी नारी जैसे शीषर्को के द्वारा अपनी भावनाओं विचारों को ब्रजभाषा को माधुरता के साथ प्रस्तुत कियाहै। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

रेल के दोहे

पहले कोयला खावती
डीजल पीती आज
हेल मेल फरावती
जोरत सकल समाज॥ [191]

* * *

स्कूल के नाम बने बंगला
अग्ररेजी के माध्यम होति पढ़ाई।
भूलगए संस्कारन कूआँ
तरक्की के नाम की देत दुहाई॥
बच्चा ते भारी तौ बरता भयौ
और मामा बनी जननी जू कहाई
जीवित बाप कू डैड कहे अस
औधरी दौड़ कूँ राह न भाई॥ [192]

48. श्री शंकरलालशर्मा दीपक

श्री शंकरलाल शर्मा दीपक का जन्म 1938 में कामा (भरतपुर) में हुआ। इन के पिता श्री बालकृष्ण शर्मा हैं इन के काव्यगुरु पं. श्यामलाल है इन का बचपन पढ़ने और पढ़ाने वालें घराने में गुजरा। इन की सर्वप्रथम पंक्तियाँ भारत माता पर रची जो कुछ इस प्रकार है।

जाके शुभ भाल मुकुट हिमगिरी, रत्नाकर चरण पखारत है।
सुरसरि काटि लसत करधनी सम, तन हरित चीर नव धारत है।
निरखत निजशरणी नेह सहित, भव सागर पार उतारत है।
काटत अध छन में जन-गन के है कौन जनाने वह भारत है। [193]

इसके पश्चात इन्होंने ब्रजभाषा और खड़ीबोली दोनों में लिखना शुरु किया। इन्होंने हजारो पिंगल छन्द लिखें जिनमें भारतीय, राजनैतिक, सामाजिक, उपदेशात्मक, भक्ति भावना, शृंगार, हास्य-व्यंग्य, प्राकृतिक सौंदर्य, ऋतुवर्णन को बहुत ही सुन्दर ढ़ंग से प्रस्तुत किया। इन्होंने चित्र काव्य के साथ-साथ लोक गीतों की भी रचना की जिसमें भारतीय राजनीतिक और सामाजिक चिन्तन का समावेश किया। इन्होंने अपने ज्ञान को अपने तक सीमित नही रखा, बल्कि सहित्यिक सस्थां साहित्यक परिषद, कदम्ब, बृजवानी की मासिक गोष्ठी में हमेशा भाग लेते रहे, और अपने ज्ञान को फैलाते रहे। श्री शंकरलाल ने अपने दोहों में बंद, तलवार बंध कपाट बंध, चंवर बधन को जोड़ा है, दोहों के 23 रुप गुरु लंघु मात्रा के क्रम से रचे गए है। जिनके नाम है भ्रमर, सुभ्रामर, सरम, सिचान, मंडूक, मरकट, करम, नगर, मराल, मदकल, पयोद, चल नर मच्छ, कच्छ, त्रिकल, शार्दूल आदि, व्याध, विडाल शुनक इन्दूर सर्प आदि। दोहें की विषयवस्तु राधा-कृष्ण लीला, भगवान नाम महिमा, देवी देवताना की विंनती नीतिपरक उपदेश व सिंगार रस से सबंधित है। मात्रिक और वार्णिक छन्दों के विविध रुपों में अपनी रचना धर्मिता को प्रदर्शित किया है। इनमें कुंडलिया, छप्पय, कवित्त, घनाक्षरी, मनहरण विविध प्रकार के सवैया और अनन्त वाणिक वृत्त इनकी रचना में देखने को मिलते है। धनाक्षरी-कवित्त में अनेक विषयों का चित्रण किया है जैसे बसन्त ऋतु, बुढ़ापौ, भारत महिमा गरीबी, श्रीकृष्ण महिमा, उराहनौ, सीख, भारत के सपूत, फूल सिगांर, लाल सिगांर, बाकौ रुप, राजसी रुप, ग्वारिया रुप, किसान महिमा हनुमान

महिमा, (उजारौ है) होरी, त्याग भावना, प्रतिज्ञा आदि। इन्होंने श्रृंगार रस में सयोग श्रृंगार में आनंद मिलने की उत्सुकता, नायक-नायिक वार्तालाप साथ ही वियोग का भी सजीव चित्रण किया है। इसके अलावा सामाजिक समस्या जैसे गरीबी भष्ट्राचार, दहेज-प्रथा-आदि इन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर अपनी कलम चलाई।

ब्रजभाषा में सबसे पहली समस्या पूर्ति ''मन कौ'' इस प्रकार है।

मन कौ बस करिबौ कठिन, या दुनिया में आया।
जनम लेत ही कोख ते, माया में फंस जाय॥
माया में फस जाय, न मानुष हरि भज पावै।
तेरौ-मेरौ के चक्कर में जनम गवावै॥
कह दीपक कविराय, करौ कछु जतन भजन कौ।
कीजै पर उपकार, छड़िकै अपनो मन कौ॥ [194]

इन्होंने खड़ीबोली और ब्रजभाषा दोनों में ही कविता लिखी है। साथ ही हास्य व्यंग्य का भी समावेश किया है। इन्होंने अधूरे पंडित, आज के शासन नैता और व्यापारी पर व्यंग्यात्मक लिखा और अनेक मंचो पर हास्य व्यंग्य की कविताएँ पढ़ी। जैसे-

1. हाय मै इलैक्शन हार गया।
2. हे राम न जाने क्या होगा।
3. भारत में समाजवाद आना ही चाहिए
4. गाँधी नेहरु के भारत में मानवता छिपकर रोती है।
5. जवानी किसको कहते है आदि आदि

इन्होंने ब्रजभाषा में रसिय भी लिखे जैसे -

1. मनमोहन मुरली वारौ, राकै मारग मतवारौ।
2. वंशी कौ बजवैया मोहन पावै भोजन थारी में।
3. झूला रेशम कौ बागन में डारौ आय
   सखियन संग झूलै राधा रानी
4. पनपौ-पनपौ है, भारत में भष्ट्राचार बढ़ी है झूठी बेईमानी
5. काली चाली है सजा निज केहर साज लड़ाई ठानी अरि दल से

इन्होंने ब्रज रचना माधुरी की रचना की जिसके अन्तर्गत सरस्वती वन्दना, शारदा मां, गणेश वन्दना, भारत मां का श्रृंगार, विविध प्रकार के सवैया जैसे मदिरा, मतगयन्द, दुर्मिल, अरसात वाम, किरीट (मण्डित), गंगोदक आभार चकोर, मुक्त हारा, शैल सुता, सुमुखी, सुन्दरी सवैया, सुरेन्द्र ब्रजा, अरविन्द सवैया, सुख सवैया, टेर सवैया, महा भजगं प्रयात, कवित्त में अनहरण छन्द (धनाक्षरी) बुढ़ापौ (कवित्त), हमारौ भारत, गरीबी यमुना के तट पे, उलाहनौ जसोदा की सीख (कृष्णकु), सीस ना झुकायौ है। सपूत, फूलन को सिंगार, लाल सिंगार (कृष्ण), वाँको रुप, राजसी रुप, ग्वारिया रुप, उजारौ है, हमारौ किसान प्रतिज्ञा, होरी, त्यागभावना विविध दोहावली, में भ्रमर, सुभ्रामर, सरंभ, सिचान, मंडूक, परमकट, करम, नगर, मराल, मदकल, पयोद, चल, नर, मच्छ, कच्छ, त्रिकल, शार्दूल, आहि, बाध, बिड़ाल, शुनक, इन्दुर, सर्प, रसिया, चवंरेबन्द, आरसी बन्द, कपाटबंध, तलवार बन्ध, विविध छन्दावली में अधर नगन मात्रा रहित त्रिभंगी छन्द ललित छन्द, भुजंग प्रयात, अनंग शेखर छन्द, पचं चामर, युगल शब्दों से रचित छन्द, क्षितिज छन्द, अचल धृत छन्द, आदि अक्षरी, गतागत, भुजगं प्रयात छन्द, महा भुजंग प्रयात, अचल धृत छन्द, मोदक छन्द, महीधर छन्द, नीलचक्र सुधा निधि, दो छन्दो की रामायण, महीधर छन्द, गंगोदक छन्द कुण्डलियाँ, षटपद, शिकस्त, अनोखी चूँदर बनाम भारत का नक्शा केसरिया वाना, मल्हार, संदेशो नन्दलाला, बारह खरी में एक खण्ड दोह, रसिया ट्रेक, अधर काली (रसिया) लाल सिंगार सिहंवलोकन, मल्हार, अधर काली, भष्ट्राचार, द्रोपदी की पुकार, जैसे विषयों शीर्षको के साथ ब्रज रचना माधुरी को प्रस्तुत किया है। जिनके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

सवैया

राख रमपति ध्यान सदा, कर काज सुजान महान सही।
माता–पिता सुत भ्रात तिया, धन धाम अपार ने जात कही।
काल घड़ी जब आप मना, तब साथ न जाय विचार यही।
साथ चलैं बस नाम वहाँ, बिन नाम न दिपक सार माहि।[195]

छन्द :

धारण कियौ कण्ठ में शिव ने
नीलकण्ठ कहलायौ है।

बाँस गाढ़ के कला दिखाई।

ढ़ोल बजा हरषायौ है।

कोमलता की उपमा पाकै

जल सुत नामकहायौ है

काकौ चरित आज तक दिपक

देवन इ नही पायौ है।। [196]

इस प्रकार इन्होंने रसिया, सवैया, कवित्त, दोहा, सोरठा, चौपाड़, कुंडली, छप्पय, मल्हार, लावनी, सोहनी, गीतका,हरिगीतका क्षणकाएँ मुक्त और चम्पु (गद्यकाव्य) लिखे हैं, जो लोगों द्वारा बुहत पसंद किए गए है। इन को अब तक भारतीय कला संस्थान से। ब्रज साहित्यकार सन्मान 13-1-96 को, डायमंड यूथ सोसायटी की और से 26-1-96 को अभिनंदन किया गया, पुन्हाने के अखाडे में प्रथम पुरस्कार मिला, भरतपुर यूथ समाज बासन गेट की और से 75 भगवान श्री कृष्ण की प्रतीमा इनाम मिला। रसिया दंगल में पटका (इकलाई) दिल्ली दरवाजा कामा की ओर से 90-91 में मिला।

49. श्रीमती प्रमिला गगंल

श्रीमती प्रमिला गंगल का जन्म ग्राम मुड़िया पँवार, जिला शाहजहाँपुर (उ.प्र.) में 2 जुन 1942 को हुआ। इन के पिता श्री मुरारी लाल माता श्रीमती देवकी रानी है। इन्होंने इन्टर तक शिक्षा ग्रहण, कीं इन का ब्याह 10-12-1961 को श्री जवाहरलाल गंगल के परिवार में से हुआ। इन्होंने अपनी कलम से अपना परिचय इस प्रकार दिया है।

''बिस्मल अरु अशफाक की धरती,

वह है मेरी जनम भूमि।

सास कौ जायौ जहाँ लै आयौ,

वह कहलावत है ब्रजभूमि।।'' [197]

इसके अलावा राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर की और से सम्मानित किया गया। जिसकी परिचै पुस्तक में इनका परिचै कुछ इस प्रकार है।

ओज जाकी कविता में, झरर झरर झरै

साफ-साफ झलकै है, धार दार पानी है।

नारी सत्ती कौ स्वरूप, जाकौ देखत ही बनै,
आग बरसायवे कूँ जादू भरी वानी है॥
जाकी जिंदगानी सदा क्रान्ति की कहानी रही,
भाव भरवे कूँ छंद-छंद में रवानी है।
कवि-सम्मेलन कमें दंगल में गंगलकी
कविता सुनै तो लगै प्रमिला भवानी है॥[198]

इन्होंने ब्रज, राजस्थान और हिन्दी में काव्य सृजन की है। इन की सबसे पहली रचना कुछ इस प्रकार है। सन् 1955 में माँ के नाम पर लिखा -

''अम्मा, अम्मा क्यो छोड़ गई अम्मा।
तूने क्यो मुझको जन्मा था?
जन्मा तो फिर छोड़ा था?
अब किसके सहारे जिउँ बताजा अम्मा ? अम्मा...''
कोई अब लाड लडाता नही।
कोई अब गले लगाता नही।
अपना अधिकार कहा मागू मैं अम्मा॥ अम्मा....
सपनो में तो तुम आती हो।
घर में न दिखाई देती हो।
तुम बिन छपरा सुना है मेरी अम्मा...अम्मा....
चिड़िया दाना देती बच्चो को।
सूनी-सूनी में देखूँ घर कच्चे को।
मै दिन रात रोती रहती मेरी अम्मा। अम्मा.... [199]

इन के काव्य में ओज, हास्य, व्यंग्य, विरह विथा, फागुन की मस्ती, के साथ-साथ विसम परिस्थिती की छटपटाहट, देश भक्ति और देशकी समस्या दहेज, नारी उत्पीड़न आतकंवाद स्वार्थपरता, राजनीति की लूट, भष्ट्राचार, आस्था के सुर होरी जैसे विषयों पर अपनी कलम चलाई। इन्होंने ''ब्रज रचना माधुरी'' की रचना की, जिसके अन्तर्गत होरी, बारह मही होरी, रसिया, लाँगुरिया, मुक्तक -बेनजी भुट्टो के नाम पाती, होरी के तुक्तक, रसिया होरी, मल्हार, दादी नै मोकूँ दई गारी, कवित्त, विरह, पहुनाई नये साल की, रसिया, भाषा की तकरार, होरी की गुंजार, ससुराल की

होरी, होरी पे सुसरार कौ नौतो, गीत, देस की महिमा, चेतावनी, गीत, भौत जरुरी, चतुष्पदी, खेल, ब्रजमहिमा, दोहा विनंती जैसे शीर्षको का समावेश कर अपना काव्य प्रस्तुत किया है जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

होरी -

पी के भंग गोला-गोली
भीग गये सब चोला चोली
गली मुहल्ला टोला-टोली
बोल रहे सबप एक ही बोली
होरी है होरी है होरी॥ [200]

दोहा विनंती -

बड़ भागी वे लोग है ब्रज में जनमे आय।
वा धरती की राजभली, जाकू कान्हा खाय॥ [201]

इस प्रकार इन्होंने ब्रजभाषा में अनूठे काव्य की रचना की। इनको रतनगढ़, चुरू, सरदार सहर, गंगनगर बीकानेर आदि में कवि स्म्मेलनों में बुलाया जाता रहा। ब्रजभाषा में पत्र पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित हुई। इन का 19 मार्च 1995 को साहित्य सगंम बम्बई की और से शारदा पुरस्कार मिला। दूसरा 20 मार्च 1985 को राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर द्वारा पुरुस्कार प्रदान किया गया।

50. डॉ. त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी

डॉ. त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी का जन्म 12 सितम्बर 1922 (गणेश चतुर्थी 1985 तदनुसार 18 सि. 1928 को कोटा में हुआ। इनके पिता पं. मदन मोहन जी चतुर्वेदी और माता श्रीमती गुणवती चतुर्वेदी हैं। ये निवर्तमान - प्रिंसिपल, गवर्नमेन्ट आट्‌र्स कॉलेज अलवर में कार्यरत है। इनको बचपन से ही काव्य संस्कार में प्राप्त हुए। इन्होंने कक्षा पाँच से ही कविता लिखना शुरु कर दिया था इन्होंने गद्य और पद्य दोनों क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

'सुनो युधिष्ठर' त्रिभुवन जी का एक मात्र ब्रजभाषा काव्य संकलन है। जिसमें कुल 119 दोहा-सोरठा, 46 कवित्त, 9 सवैया, 16 बरवै और 8 छंद मुक्त रचनाएँ, 2 गीत और 4 कुंडलियाँ हैं। संकलन में जिन शीर्षक से रचना वर्गीकृत की गई हैं। वे इस प्रकार है। दर्शन, दुहाई है, सुनौ युधिष्ठिर, कवि अरु समीक्षक, बसंत होरी

हेमंत, नौकरी, पत्नी कथा, बस की सवारी, मच्छर महिमा, चिरकुमारी, घूँघट वारी, (दोहा) दोहा कुँज माँहि प्रेम बीथि, जीवन दरपन, बीथि दरसन बीथि और वीर के लक्षण और प्रवत्तियों का सजीव चित्रण है।

त्रिभुवन जी व्यंग्य लेखक और गतिकार भी हैं इनकी रचना में आधुनिक रचना शैली के दर्शन होते हैं मनहरन कवित्त, सवैया, दोहा, सोरठा तथा बरवै छंद में प्रवृत्ति के दर्शन, नवगीत में प्रगतिशील विचारों के दर्शन विशेषकर व्यंग्यपरक नीतिगत भावना के दर्शन होते हैं सन् 1961 से इनके अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए जो सब खड़ी बोली में निम्न हैं।

1. क्षमा कीजिये (सन् 1961) (ललित निबंध)
2. ममता की समाधि खंड काव्य (1968)
3. सुरभि के चरण (काव्य संग्रह) (1968)
4. ब्रह्माण्ड का उपमान (ललित निबंध 1977) राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित की गई।
5. उपर्जित क्षण (काव्य संग्रह) 1985
6. 'सब देखते है नाच' ललित निबंध (1977) राज सा. अकादमी उयपुर ने सन् 1992 में ही राज-साहित्यकार प्रस्तुति के अंतर्गत इनका मोनोग्राफ छपा है। इन्होंने साहित्यिक पत्रिका यथा कल्पना सरस्वती, ज्ञानोदय, धर्मयुग, मधुमति, चिदम्बरा में लिखा वही साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स में उच्चकोटि के लेख लिखे, राजस्थान पत्रिका में तो नियमित लिखते हैं।

इन्होंने ब्रजभाषा में कम लिखा इनकी अनेक रचनाएँ ब्रजभाषा दल में छपी और एक संकलन सुनौ युधिष्ठर की पांडुलिपि तैयार हैं।

इनके विचार प्रगतिवादी रहे इन्होंने समाज में व्याप्त विकृति, विसंगति और अपसंस्कृति से उपजी भौतिकतावादी, उपभोगवादी प्रवृत्ति पर मनोवैज्ञानिक प्रहार किया। सामाजिक वातावरण और राजनैतिक माहौल, सरकारी घोटाले, साहित्यकार कवि लेखक बनने की होठ, ऋतु, आधुनिक आपाधापी, पुलिस की गोली, नौकरी की चाह, प्रेम में प्रेमी की गति, जैसे विषयों पर ब्रजभाषा में अपनी कलम से अपने विचारों भावों को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

इन की ब्रज रचना माधुरी के अन्तगर्त विनय, याचना, दुहाई है, दर्शन, सुनौ

युधिष्ठिर, कवि और समीक्षक, होरी, हेमंत, नौकरी, खात है, स्वागत है छेड़े, बसंत की सवारी, मच्छर महिमा, चिर कुमारी, घूंघट वारी, दोहा कुञ्ज में, विनय तिथि, प्रेम वीथि, जीवन दरपन बीथि, दरसन बीथि, वीर, छंद मुक्तक कविताएँ, अल्हड़ बसंत, बसंत आय गयौ, सुख-दुख, स्वाभिमान, सयानौ, हम सब, जानौ कित ओर, बरखा गीत, थिरकेगे श्यामन धन जैसी रचनाओं का समावेश कर ब्रज रचना माधुरी के माधुर्य को प्रस्तुत किया है।

जिनके कुछ उदाहरण इस प्रकार है

पंडित होय मूर्ख होय, सूम या उदार होय
हाकिम की हजूरी माँहि, हाँ हाँ करनी परै।
वृथा चापलूस जब निंदा अरु स्तुति करै।
मन कौ मन के विरुद्ध, मौन गहनी परै॥
त्रिभुवन जे नौकरी, नाम नीचता कौ है,
यामे स्वाभिमान हूँ की आन तजनी परै,
नीचौ सुनिबौ परै अरु नीचौ लिखबौ परै।
नीच नौकरी में नाक नीची करनी परै॥ [202]

दोहा : (विनय वीथि)

कन-कन की जानौ तुमहि, जग के सिरजन हार,
कैसे मानू खबर, मेरी ना सरकार।[203]

** *

प्रेम करत रोवत मिले, न करत मिल्यौ न कोय।
कोउ औड़े, कोउ उथले, डूब मिले सब कोय॥ [204]

51. डॉ. रामगोपाल शर्मा दिनेश

डॉ. राम गोपाल शर्मा दिनेश मिश्र का जन्म 5 जुलाई 1929 को सिंघावली त.बाह. जि. आगरा (उ.प्र.) में हुआ। इनके पिता पं. कन्हैयालाल मिश्र और माता श्रीमती सीपा दुलारी मिश्र है। इन्होंने 1960 में हिन्दी काव्य में नियतिवाद विषय 9 से पी.एच-डी की उपाधि ग्रहण की। इन्होंने बचपन से ही कविता लिखना शुरु कर दी ब्रज और खड़ी बोली दोनों में इन्होंने कविता लिखना आरम्भ की, सूर रसखान, रहीम,

मीरा इन से ये प्रभावित रहें। ब्रज में इन्होंने ज्यादातर फुटकर रचनाएँ रची। साथ लोकगीत, ब्रजलोक गीतों पर समीक्षाएं, साहित्य संदेश मासिक (आगरा) अंक में कुछ समीक्षाओं का प्रकाशन भी हुआ। 'वीरांगना' नामक गीत संग्रह 14वर्ष की आयु में लिखाना शुरु किया और 1949 में पूरा हुआ। महात्मा गांधी की मृत्यु के पश्चात् 'विश्व ज्योति बापू' खण्डकाव्य लिखा जो 1952 में प्रकाशित हुआ। इन की 18 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। जिसमें सारथी (महाकाव्य), मधुरजनी (गीत-संग्रह) जलती रहे मशाल, रूपगंधा, संघर्षों की रही, अहं मेरा गेय, आयाम, साक्षी है सूर्य, विश्वज्योति आदि मुख्य है। 1983 ई. में इन की कविताओं को राष्ट्रीय स्तर पर 'पंत' आदि की श्रेणी में आधुनिक कवि - 20 के रूप में काव्य यात्रा सहित प्रकाशित किया गया। इसके अलावा 8 नाटक लिखे, 'चौराहे का आदमी' कहानी संग्रह छप चुका है और तीन उपन्यास छप चुके हैं ललित तथा समीक्षात्मक लेखन तीन संग्रह छप चुके हैं अब तक कुल मिलाकर 123 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। गद्य की दो पुस्तकों पर पुरस्कार भी मिला है।

इनके 75वें करीब अन्य विषयों में (आलोचना शोध आदि) की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। ब्रजभाषा में पुस्तक के रूप में तीन एकांकी नाटक है। भरतपुर के श्री मूलचन्द गुप्त ने इनके साहित्य प्रकाशन का बीड़ा उठाया इन्होंने साहित्यलोक प्रकाशन की स्थापना करके जो पुस्तकें प्रकाशित की जो निम्न हैं।

1. संघर्षों के राही (दूसरा संस्करण, गीत संग्रह)
2. जलती रहे मशाल (गीत संग्रह)
3. आयाम (नई कविताएँ)
4. जय घोष (गीत-संग्रह)
5. गौरव गान (गीत-संग्रह)
6. दुर्वासा (खण्ड-काव्य)
7. हिम प्रिया (खण्ड-काव्य)
8. सारथी (महाकाव्य)
9. उतसर्ग (खण्ड काव्य)
10. हिम पुरुष (एकांकी-संग्रह)

इनको अप्रकाशित काव्य 'मधुरजनी' पर राजस्थान साहित्य अकादमी से

काव्य पुरस्कार भी दिया गया, 'लोक देवता जागा' पर भारत सरकार से पुरस्कार मिला। 'हिन्दी शिव काव्य का उद्‌भव और विकास' ग्रन्थ पर विशेष तुलसी पुरस्कार दिया गया।

इन के काव्यों का विषय बैराग, धरम नीति, समाजिक उत्थान, ढ़ोग वितंडावाद की भार्त्सना, पर्यावरण प्रदूषण की समस्या, प्रवासी पूत, स्वार्थी संतान, पवनपूत, वीना वादनी, दस भुजा दुर्गा, सर्वदेव प्रार्थना, ईश्वर की करुणा घट-घट में व्यापकता, सत्यव्रत हरिनाम और निष्कर्ष ही मनुष्य को ईष्ट होना चाहिए आडंबरो से दूर रहना चाहिए दीन दुखी की सेवा करनी चाहिए, माया को समाज के पतन का कारण बताया, संसार की निस्सारता, उन्नति-अवनति का चक्र, यश की लालसा, सांसारिक मोह माया आदि पर कवि ने अपनी लेखनी से लोगो को को जागृत किया। सर्वधर्म आदरभाव, सामाजिक और धार्मिक महत्व, समाज में मानव-मानव के बीच भेदभाव, छुआछूत, पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण और भारतीय संस्कृति का ह्रास, धन लोलुप, उदासीन म्युझिक के कानफाड़ शोर, माडंल बनी युवती, शालीनता रहीत विज्ञापन सामाजिक पतन, अनैतिकता, अर्थलोलुपता, अपराध प्रवृत्ति, वर्ग सघर्ष विवाहिता सहधर्मिणी के प्रति अत्याचार, जैसे विषयों का समावेश कर शर्मा जी ने देश के हर एक बुराई समस्या पर तीखा प्रहार कर अपनी लेखनी के जादू से पाठको तक पहुँचाया। जो की भाव पक्ष और कला पक्ष दोनो ही उत्कृष्ठ रुप से प्रस्तुत की गई है।

इन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में अनेक वर्षो तक 'सरस्वती संवाद' और समीक्षा लोक के प्राधान सम्पादक रहे, सैनिक साप्ताहिक के सह सम्पादक रहे।

इन को कई पुरुस्कार भी प्राप्त है 'हिन्दी शिव काव्य का उद्‌भव और विकास' ग्रन्थ पर उत्तरप्रदेश सरकार का विशेष तुलसी पुरुस्कार प्राप्त किया। 'प्रबुद्ध चेतना' और 'हिन्दी साहित्य' नामक ग्रन्थ पर देवराज उपाध्याय पुरुस्कार राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा दिया गया।

इसके अलावा समस्त लेखन को ध्यान में रखकर 'साहित्य श्री निधि' 'राष्ट्रकवि', 'साहित्य-शिरोमणी' 'महामहोपाध्याय' एवं 'विशिष्ट साहित्यकार' आदि सम्मान समय-समय पर विभिन्न संस्थाओंद्वारा दिए गए। इन का सबसे पहला लघु इतिहाँस हिन्दी साहित्य का आदर्श इतिहाँस नाम से लिखा। सन् 1951 के लगभग 16 वर्षो तक मध्यप्रदेश हायर सैकण्डरी परीक्षा के पाठ्यक्रम में पढ़ाया गया।

इन्होंने ब्रजभाषा में 'ब्रजमाधुरी' की रचना की जिसके अन्तर्गत कामना, कलिजुग कंस अनेक भए, एक बार लै चलौ, सूरज नै देखी है अवतरहु कन्हैया, मदिराए कूप, गीत समझियो दिनेश-दोहवली, स्तवन, अनुभूति चैन मिलै रुप देखें, ऐसे तुम नेता भए, माँगत है मत एक मिली है कुर्सी, कहौ कान्ह, को मजिल तक जाबैगै, सूरज कैसे आवेगो माखन चोर कन्हैय, पाती होली, एटम को धमकी मति दीजौ, जैसे काव्यों का समावेश कर ब्रज माधुरी के माधुर्य को प्रस्तुत किया है। जिनके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

शिव-दुर्गा गणपति साहित,
रमै हद्‌य श्री राम।
सीस जानकी चरन.रज,
मन में राधा-स्याम। [205]

* * *

चारों और आँधियाँ धन तम
मरुथल में पथ खोयौ है।
कौन मशालै ले जन हित की
को मजिल तक जावैगौ? [206]

* * *

आऔ खेलौ संग कन्हैया
रंगबिरंगी होली।
ग्वाल-बाल सब खेलन लागे
लै गोपिन की टोली। [207]

* * *

सागर गावत साथ हमारे
साथ हमारे लहरावत है।
चट्टानन सौ टकारावत कौ
इन चरननि में ज्वाल भर है।
फौलादिन के कंकालीन में
तुफ़ान के सार भरे है। [208]

52. श्री रत्नगर्भ तैलांग

श्री रत्नगर्भ तैलांग देर का जन्म 13 नवम्बर 1914 को जहाँनाबाद (उ.प्र.) में हुआ। इन के पिता शास्त्री लक्ष्मीकिशोर तैलांग और माता कालिन्द्री बाई है। इन का ब्रजभाषा काव्य में रुझान इन के पूज्य पिताजी के काव्य संग्रह को पढ़कर हुआ। तैलांग जी रत्नाकर, सूर, बिहारी, देव, मतिराम, ग्वाल, भूषण, पदमाकर केशव आदि के काव्य से प्रभावित हुए। ये सूर तूलसी के श्रृंगार और वात्सल्य भाव से अधिक प्रभावति हुए। इन के काव्य में आध्यात्मिक विषयों पर विशेष आधारित रहे। कृष्ण इन के काव्य के केन्द्र बिन्दु हैं। कृष्ण के नख से शिख श्रृंगार वर्णन, राजभोग वर्णन, महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के पुत्र गो. विट्ठल नाथ के बालपन का वर्णन, प्रार्थना के रुप में अवतारन की स्तुति, इस प्रकार इन का काव्य पुरी तरह से आध्यात्मिक है। इन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

उठिये कमलनैन ब्रज चन्द रे गोविन्द
आये है गुआल बाल टेरत है बारबार
सरस गुलाब जल आनन परवार लोहु
लेहु कर मुरलिया आई मधु मंगल। [209]

****

इन की एक प्रारंभिक रचना है।
पिय के रस पीयूष कौ, पिय राधा सुधि हीन।
ऐसौ अचरज देखिकैं, कृष्ण भये अति दीन॥ [210]

****

श्री राधे मुख कमल कौ लखे सु चन्द्र चकोर।
वा छवि राधे पदन लखि बिहँसे नंद किशोर॥ [211]

इन के प्रकाशित ग्रन्थ हैं कानपुर के प्रताप, दैनिक जागरण विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में, जयपुर से संस्कृत की भारती पत्रिका इसके आलावा इन्होंने ब्रज-माधुरी की रचना की, दोहा, मंगला, सिंगार, ग्वाल दरसन की भावना, राजभोग, गोस्वामी विट्ठलनाथ जी की जयन्ती पै, उत्प्रेक्षा अलंकार कलिया के फनन पै, दशावतार, जयपुर वर्नन, पैर पसारे, तंरग में, श्री मुसकाने, तुलसी, बातैं, तुलसी सपूत की, झूमती डाली, मथुरा है, बसन्त है, मनभावना, वीर बानौ है, लाई री, बसन्त पर

घसीतट चींटी, कीजिये, पानी है, हिंडोले में पद की, मचले, रोला छंद, गिरिराज है बरसाने की, फंदा, बंसीवारे की सेवा, कुबरी की घर है, गाय की दुर्दशा, मारत चोंच अचानक तोता, घट, बरसाने की, पद्रह अगस्त बजबें बाले घंटे पर कछुंविचार, कामिनी अरु 'क' वर्ग, सावन सुहायो है, जैसी रचनाओं का समावेश कर ब्रजभाषा के साहित्यक कोष को अपनी प्रतिभा से बढ़ाया है। जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

लंबोदर गज बदन अलि, चार भुजा एक दंत।
आउ चलै पूजन करै, बहुरी रह्यौ हेमन्त।। [212]

* * *

अधर धरे मधु बासुरी, रुप सुरप अपार।
राधेजू कौ आज तौ, करत कृष्ण सिंगार।। [213]

* * *

दधि माखन तो नोहि भावत है
खुरचन हू अति लागत मीठे।।
मठरी अरु ढौर कठोर लगै
पपची गुझिया हू सुवसित मीठे।।
मिसरी रबरी की कटोरि भरी
खुरमा औ चूरमा मुखागत मीठे।।
घनश्याम कहै सुन बात अरी
सखरी निखरी के पदारथ मीठे।। [214]

इस प्रकार 'तैलांग' जी ब्रजभाषा के चितरें हैं। जिन्होंने अपनी इस भावना के सागर को शब्दों में पिरों कर इतने सुन्दर काव्यों की रचना की। इसके अलावा इन रुचि सांझी कला में दक्षता, ठाकुरजी के मन्दिर में देव विग्रहन की श्रृंगार झाँकी सजाना, प्राचीन सिक्को के संग्रह, तारा, टिकट, माचिस, प्राचीन शैली के चित्र संग्रह, वेस्ट मटिरयल से विभिन्न आकृति और वस्तु बनाना। इस प्रकार तैलाग जी ब्रजभाषा के उच्चकोटी के कवि माने जाते है।

53. श्री आनन्दीलाल आनन्द

श्री आनन्दी लाल आनंद का जन्म 18-9-1922 को नाथद्वारा जिला राजसन्द में हुआ। इन के पिता श्री मोडीलालगौरवा और माता श्रीमती चन्दा बाई है

इन की पत्नि श्रीमती सुन्दरबाई है। इन के प्रथम गुरु मामाजी श्री गोपीलालजी झापटिया दूसरे गुरु स्व. श्री दाम सुदाम वर्मा हैं, इन को बचपन से ही साहित्यक वातावरण मिला इसी में यह पले-बड़े हुए। इन्होंने बारह बरस में ही तुकबन्दी करना शुरु कर दी। इन की सबह से पहली रचना कुछ इस प्रकार है।

लेसन पाठ और प्यारा डीयर
सीखों लन व सुनलो हीयर
सूरज सन चाँद है मून
स्काई आकाश है जल्दी सून
हवन स्वर्ग सितारा स्टार
हेल नरक से बचना यार
डे है दिन रात है नाइट
डार्क अधेंरा, रोशनी लाइट
व्यवस्था आँडर हड़ताल स्टाइक
भाषण स्पीच, पसन्द है लाइक । [215]

इन के काव्य के विषय भक्ति भावना के अलावा उत्सव त्योंहारो, समाज के सुख-दुख, हर्ष-विशाद, आकर्षन विकर्षन है। जैसे मँहगाई, बहरुपिया से बचना, घोटाले चुनाव, जनता की ना सुनने वाले, सत्य, अहिंसा, त्याग के सर्मथक, समाज की विसंगति, निर्धन वर्ग के हिमायती हैं इनको लोक कवि भी कह सकते हैं आनन्दी लालजी राष्ट्रीय विचारों वाले है। सन् 1957 में बिरिया में कुम्भलगढ़, आमेर निर्वाचिन क्षेत्र से चुने गए, 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में स्थानीय नेताओं के साथ जुड़ गए और जेल भी गए। साथ ही रचनात्मक कार्यो में भी जुड़े रहें।

इन्होंने हिन्दी ब्रज और राजस्थानी भाषा में लिखा। इन के कुछ ब्रजभाषा के छन्द साहित्य मण्डल नाथद्वारा और राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर की त्रैमासिक पत्रिका 'ब्रजशतदल' में प्रकाशित हुई।

इन की रचना 'ब्रज रचना माधुरी' में धनाक्षरी, रसिया, का समावेश कर ब्रज रचना माधुरी के माधुर्य को बढ़ाया जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

बिजली न मिलै नाहिं पानी जुरै
कठिनाई है गैस जुटावन की।

महँगाई सौ त्रस्त भई जनता
भरमार भई है सिंगारन की।
उद्घाटन भासन चाटन में,
नित भीड़ बढ़ी मेहमान की।
गुमराह करै नही नेकु डरै,
अब कौन सुनै बतिया बिनकी॥[216]

* * *

ब्रज कौ बचायौ, गिरिराज कूँ उठाय, लियौ,
कंस कूँ पछार मारौ ऐसो बल धारी है।
महिमा अपार नाथ टेर सुनी द्रोपदी की,
खेच खेच हारौ दुसासन दुष्ट सारी है।
सारथी बनौ है दौनौ ज्ञान महाभारत में
रुप हु विराट दिखलायौ बनवारी है।
ऐसे ब्रजराज कूँ प्रमाण करुँ बार-बार
देत सदा आनंद सु ताकी बलिहारी है॥[217]

54. श्री पूरनलाल गहलौत

श्री पूरणलाल गहलौत का जन्म 26 नवम्बर 1932 को कामाँ में हुआ। इन के पिता श्री लालाराम और माता श्रीमती भगवती देवी है। इन्होंने हाईस्कूल तक शिक्षा ग्रहण की। साथ ही नई-नई साहित्यक परिषद में हलका-फुलका साहित्य, समाजिक घटना की समस्या प्रधान कविता, हास्य-व्यंग्य की हलकी रचना, चुटीलै गीत, लातिफे प्रस्तुत करते रहें। इन की आकाशवाणी-ब्रजमाधुरी, में नौटकी प्रसारित होती रही जो कुछ इस प्रकार है। जैसे चन्द्रवली, गोचारण लीला, नेताजी सुभाषबोस, ब्रजरज महिमा, श्याम सगाई, कामवन जाये ते काम बन जात है, राष्ट्रीय एकता, नाग नथैया, सन्त कबीर, परिवार नियोजन, विजयादशमी, महारास, गिरजि पूजा, बलि कौ बकरा, भगत पूरन मल, सरदार भगतसिंह, साँची पढ़ाई, मीरा बाई, स्वामी विवेकानन्द, मौत की महीन मार- 'एडस', पर्यावरण प्रदूषण और प्रबंध, सीताहरण, मुण्डमाल, चतुर किसान आदि।

इन्होंने काव्य के क्षेत्र में भी अपनी प्रतीभा को दिखाया है। इन के काव्य को निम्न प्रकार वर्गीकरण किया गया है।

(1) पौराणिक आख्यानपरक काव्य।

(2) राष्ट्रीयता सौ अनुप्राणित काव्य।

(3) लोकधर्म अरु लोकनीति सौ सेसिक्त काव्य।

(4) श्रृंगार परक काव्य

(5) फुटकर काव्य (प्रकृति पै आधारित लोक पर्वोत्सवन से संबंधित काव्य)

पौराणिक आख्यान पर आधारित काव्य में भजन-जिकरी लोकधुन के अनुसार गीत, रसिया और नौटकी आदि काव्य आते है। महारस, गिरिराज पूजा, गोचरण लीला, नाग-नथैया, सीताहरण आंदि नौटंकी विभिन्न भजन-जिकरी पौराणिक आख्याय पर आधारित हैं।

राष्ट्रीयता से अनूप्रेरित काव्य में परिवार नियोजन, बापू अरु बलि कौ बकरा, राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण प्रदूषण और प्रबंध, मौत की महीन मार'एड्स', साँची पढ़ाई, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस नौटंकी में देश की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान प्रभावी ढ़ंग से बताया गया हैं। सेवा धर्म रसिया, रंगीले भारत कौ रसिया, देशभक्ति कौ छन्द, कुरीति निवारण के लोकगीत, राष्ट्रीय एकता के गीत में बाल विवाह, अशिक्षा, जनसंख्या की बढ़ोत्तरी नशेबाजी, धार्मिक उन्माद, भाषा भेद, ईर्ष्या-द्वेष आदि को मिटा कर एकता का सन्देश दिया है। समसामयिक घटनाओं को इन्होंने समय-समय पर अपनी लेखनी से प्रस्तुत किया है। जैसे युवा नेता सजंय गांधी को 'एक रुतवाई' में इस प्रकार गाया।

ओऽऽ... यू सजंय गांधी अक्कल की सिदूंक खुदा सूँ ल्यायौ... यू ऽऽ
देखौ काल परसू कौ छोरौ।
नेहरू कौ हू यानैं रिकाट तोरौ।
अरेऽऽ नया-नया छो रेटन लू यू पक्कौ नेतौ
पायौ... यू सजयं गांधी.... [218]

लोकधर्म और लोकनीति के काव्य में अनेक कवित्त, सवैया, झूलना और नौटंकी की रचना की जिसके अन्तर्गत कर्तव्यनिष्ठा, सहदयता, सहयोग की भावना, त्याग, सेवा, सदाचार, सत्यता, प्रेम का संदेश आदि को दर्शाया है।

शृंगार परक रचनाओं में राधा कृष्ण के मिलन को आश्रय और आलम्बन के रूप में स्वीकार किया हैं सयोंग और वियोग दोनों की रचना की है। अन्य काव्य में प्रकृति को आलम्बन के रुप में चित्रित किया हैं। बसन्त, ग्रीष्म, बरसा, शीत आदि ऋतुओं के विभिन्न उत्सवों का वर्णन किया है।

इन की रचना 'ब्रज रचना माधुरी के अन्तर्गत वंदना-सरस्वती, गनेश, शिव, हनुमान, भारत, श्री राधारानी, रसिया होरी, रसिया, रसिया सेवा धर्म, रसिया देशभक्ति, रसिया, रसिया सेवा धर्म, रसिया देशभक्ति, रसिया, राग काफी-होरी, कुण्डलियाँ-राधानागरी लोकगीत, राष्ट्रीय एकता, विरहगीत झूलना-देशभक्ति, झूलना-दिल्ली दर्शन, कवित्त, सवैया, किरीट-सवैया, एक आस-बिसवास, राजा शिवि की जिकड़ी, लघु नौटकी- चन्द्रवली, लघुनौटकी, सूर कौ संगीत, गिरिराज पूजा, सुभाष चन्द्र बोस, बापू और बलि का बकरा, राष्ट्रीय एकता, ब्रज-रज महिमा, परिवार नियोजन, मक्खन की घरबारी, जैसी रचनाओं के साथ ब्रजभाषा में इन्होंने अपनी प्रतिमा का परिचय दिया हैं जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

'लाल लँगोटी री, धारौ, अरि हनुमत हरि भक्त पियारौ।
एक हाथ में ब्रज विराजै, गदा दूसरे धारौ।
कन्धा पै सज रहौ जनेऊ, सब सुख देयबे वारौ।' [219]

*** * ***

राधा नागरि के बिना, आधे है घनश्याम।
आठौ पहर रटौ करै, श्री राधे कौ नाम॥
श्री राधे कौ नाम, श्याम याके गुन जानै।
अपने कूँ , में सदा दास राधे कौ मानै॥
झूकौ रहै चरनन पूरन, मयूर कौ कागर।
आगर शील सनेह, चातुरी राधा नागरि॥ [220]

इस प्रकार 'गहलौद' जी ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवियों में से एक है। यह सिर्फ कवि ही नही अन्य अनेक गुण इनमें है। जैसे देशी रुरवरीन से इलाज करना, खस के पंखे बनाना, जेबरी बुनना, खाटबूनना, चटाई बनाना, तुरीन के पंखे बनाना, रगीले आसन बुनना, कई प्रकार के बाजें बजाना, इस प्रकार इन का व्यक्तित्व सेवा, निष्ठा, साधना, सरलता, समरसता, निपुणता, परोपकार, सहकारिता, धार्मिकता, राष्ट्रीयता

और कविकर्म में निपुर्ण है।

55. प्रभुदास बैरागी

प्रभुदास बैरागी जी का जन्म 25 जनवरी 1935 को नाथद्वारा में हुआ। इन के पिता श्री भगवानदास बैरागी और माता श्रीमती शशिबाई है। इन को बचपन से ही काव्य में रुचि थी इन के विद्यालय में हर वर्ष वार्षिकोत्सव पर मौलिक कविता को पढ़ने वाले को विद्यार्थी को रनिगं कप दिया जाता था इस में बैरागी जी ने लगातार तीन वर्ष तक रनिगं कप जीता जिस से इन को प्रोत्साहन मिलाऔर कविता का प्रवाह निर्झर बहता रहा। 'स्नातक' तक इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। बैराग जी शिक्षक के पद पर कार्यरत रहे साथ ही अध्ययन करते रहें। इन्होंने हिन्दी भाषा से कविता लिखना शुरु किया फिर ब्रजभाषा से प्रभावित हो ब्रजभाषा में लिखा 'भारत की 'लाज म्हाने रावणी' शीर्षक से लिखी गई कविता पूरे चित्तौड़ जिले में प्रसिद्ध हुई।

बैरागी जी का साहित्य मंडल नाथद्वारा, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर से सम्बद्धत रहें, बह्यसम्बन्ध (मासिक पत्रिका) हल्दीघाटी, बागारां फूल (काव्य संग्रह) का सम्पादन किया, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के सामान्य सभा के सदस्य भी रहें। राजस्थान पत्रिका राष्ट्रदूत, प्रातःकाल जयराजस्थान और नवभारत टाईम्स आदि में स्वतंत्र लेख प्रकाशित हुए।

अनेक स्मारिकन का लेखन-सम्पादन किया, अनेक स्वतंत्र निबन्ध (गद्य) कल्याण विशेषांक में प्रकाशित हुए। जैसे-हनुमान अंक, गौ सेवा अंक, भगवल्लीला अंक आदि।

इन को अनेक सम्मान, उपाधियों से सम्मानित किया गया है। पूज्यपाद ति. श्री गोविन्दलालजी महाराज द्वारा पुरुस्कृत, सुप्रसिद्ध गीतकार श्री 'नीरज' से अभिनन्दन-पत्र, राजस्थानी विकास मंच सन् 1964 जालोर द्वारा डाक्टरेट की मानद उपाधि साहित्य मंडल द्वारा श्रीनाथजी पाटोत्सव पर 'ब्रजभाषा विभूषण' की पदवी से अलंकरण। अखिल भारतीय कला स. सा. परिषद मथुरा द्वारा सहित्यालंकार की मानद उपाधि।

इन की प्रकाशित कृतियां इस प्रकार है।

1. श्री नाथद्वारा का सांस्कृतिक इतिहाँस (इतिहाँस) 1977 भारत प्रकाशन मंदिर

2. गंगादास सतसई (काव्य) 1975 हिन्द कानून प्रेस कांकरोली

3. श्री नाथ शतक (काव्य) 1999 प्रकाशक स्वयं

इन का काव्य भक्ति के सागर में डूबा रहा, रुपघनाक्षरी इनका प्रिय छन्द है। इन की 'ब्रज रचना माधुरी' के अन्तर्गत श्री नाथजी वंदना, श्रीनाथ खण्ड, प्रभु श्रीनाथजी के महाप्रसाद की महिमा, गौशाला-वर्णन, प्रभु की चरण वंदना, चित्रकला, श्री गोविन्दलालजी महाराज, श्री दाऊजी महाराज, कछवाई फाग मनोरथ, अधिक मनोरथ, गो. श्री रणछोडचार्यजी 'प्रेथमेश' सतसई खण्ड, चालीसा खण्ड-दोहा, चौपाई, दोहा, सवैया, शतक-खण्ड, भक्ति-खण्ड-कविता, कविता, रे मनुवा इनकी जय बोल, 2 कविता, लेखनी (कविता) फूटकर-खण्ड में कवित्त, चौपदे, परीक्षा, कविता, का समावेश कर ब्रजरचनामाधुरी के माधुर्य को प्रस्ततु किया है। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

सतसई-खण्ड :

'श्रीजी पद वन्दन करूँ, सदा सुखद के हेतु।
गंगादास के सेव्य तुम, भवसागर के सेतु॥' [221]

दोहा :

छैल-छबीले श्याम की, शोभा बड़ी अनूप।
रुपराशि वे गुण सदन बने कोटड़ी भूप॥
धन्य-धन्य यह कोटड़ी, जहाँ बिराजै स्याम।
चारभूजा दर्सन करौ, निरखौ छबि अभिराम॥ [222]

सवैया :

यह जीवन चार दिन कौ बन्यौ,
कछु हाथ सौ दान दियौ ही करौ।
पुण्य कौ पंथ सदा सुभ है
सुचि स्नेह सौ काम लियौ ही करौ।
हँसिबो-मिलिबौ धरती पै सदा
मद दम सौ दूर जियौ ही करौ।
रसना तौ बनै है तबै सफला,
रस राम कौ नाम पियौ ही करौ॥ [223]

56. श्री बुद्धि प्रकाश पारिक

कविरत्न बुद्धिप्रकाश पारीक का जन्म 31-12-22 को जयपुर में हुआ। इन्होंने एम. ए. विशारद तक शिक्षा ग्रहण कर सेवा निवृत शिक्षक रहें और साहित्य सृजन में भी कार्यरत रहे है। इन्होंने राजस्थानी, ब्रज, उर्दू, हिन्दी भाषा में रचना रची। इन का मूल नाम 'घासी' है। इन को 'घासी' उर्फ 'तुलसीदास' उर्फ बुद्धिप्रकाश के नाम से भी जाने जाते है। इन्होंने अपने मूल नाम 'घासी' पश्चात् बुद्धिप्रकास जी ने 'फूफा कविराय', कुकवि कलेस और बुद्धि उपनाम से काव्य सृजना की। पद्य और गद्य दोनों क्षेत्रों में अपना योगदान दिया। दोहा, सोरठा, कुण्डलियाँ, सवैया, कवित्त और गजल की सृजना की। इन की एक कविता 'ई मिन्दर में सूँ कोई म्हौकी जूत्यां लेगो चोर' अत्यंत प्रसिद्ध हुई। इन के 'तिरसा', चूँटक्या, चबड़का, कलदार, इन्दर सूँ इन्टरव्यू आदि नाम ले संग्रह वृहद संख्या में छपे। इन के एक ललित लेखन संग्रह 'नाक की करामात' शीर्षक से पोथी रुप ग्रहण किया।

इन को कविरत्न, हिन्दी रत्नकार, नाट्यालंकार, साहित्य श्री, साहित्य भूषण, की उपाधि और महाकवि बिहारी, तुलसी, मिर्जा गालिब, लम्बोदर, मन्नादेवी जोशी, राजस्थान का सर्वोस्च अलंकरण से सम्मानित किया गया। इन्होंने काव्य के साथ गद्य में भी योगदान दिया है। कहानी, लेख, समीक्षा आदि की रचना की है। इन का विषय सामाजिक राष्ट्रीय परिवेष रहा है। भाषा शैली उत्तम पुरुष में व्यंग्यात्मक है।

इन की अप्रकाशित कृतियाँ है। हिन्दी कविता संग्रह, हिन्दी निबंध संग्रह, उर्दु गज़ल संग्रह , हिन्दी निबंध संग्रह, उर्दू गज़ल संग्रह। प्रकाशित कृतियां है। राजस्थानी कविता (1) चूँटक्या (2) चबड़का (3) तिरसा (4) कलदार (5) इन्दर सूं इन्टरव्यू (6) मैं (राजस्थान पद्य समग्र) (7) ललित निबन्ध संग्रह नाक की करामत

इन की रचना 'ब्रज रचना माधुरी' के अन्तर्गत दोहे - बुद्धिप्रकास, कलेस-कथन, सवैया (46) कुण्डलियाँ (59), कवित्त (18), अलंकरण- अश्वबपन्ध (शतरंज) प्रमाणिका छन्द, भजुगं बन्ध (दुर्मिलसवैया) , द्विपदी भुजंग गति बन्ध (दुमिल सवैया), त्रिपदी भुजंग गति बन्ध (दुर्मिल सवैया), चौपदी भुजंग बन्ध (दुर्मिल सवैया), पंचपदी भुजंग बन्ध, सप्तपदी भुजंग बन्ध (दुर्मिल सवैया), पंचपदी भुजंग बन्ध (सुन्दरी सवैया), खण्ड बन्द दोहा, तालबन्द (गूढ़ार्थ दोहा), गजल, असामान्य, वरदान, चाँदनी, रुप की राशि, बतैयो तो, धमार, निकस्यौ उजरौ भोर, बाल कविताएं-सूरज,

चन्दा, फूल, कमल खिले हैं। गद्य-भैस के आगै बीन बजाई, कुरसी कु -रसई, चूरमा, मन के लडुआ फीके क्यौ? आम खानौ कै पैड़ गिननौर, भासा जानबरन की, मानुसन की, आलसी जैसी रचनाओं को एकत्र कर ब्रज रचना माधुरी को प्रस्तुत किया है। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

सवैया :

'खाबत है दुहू हाथन मोदक मोद में तौद फुलाबत है।
लाबत है धरि मूसक-पीठ पै रिद्धि-रु-सिद्धि बढ़ावत है।
ढ़ाबत है गिरि फूकँन सौ औ सूंड सौ सिन्धु सुखाबत है।
खाबत है तिनको तन छेदत, 'बुद्धि' कूँ दाँत दिखावत है।' [224]

कुण्डलियाँ :

नाग सेस के सहस फन, सहसन में सिगरेट।
सुल्फा भरी सुगन्ध सौ, रही प्रदूसन मेट॥
रही प्रदूसन मेट, वायु में सुधा घोलती।
पर्यावरण सुधार, स्वर्ग के द्वार खोलती॥
कह 'फुफा' कविराय धन्य नवयुवक देस के।
रहे जहर फुकांर बने फन नाग सेस के॥ [225]

* * *

फुल फूलि कै फूलि रहे है।
तन-मन की सुधि भूलि रहे है।
मस्त बयारन के झौकन सौ,
हर्ष-हिडौरे झूल रहे है। [226]

57. श्रीमती माधुरी शास्त्री

श्रीमती माधुरी शास्त्रीजी का जन्म 22 जुलाई 1938 को कानपुर (उत्तरप्रदेश)में हुआ। इन का बचपन साहित्यक वातावरण में गुजरा, और शादी के बाद ससुरला जयपुर के यशवस्वी भट्ट परिवार ससुर 'मथुरानाथजी भट्ट' 'मंजुनाथ' के यहाँ ब्रजभाषा का वातावरण मिला। इन्होंने ब्रजभाषा में गद्य-पद्य दोनों क्षेत्रों में अपना योगदान दिया। माधुरी शास्त्री ने लगभग 300 दोहों ब्रजभाषा में रचे हैं। जिनके विषय, भाव, विचार,

व अभिव्यक्ति की विविधता पाई जाती है। इन्होंने अपने काव्य के विषय नारी की महत्ता, देश की हालत पर व्यंग्य, महँगाई, भाषा के आधार पर झंगड़े, अक्षर की महिमा, वृक्ष को मित्र, प्रीत की सार्थकता, राजनीति में कुर्सी का मोह, जनसंख्या की समस्या जीवन के मार्मिक प्रसंग, प्रेम, करुणा, दया और ममता के भावात्मक पद, पति-पत्नि के कोमल सवेंदनात्मक पवित्र और उज्ञवल रिश्ता, पानी और पैसों का महत्व, क्षणभंगुरता, नश्वरता और आत्मा की अमरता, देशकी दुर्दशा गरीबी से त्रस्त जन, जैसे आधुनिक विषयों के साथ-साथ परम्परागत विषय जैसे राधा-कृष्ण, प्रेम-सौन्दर्य, होरी-बंसत, प्रीति, तुलसी, सूर, पद्माकर राधिका के मधुर रुप सौन्दर्य, राधा कृष्ण प्रेम सौन्दर्य जैसे विषयों पर ब्रजभाषा में बहुत ही मनोहर लिखा है।

इन की अप्रकाशित पुस्तकें हैं। नदी के मोड़, आकाशवाणी वार्ताए, प्रहेलिका सतसई, सुनो सजंय।

प्रकाशित पुस्तकें हैं - देहरी की दरारे, अतिरुपा, दिन बुनता सूरज, वसुंधरा, महलों में तुम्हारे लिए, किलकारी, स्वर्ण कमल, बौ रायौ मन। 'बौरायो मन' के अन्तर्गत कहानी है- वे रुठ गई, विष्णु-लक्ष्मी, गोरी की चिरौरी, सौत, ससुराल, प्रसव पीड़ा, कवि की, दीवार ई दीवार, बसंत कौ कहा काम, रहिमन आप ठगाइए, नगी तरवार, एक प्लेट छिपकली आदि।

इन की रचना ब्रज रचना माधुरी के अन्तर्गत वे रुठ गई, हे चन्द्रमुखी, बसन्त कौ कहा काम (लघु कथा), सखि कैसे रँगू बिनकी दाढ़ी, एक प्लेट छिपकली,

पद्य रचना-श्वान चालीसा, जनसंख्या, विकास व्यंग्य, महँगाई, आखर, बेटी, कटै न बैरिन रात, कैसैं बीतै रात, पाथर हवै गई रात,रोटी, बरसाती रात, हिन्दी दिवस, विविध दोहा, सूखे कै छुआरे से (कवित्त), मारे मँहगाई के ऐसे रखवारे हैं माँ सारदा अरु बसंत, नैनन के तारे है, ऐसे रखवारे हैं बात अनमोल है, देह नेह गेह सब ताहि पर वारियै, तुलसी सूरदास, मंदोदरी, क्षोभ, कहां अबीरी चीर है? , पानी, कहाबतन के कवित्त, साँपनाथ-नागनाथ, कहौ कौन सुझाय, गूँजी ब्रजबानी है, भगवान, कवि पद्माकर, अर्थ लागी शब्द के पाक तेरे नापाक इरादे, मन मोह लियौ है, है मेरौ अनुरोध, कविता कौ चांव, तेरौ बड़भाग है, वेणु बजावत स्याम, होरी रंग गई स्यामा स्याम, जीवे में ना सार, डारूं तोर मरोर, कहां हो लाला बसंत, औरत नदी नाँय, रटन लगी रहै, पढ़न जाऊँगी भोर, मुस्कान चोर लीन, भगवती संगीत, विध्न

हरन, पर्यावरण, पिंगल प्रेम, पहकन लग्यौ बसतं, प्रीत, अब लौ अटके प्रान जैसी रचनाओं को एकत्र कर ब्रजरचना माधुरी के माधुर्य को प्रस्तुत किया है। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

श्वान चालीसा

जय सेरु तुम वीर बहादुर।
मंजु-निकुंज के भैरु नाहर।। [227]

*** * ***

जनसंख्या या देस की, पल-पल बढ़ती जाय।
माखी माछर प्यौ बढ़े, अब कछु करौ उपाय।। [228]

*** * ***

कहौ हौ लाल बसंत, कितकूँ हौ?
दरसन तौ भये नांय तिहाँरे
सब कहै कितु आ गयौ है
यासौ स्वागत है तिहाँरौ। [229]

*** * ***

ना भासा ना भाव है
नाँय सबद भंडार।
तऊ मातेस्वरी के गरे,
धरौ सबद मय हार।। [230]

इस प्रकार राजस्थान के ब्रजभाषा कविरत्नों का परिचय देते हुए यह कहा जा सकता है कि ब्रजबोली सिर्फ ब्रज तक सीमित नही रही राजस्थान में ब्रजभाषा में लिखने वाले अनगिनत कविगणों ने बहुत ही सुन्दर लिखा जो परम्परा और आधुनिकता दोनों की प्रस्तुत करते हुए राजस्थान में ब्रजभाषा के काव्य सौष्ठ को दर्शाता है।

*

सन्दर्भ सूची

1. राजस्थान के अख्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग -1, सम्पादक : डॉ विष्णुचन्द्र पाठक पृ. सं. 3
2. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 8
3. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 8
4. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 8
5. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 8
6. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं 8
7. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 10
8. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 8
9. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 11
10. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं 9
11. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 9
12. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 9
13. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 9
14. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 10
15. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 11
16. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 10
17. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 10
18. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 11
19. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं 13
20. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 15
21. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 16
22. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 17
23 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 17
24. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 27
25 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 28
26. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 36
27. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 41
28. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 46
29. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 60
30. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 62
31. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 76
32. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 89
33. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 95
34 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 103
35. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 92
36. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं 110
37. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 145
38. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 151
39. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 127
40. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 127
41. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 167

42. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 171
43. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 183
44. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 203
45. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 220
46. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 227
47. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 241
48. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 267
49. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-2 सम्पादक :डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक पृ. सं. 3
50. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 4
51. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 5
52. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 29
53. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 64
54. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 102
55. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 104
56. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 105
57 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 148
58. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 155
59. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 172
60. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 177
61 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 209
62. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ स. 232
63. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 169
64. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-3 सम्पादक : डॉ, विष्णुचंद पाठक पृ. सं. 1
65. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 2
66. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 4
67. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 6
68. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 35
69. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 74
70. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 74
71. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 75
72. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 97
73. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 124
74. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 78
75. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 143
76. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 139
77. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 140
78. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 156
79. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 173
80. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 184
81. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 185
82. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 192
83. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 207
84. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 220
85 पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-5, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं. 23

86. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 24
87. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 67
88. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 68
89. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 98
90. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं 102
91 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 122
92. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 126
93. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 141
94. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 201
95. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 224
96. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 247
97. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं. 2
98. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 37
99. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 47
100. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 54
101. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 77
102. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 84
103. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 89
104. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 123
105 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 194
106. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 186
107. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 195
108. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 207
109. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 207
110. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 222
111. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 222
112. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 263
113. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-7, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं. 17
114. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 21
115. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 39
116. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 63
117. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 93
118. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 80
119 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 108
120. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 162
121 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं 175
122. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 185
123. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 190
124. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 241
125. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 228
126. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 224
127. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-8, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं. 85
128. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 102
129 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 136

130. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 145
131. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 186
132. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 192
133. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 243
134. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 312
135. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 280
136. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-9, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं. 5
137 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 128
138. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 42
139. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 40
140. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 40
141. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 119
142. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 147
143. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 156
144. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 245
145. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 250
146. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं. 27
147. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 59
148. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 62
149. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 86
150. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 127
151 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 93
152. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 226
153. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 206
154. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 218
155. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 270
156. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 245
157. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 146
158 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 142
159. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 197
160. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 200
161. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 171
162. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं 159
163. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-11, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं. 54
164. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 61
165. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 136
166. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 146
167. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 147
168. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 150
169. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 153
170. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 196
171. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 204
172. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 219
173. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 219

174. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-12, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं. 35
175. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 44
176. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं 54
177. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 71
178. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 73
179. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 78
180. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 84
181. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 193
182. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्‌गल, पृ. सं. 11
183. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं 6
184. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 23
185. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 40
186. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 57
187. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 76
188. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं 77
189. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 84
190. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ स. 86
191. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 137
192. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 137
193. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 152
194. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 178
195. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 194
196. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 223
197 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 276
198. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 249
199. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 259
200. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 187
201. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 310
202. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-14, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्‌गल, पृ. सं. 35
203. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 40
204. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 41
205. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 102
206 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 121
207. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 124
208. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 125
209. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 134
210. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ स. 138
211. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 138
212. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 143
213. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 145
214. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं 178
215. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 191
216. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 199
217. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 213

218. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. सं. 13
219. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 25
220. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 33
221. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं 133
222 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 149
223. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ स. 151
224. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 183
225. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 193
226. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 231
227. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ सं. 296
288. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 299
229. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. सं. 326
230. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 331